फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 191 प्रभात जयपुर, गुरूवार 12 फरवरी, 2026 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

So This Is What A European Face... Perhaps, William Lambton got away with it because the then Thanjavur king, Serfoji II, was a British ally and a progressive sponsor of scientific knowledge

Dad, Berserk, Pajama...

Lessons from Wolves What the Wild Can Teach the Human Soul

भाजपा राहुल गांधी को घेरने की फिराक में है

पर, पार्टी में मतभेद हैं कि राहुल को पुनः संसद से ''डिस्क्वालिफाई'' करा दिया जाता है तो वे ''हीरो'' के रूप में उभर सकते हैं तथा जनता में उनके प्रति सहानुभूति उभरेगी

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 फरवरी। भाजपा ने राहुल गांधी को घेरने के लिए कमर कस ली है, और उनके खिलाफ विशेषाधिकार प्रस्ताव लाने की पूरी तैयारी में है, क्योंकि राहुल गांधी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनके मंत्रियों के खिलाफ लगातार बयानबाजी कर रहे है और उसे लेकर भाजपा कार्रवाई करना चाहती है।

यह अवसर आज तब आया, जब बजट पर बोलते हुए राहुल गांधी ने मंत्री हरदीप पुरी और उद्योगपति अनिल अंबानी का नाम एप्स्टीन फाइल्स में शामिल होने के संबंध में लिया।

इसके साथ ही राहुल गांधी ने यह भी कहा कि मोदी पर दबाव था, क्योंकि अडानी के खिलाफ अमेरिका की अदालतों में एक मामला चल रहा था, और चूंकि अडानी मोदी के वित्तीय सहयोगी और आर्किटेक्ट हैं, इसलिए प्रधानमंत्री पर दबाव था और उन्होंने भारत-अमेरिका ट्रेड डील के मामले में

- **पर, दूसरी सोच यह है कि राहुल गांधी को सबक सिखाना जरूरी है तथा अगर भाजपा से नज़दीकी रखने वाले चुनाव आयुक्त हों तो डिस्क्वालिफिकेशन से रिक्त हुई सीट पर उपचुनाव छः महीने नहीं होने दे।**
- **पर, बहरहाल अभी तो इस बात पर भाजपा में आम सहमति बनी है कि राहुल गांधी के खिलाफ सदन में ''प्रिवलेज'' प्रस्ताव तो लाया ही जाए, जिस तरह बजट पर बोलते हुए उन्होंने मंत्री हरदीप पुरी व बिज़नैसमैन अनिल अंबानी पर लांछन लगाया कि उनके नाम ''एप्स्टीन फाइल्स'' में आये हैं।**
- **भाजपा, इस बात से भी काफी उत्तेजित है कि जिस तरह राहुल गांधी ने प्र.मंत्री पर कई आरोप लगाए, अमेरिका के सामने आत्म समर्पण किया। पर, दुविधा यह है कि भाजपा निश्चित नहीं कर पा रही है कि राहुल गांधी से किस तरह डील किया जाए।**

ट्रम्प के सामने समर्पण कर दिया।

सूत्रों का कहना है कि एक विशेषाधिकार प्रस्ताव लाने के लिए कम से कम 50 हस्ताक्षरों की आवश्यकता होती है।

सूत्रों ने बताया कि मोदी सरकार और भाजपा में इस पर मतभेद है कि क्या राहुल गांधी को सदन की सदस्यता के अयोग्य ठहराने की दिशा में आगे बढ़ा जाए।

एक गुट का मानना है कि यह कदम अक्लमंदी नहीं होगा, क्योंकि इससे राहुल गांधी एक ''हीरो'' बन जाएंगे तथा और अधिक लोग उनके प्रति सहानुभूति दिखाएंगे।

दूसरा गुट, जो सख्त रुख अपनाए हुए है, उसका कहना है कि राहुल गांधी को सबक सिखाना चाहिए।

यदि उन्हें अयोग्य घोषित किया जाता है, तो सरकार का आज्ञाकारी चुनाव आयुक्त यह सुनिश्चित करेगा कि चुनाव 6 महीने से पहले नहीं कराए जाएं।

लेकिन वे राहुल गांधी को अपमानित करने के लिए उनके खिलाफ विशेषाधिकार प्रस्ताव लाना चाहते हैं।

राहुल गांधी के मोदी और उनकी सरकार के खिलाफ तीखे शब्दों ने सरकार को आहत किया है, लेकिन सरकार को यह समझ में नहीं आ रहा कि राहुल गांधी के साथ क्या किया जाए,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सोनम वांगचुक को स्वास्थ्य के आधार पर रिहा नहीं किया जा सकता'

नई दिल्ली, 11 फरवरी। केन्द्र सरकार ने आज सुप्रीम कोर्ट को बताया कि लद्दाख के सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को स्वास्थ्य आधार पर डिटेंशन से रिहा नहीं किया जा सकता। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस पी.बी. वराले की खंडपीठ को बताया कि अदालत के अनुरोध पर स्वास्थ्य आधार पर डिटेंशन की समीक्षा के लिए गंभीरता से विचार किया गया, लेकिन इसे स्वीकार नहीं किया जा सका। मेहता ने कहा कि जेल मैनुअल के अनुसार, वांगचुक की 28 बार चिकित्सकीय जांच की गई है और वे स्वस्थ, ठीक-

- **केन्द्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया।**

ठाक और सामान्य हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें कुछ पाचन संबंधी समस्या हुई थी, जिसका इलाज चल रहा है और कोई चिंताजनक स्थिति नहीं है। पिछली सुनवाई में जस्टिस वराले ने मौखिक रूप से वांगचुक की स्वास्थ्य स्थिति पर चिंता जताई थी और डिटेंशन पर पुनर्विचार का सुझाव दिया था, जिस पर न्यायमूर्ति कुमार ने भी सहमति व्यक्त की थी। पीठ ने यह भी टिप्पणी की थी कि यह ऐसा मामला नहीं है जिसमें केंद्र सरकार वांगचुक की स्वास्थ्य स्थिति को पूरी तरह नकार रही हो।

'राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के सभी 6 अंतरे बजाना अनिवार्य होगा'

केन्द्र सरकार ने स्कूलों व सरकारी कार्यक्रमों के लिए दिशा-निर्देश जारी किया

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 फरवरी। एक राजनीतिक विवाद को फिर से जन्म देने की संभावना की कार्यवाही के अंतर्गत, केन्द्रीय सरकार ने बुधवार को नए दिशा-निर्देश जारी किए, जो सरकारी आयोजनों और स्कूलों में राष्ट्रीय गीत ''वन्दे मातरम्'' के सभी छह अन्तरों को गाने की अनिवार्यता तय करते हैं। नए दिशा-निर्देशों में यह भी निर्देश है कि गीत नागरिक पुरस्कार समारोहों में और राष्ट्रपति के आगमन और प्रस्थान के दौरान बजाया जाए। सिनेमा हॉल्स को भी यह गीत बजाना आवश्यक होगा, हालांकि गीत के दौरान वहां बैठे लोगों को खड़ा होना अनिवार्य नहीं होगा।

कांग्रेस, जिसने ''वन्दे मातरम्'' को राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया था, जाहिर तौर पर सभी छह अन्तरों को अपनाने के विचार से असहज रही है, क्योंकि बाद के अन्तरों में देवी दुर्गा की वंदना की गई है। अक्टूबर 1937 में, कांग्रेस कार्य समिति ने एक प्रस्ताव पारित किया था, जिसमें केवल पहले दो

- **केन्द्र सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार, राष्ट्रगीत वंदे मातरम् , राष्ट्रगान जन गण मन से पहले बजाया जाएगा। सिनेमा घरों में भी गीत बजाया जाएगा, पर, इसके लिए खड़े होना अनिवार्य नहीं है।**
- **ज्ञातव्य है कि कांग्रेस ने अक्टूबर 1937 में वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत के रूप में अपनाया था, तब इसके तीन अंतरे ही मंजूर किए थे। बाद के तीन अंतरे छोड़ दिए गए थे, जिनमें हिंदू देवी मां दुर्गा की वंदना की गई थी।**
- **यह गीत 7 नवम्बर 1875 में लिखा गया था, गत वर्ष नवम्बर में इसकी 150वीं जयन्ती पर संसद का विशेष सत्र बुलाकर भाजपा ने कांग्रेस पर सांप्रदायिक आधार पर गीत को विभाजित करने का आरोप लगाया था।**

अन्तरों को अपनाया गया था, ताकि कथित तौर पर, गीत की धर्मनिरपेक्ष अपील बनी रहे।

देश के सांस्कृतिक पुनर्जागरण को बढ़ावा देने और देश की धरोहर पर पुनः दावा करने के अपने प्रयासों के तहत, एनडीए सरकार गीत को वह महत्व देने की कोशिश कर रही है, जिसके योग्य यह गीत है। पिछले साल नवंबर से, सरकार राष्ट्रीय गीत, जिसे 7 नवम्बर, 1875 को रचा गया था, के 150 वर्ष की वर्षगांठ का एक वर्ष लंबा उत्सव मना रही है। प्रधानमंत्री ने एक विशेष स्मारिका डाक टिकट और सिक्का जारी करके इस कार्यक्रम की शुरुआत की थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'डॉक्टर्स को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम से बाहर रखा जाए'

एक जनहित याचिका में की गई इस मांग पर सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार से जवाब मांगा

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 फरवरी। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय और उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय को, एक जनहित याचिका पर नोटिस जारी किया तथा जवाब मांगा यह याचिका हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स (इंडिया) एसोसिएशन की ओर से दायर की गई है, जिसमें 2019 के उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के तहत चिकित्सा पेशेवरों को बाहर करने की मांग की गई है।

इस जनहित याचिका में कहा गया है कि उपभोक्ता संरक्षण कानून, जो मरीजों को उपभोक्ता अदालतों में दावा करने की शक्ति देता है, चिकित्सा लापरवाही के लिए हर्जाना मांगने का अधिकार प्रदान करता है, और इसमें चिकित्सा पेशेवरों को शामिल करना

- **सुप्रीम कोर्ट ने एसोसिएशन ऑफ हैल्थकेयर प्रोवाइडर्स द्वारा दायर जनहित याचिका पर केन्द्रीय स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय, केन्द्रीय उपभोक्ता मामलात मंत्रालय को नोटिस जारी कर जवाब मांगा।**
- **उपभोक्ता/संरक्षण कानून में चिकित्सा सेवा को भी शामिल किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने 1995 के एक फैसले में कहा था कि अगर डॉक्टर निःशुल्क सेवा नहीं दे रहे हों तो उनके द्वारा दिया गया इलाज उपभोक्ता सेवा के दायरे में ही आता है।**

''डॉक्टर-पेशेंट रिश्ते के विश्वास को कमज़ोर करता है और चिकित्सा प्रैक्टिस की नैतिक नींव को नष्ट करता है।''

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ ने हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स (इंडिया) एसोसिएशन (एएचपी) और इसके पूर्व अध्यक्ष, बेंगलुरु के एक डॉक्टर द्वारा दायर जनहित याचिका पर नोटिस जारी किया, जिसमें कहा गया कि चिकित्सा सेवाओं पर उपभोक्ता कानून लागू करने से चिकित्सा प्रैक्टिस में रक्षात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है। इसमें कहा गया है कि चिकित्सा लापरवाही की जांच करने के लिए अन्य, अधिक उपयुक्त तंत्र हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'तीन साल से एक जगह तैनात अफसरों का तबादला होगा'

कोलकाता, 11 फरवरी। पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले निर्वाचन आयोग ने तीन वर्ष से अधिक समय से एक ही पद या जिले में तैनात प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों के तबादले का निर्देश दिया

- **चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल के आगामी विधानसभा चुनावों से पहले किया बड़ा फैसला।**

है। बुधवार को आयोग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी।

निर्देश के अनुसार, यह आदेश जिलाधिकारी, अतिरिक्त जिलाधिकारी, प्रखंड विकास अधिकारी, उप-मंडलाधिकारी और अन्य जिला स्तरीय प्रशासनिक अधिकारियों पर लागू होगा। इसके साथ ही, पुलिस महानिरीक्षक (आईजी), उप-महानिरीक्षक (डीआईजी), पुलिस अधीक्षक (एसपी) और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक को भी स्थानांतरित किया जाएगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बांग्लादेश में जमात ए इस्लामी का रुख भारत के प्रति नरम हुआ

जमात के नेता कह रहे हैं कि भारत के साथ अच्छे संबंध बांग्लादेश के लिए बेहद जरुरी हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 फरवरी। बांग्लादेश में गुरुवार को होने वाले अहम चुनाव से एक दिन पहले, जिसमें नई सरकार चुनी जाएगी और लोकतांत्रिक सरकार का गठन होगा, जमात का एक प्रमुख उम्मीदवार चर्चा में है। ढाका-14 सीट से जमात-ए-इस्लामी के उम्मीदवार बैरिस्टर मीर अहमद बिन कासेम अरमान एक हाई-प्रोफाइल चुनाव लड़ रहे हैं।

अगस्त 2024 से बांग्लादेश में मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार चल रही है, क्योंकि जुलाई 2024 में हिंसक प्रदर्शनों के बाद शेख हसीना के नेतृत्व वाली पिछली सरकार को हटा दिया गया था।

तब से ध्यान इस बात पर है कि चुनाव के बाद बांग्लादेश पर कौन शासन करेगा। इस दौड़ में दो मुख्य दावेदार हैं, पहली है, बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी), और दूसरी है, बांग्लादेश जमात-ए-इस्लामी, जो एक कट्टर इस्लामी पार्टी है और समाज के सभी

- **जमात के एक कद्दावर नेता, मीर अहमद बिन कासेम अरमान, जो ढाका-14 से चुनाव लड़ रहे हैं, का मुकाबला बांग्लादेश नैशनलिस्ट पार्टी की ताकतवर नेता संजीदा इस्लाम से है। अरमान ने चुनाव प्रचार के दौरान कहा कि भारत और बांग्लादेश एक दूसरे के लिए जरुरी हैं। हमें साथ मिलकर काम करना होगा।**
- **बांग्लादेश में 12 फरवरी को चुनाव होने हैं और उसके बाद वहाँ निर्वाचित सरकार सत्ता में आएगी। फिलहाल मरहूम खालिदा ज़िया की बांग्लादेश नैशनलिस्ट पार्टी आगे चल रही है, जिसे उदारवादी छवि के कारण सभी वर्गों का समर्थन मिल रहा है।**
- **लेकिन, जमात का बदलता रुख संकेत दे रहा है कि अपने भारत विरोधी और पाक समर्थक ट्रैक रिकॉर्ड के बाद भी जमात भारत के साथ सहयोग की संभावनाएं तलाश रही है।**

वर्गों के मतदाताओं को आकर्षित करने की कोशिश कर रही है।

ढाका-14 सीट से जमात-ए-इस्लामी के उम्मीदवार अरमान एक हाईप्रोफाइल चुनाव लड़ रहे हैं। वे बांग्लादेश में जबरन गायब किए जाने की घटनाओं के पीड़ित रह चुके हैं। वे बीएनपी की उम्मीदवार संजीदा इस्लाम उर्फ तुली के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं, जो 'मदर्स कॉल' नाम के संगठन की समन्वयक हैं। यह संगठन जबरन गायब किए गए लोगों के परिवारों द्वारा बनाया गया है। अरमान ने कहा, ''हम फिर से तानाशाही नहीं चाहते। मैं जबरन गायब किए जाने का शिकार रहा हूं। मुझे उम्मीद है कि जनमत संग्रह में 'हां' की जीत होगी।''

अरमान जमात के बड़े नेताओं में से एक हैं और भारत के साथ मिलकर काम करने की वकालत कर रहे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रितु तावड़े बनीं मुम्बई की मेयर

मुंबई, 11 फरवरी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पार्षद रितु तावड़े बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) की निर्विरोध महापौर चुनी गई हैं। वहीं, शिवसेना (शिंदे गुट) के पार्षद संजय घाड़ी उपमहापौर बने हैं। इसकी घोषणा बुधवार को बीएमसी मुख्यालय में निगम आयुक्त भूषण गगरानी ने की।

आयुक्त गगरानी ने कहा कि महापौर पद के लिए केवल भाजपा पार्षद

- **शिवसेना (शिंदे गुट) के संजय घाड़ी बने डिप्टी मेयर।**

रितु तावड़े का ही नामांकन प्राप्त हुआ था, इसलिए उन्हें बीएमसी का महापौर घोषित किया जाता है। इसी तरह, उपमहापौर पद के लिए केवल संजय घाड़ी का ही नामांकन प्राप्त हुआ, इसलिए उन्हें उपमहापौर घोषित किया जाता है।

इस दौरान, मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री फडणवीस ने रितु तावड़े और संजय घाड़ी को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'आपने भारत माता को बेच दिया, आपको शर्म नहीं आ रही'

राहुल गांधी ने सदन में प्र.मंत्री मोदी पर लांछन लगाया कि देश का मार्केट अमेरिका के कृषि उत्पादनों व डेयरी प्रॉडक्ट के लिए खोलकर करोड़ों भारतीय किसानों के जीविकोपार्जन को खतरे में डाल दिया है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 फरवरी। विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को अमेरिका के साथ हुए व्यापार और टैरिफ समझौते को लेकर सरकार की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने देश के कृषि और डेयरी मार्केट को अमेरिकी कृषि उत्पादों के लिए खोलकर ''भारत माता को बेच दिया'' है।

गांधी ने गजरते हुए कहा कि सरकार को ''शर्म आनी चाहिए''। उन्होंने विपक्षी नेताओं की इस आलोचना को दोहराया कि भारत-अमेरिका व्यापार समझौते ने अमेरिकी सामान को भारत में आने की अनुमति देकर करोड़ों किसानों, खासकर छोटे और सीमांत किसानों, तथा उनसे जुड़े उद्योगों की रोजी-रोटी को खतरे में डाल दिया है।

उनकी आलोचना का मुख्य आधार यह दावा था कि अमेरिका के टैरिफ, 2025 से पहले के औसत तीन प्रतिशत, जो बेसलाइन एमएफएन (मोस्ट फेवर्ड नेशन) दरों का हिस्सा थे, से बढ़कर इस महीने हुए समझौते के बाद 18 प्रतिशत हो गए हैं।

बीच में, डॉनल्ड ट्रंप ने अनुचित टैरिफ की शिकायत की और ''रैसिप्रोकल'' शुल्क लागू करने की घोषणा की, तब ये दरें 50 प्रतिशत तक पहुंच गई थीं। इसके बाद भारत द्वारा रूसी तेल खरीदने पर 25 प्रतिशत की ''पैनल्टी'' भी लगाई गई थी।

- **राहुल गांधी ने कहा, ट्रेड डील से अमेरिका का टैरिफ तीन प्रतिशत से बढ़ाकर अब 18 प्रतिशत करना स्वीकार कर लिया गया है।**
- **ट्रेड डील में राहुल गांधी के अनुसार, हम पर लागू टैरिफ तीन प्रतिशत से बढ़कर 18 प्रतिशत हो गया है, पर, अमेरिका पर भारत द्वारा लगाया गया टैरिफ अब 16 प्रतिशत से घट कर ज़ीरो प्रतिशत हो गया है।**
- **साथ ही, राहुल गांधी ने यह भी कहा कि हमारे ऊपर कई प्रतिबद्धताएं लागू हो गई हैं, नई ट्रेड डील से, पर, अमेरिका पर कोई शर्त या प्रतिबद्धता लागू नहीं हुई है।**
- **राहुल के अनुसार, भारत नई ट्रेड डील में 500 अरब डॉलर की एनर्जी व अन्य टैक्नॉलजी प्रोडक्ट्स अमेरिका से खरीदेगा, पर, भारत का अमेरिका को निर्यात जो अभी 46 अरब डॉलर है, से बढ़कर 176 अरब डॉलर ही हो पाएगा।**

गांधी ने कहा, ''आपने भारत को बेच दिया... क्या भारत को बेचने में आपको शर्म नहीं आती?'' उन्होंने कहा, ''इतिहास में पहली बार हमारे किसान बड़े संकट का सामना कर रहे हैं और आपने हमारे गरीब किसानों को कुचलने के लिए दरवाजा खोल दिया है।''

उन्होंने कहा, ''किसी भी प्रधानमंत्री ने पहले ऐसा नहीं किया।'' उन्होंने जोर देकर आगे कहा कि इस समझौते में ''कोई तर्क नहीं'' है।

उन्होंने कहा, ''आपने यह क्या किया... शुरुआत में तीन प्रतिशत औसत था। अब यह 18 प्रतिशत हो गया है, यानी छह गुना बढ़ोतरी। अमेरिका से आयात 46 अरब डॉलर से बढ़कर 146 अरब डॉलर हो जाएगा... यह पूरी तरह बेतुका है।''

गांधी ने कहा, ''उनकी हमारे प्रति कोई प्रतिबद्धता नहीं है... लेकिन हमारी उनके प्रति प्रतिबद्धता है।'' गांधी उस प्रावधान का जिक्र कर रहे थे, जिसमें

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पैनग्विन रैंडम हाउस को नोटिस

नई दिल्ली, 11 फरवरी। दिल्ली पुलिस के स्पेशल सेल (विशेष प्रकोष्ठ) ने पैनग्विन रैंडम हाउस इंडिया को नोटिस जारी कर पूर्व सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे की अप्रकाशित पुस्तक को सोशल मीडिया पर उपलब्ध कराने के संबंध में स्पष्टीकरण मांगा है। दूसरी तरफ, दिल्ली पुलिस ने पूर्व सेना

- **दिल्ली पुलिस ने नरवणे की अप्रकाशित पुस्तक को सोशल मीडिया पर उपलब्ध कराने के मामले में इस पब्लिशिंग हाउस से जवाब तलब किया है।**

प्रमुख की पुस्तक को लेकर दर्ज मामले में और सीक्रेट एक्ट व कॉपी राइट की धाराएं भी जोड़ी हैं।

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह नोटिस ऐसे समय में जारी किया गया,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

अवसर तुम्हारा दरवाज़ा एक ही बार खटखटाता है। –कहावत

भजनलाल सरकार का तीसरा बजट: हर राजस्थानी के सपनों को पूरा करने वाला बजट है

वित्त मंत्री दीया कुमारी ने बुधवार को राज्य विधान सभा में वर्ष 26–27 का सालाना बजट प्रस्तुत करते हुए आशा व्यक्त की है कि यह बजट हर राजस्थानी के सपनों को पूरा करेगा। यह एक बहुत ही संतुलित, सर्वसमावेशी और विकास को बढ़ावा देने वाला बजट है। इस बार बजट का कुल आकार 21 लाख 52 हजार 100 करोड़ रुपये रखा गया है। यह पिछले साल के मुकाबले 41.39 प्रतिशत अधिक है, जो राजस्थान के इतिहास का अब तक का सबसे बड़ा बजट है। यह बजट पिछले साल की तुलना में करीब 10 फीसदी ज्यादा है। इस बजट में राज्य सरकार ने किसानों, महिला सशक्तिकरण, युवाओं और रोजगार को फोकस में रखा है। बजट प्रदेश की जनता के प्रति सरकार के प्रत्येक दायित्व को पूरा करने का संकल्प दर्शाता है। इसमें हर क्षेत्र, हर वर्ग और हर नागरिक को सशक्त बनाने का स्पष्ट दृष्टिकोण है।

ये विकसित भारत 2047 के संकल्प को गति देता देगा। विकसित राजस्थान को साकार करने के लिए इस विकास यात्रा में गरीब, युवा, अन्नदाता व नारी शक्ति की अहम भूमिका को सरकार ने सेवा, समर्पण एवं सुशासन को प्राथमिकता दी है। इस बजट में गरीबों और किसानों का कल्याण, वंचितों का सम्मान और महिलाओं और हर वर वर्ग का उत्थान शामिल है। यह बजट प्रधान मंत्री के सबका साथ, सबका विकास के मूल मंत्र को सार्थक करेगा। यह विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने की दिशा में एक शानदार बजट है। बजट में समाज के सभी वर्गों को कमोवेश राहत प्रदान की गई है।

वित्त मंत्री ने आम आदमी के कल्याण की विभिन्न घोषणाओं का पिटारा खोलते हुए अपनी सरकार का मंतव्य भी स्पष्ट कर दिया। यह बजट युवाओं, गरीबों, किसानों, महिलाओं और सभी क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने वाला है। बजट में समाज के सभी वर्गों को खुश करने का प्रयास किया है। यह विकसित राजस्थान के सपने को साकार करने वाला एक बेहतरीन बजट है। सरकार का दावा है कि यह बजट सभी वर्गों का सम्मान करते हुए लोगों का जीवन आसान बनाने पर केंद्रित है।

बजट पर अपनी प्रतिक्रिया में सत्तारूढ़ दल के विधायकों ने जहां तारीफों के पुल बांधे वहीं विपक्षी सदस्यों ने कहा कि इसमें कुछ भी नया नहीं है।

बजट में आम तौर पर फोकस इस बात पर रहता है कि सरकार का खजाना कैसे भरे, लेकिन ये बजट उससे बिल्कुल उल्टा है। यह बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास में भागीदार कैसे बने, इसकी बहुत मजबूत नींव रखता है। वित्त मंत्री ने अपने तीन घंटे के भाषण में हर सेक्टर को छूने का प्रयास किया है। बजट में सभी वर्गों के लिए कुछ न कुछ प्रावधान किए गए हैं। इसमें शहरी क्षेत्र में सड़कों के लिए 1800 करोड़ रुपए बजट प्रस्ताव, ब्लैक स्पॉट्स सुधार के लिए 100 करोड़ रुपए किए जाएंगे खर्च होंगे, 42 हजार किलोमीटर लंबी सड़कों का विस्तार किया जायेगा। बजट में 8वें वेतन आयोग के गठन के लिए हाईपावर कमेटी बनाने की घोषणा की गई है। प्रतियोगी परीक्षाओं की पारदर्शिता और सुव्यवस्थित संचालन के लिए नई टेस्टिंग एजेंसी स्थापित की जाएगी। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्कूली बच्चों को खेल किट और 'जादुई पिटारा' उपलब्ध कराया जाएगा। यह कदम शिक्षा और खेल दोनों क्षेत्रों को मजबूती देने की दिशा में माना जा रहा है। शेखावाटी तक हथनी कुंड से यमुना का पानी लाने की 32 हजार करोड़ रुपये की परियोजना जल्द शुरू होगी। बीसलपुर की दायीं मुख्य नहर के 5000 हेक्टेयर क्षेत्र में 100 करोड़ रुपये से फव्वारा सिंचाई प्रणाली लागू की जाएगी। अगले वर्ष 50 हजार सोलर पंप लगाने पर 1500 करोड़ रुपये खर्च होंगे और कृषि यंत्रों पर 160 करोड़ रुपये का अनुदान दिया जाएगा। इसके अलावा 8000 डिग्गियों का निर्माण और 36 हजार फार्म पोंड के लिए अनुदान दिया जाएगा, जिससे 80 हजार से अधिक किसानों को लाभ मिलने की उम्मीद है। साथ ही मिसिंग लिंक सड़कों के लिए 600 करोड़ रुपए खर्च होंगे। राजमार्गों पर विकसित की जाएगी वे साइड एमेनिटीज। लॉजिस्टिक पार्क के लिए 400 करोड़ का बजट,, के लिए 920 करोड़ का प्रावधान। 600 ट्यूबवेल और 120 नए हैंड पंप लगाए जाएंगें। राजधानी जयपुर में 10 करोड़ की लागत से सेंटर फॉर एक्सीलेंस, मोबाइल वॉटर टेस्टिंग लैब होगी शुरू होंगी। 1050 तकनीकी कर्मचारियों के संविदा काडर में वृद्धि करते हुए 3000 पदों पर भर्ती की जाएगी। नॉनपैचेबल सड़कों के लिए 1400 करोड़ दिए जायेंगे। 220 केवी के 6, 132 केवी के 13 और 33 केवी के 110 नए जीएसएस की घोषणा की गई है। वर्षा जल निकासी और बाढ़ सुरक्षा के लिए जयपुर में 500 करोड़ रुपए और सड़क सुधार सुधार पर 2700 करोड़ खर्च होंगे। अजमेर में 200 करोड रुपए के ड्रेनेज सिस्टम कार्य होंगे। 2000 पदों पर अतिरिक्त संविदा भर्ती का ऐलान। प्रदेश में बिना डॉक्युमेंट वाले मरीजों को भी फ्री इलाज़ मिलेगा। अरावली पर्वतमाला के संरक्षण के लिए बड़ा ऐलान करते हुए कहा कि करीब 130 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। साथ ही अवैध खनन पर रोक लगाने के लिए कई काम किए जाएंगे। 16 लाख से ज्यादा महिलाओं को लखपति दीदी की श्रेणी में लाया गया है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को आर्थिक संबल प्रदान करने और रोजगार के पर्याप्त अवसर देने के लिए जिला स्तर पर ग्रामीण महिला बीपीओ स्थापित किए जाएंगे। इसके लिए 100 करोड़ रुपये का व्यय किया जाना प्रस्तावित है। महिला उद्यमिता को और अधिक प्रोत्साहन देने के लिए मुख्यमंत्री लखपति दीदी योजना के अंतर्गत राज्य की लखपति दीदियों को ब्याज अनुदान पर दिए जा रहे ऋण की सीमा बढ़ाकर 1.50 लाख रुपये कर दी गई है।

> **बजट में आम तौर पर फोकस इस बात पर रहता है कि सरकार का खजाना कैसे भरे, लेकिन ये बजट उससे बिल्कुल उल्टा है। यह बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास में भागीदार कैसे बने, इसकी बहुत मजबूत नींव रखता है। वित्त मंत्री ने अपने तीन घंटे के भाषण में हर सेक्टर को छूने का प्रयास किया है। बजट में सभी वर्गों के लिए कुछ न कुछ प्रावधान किए गए हैं।**

भरतपुर के नगरीय क्षेत्रों में बाढ़ सुरक्षा हेतु 1020 करोड़ का प्रावधान। विभिन्न स्थानों पर नवीन औद्योगिक पार्कों की होगी स्थापना। ट्रांसफार्मर, फीडर और सब स्टेशन की होगी रियल टाइम मॉनिटरिंग। अजमेर डिस्कॉम के ग्रिड को किया जाएगा एआई इनेबल्ड। एनटीए के तर्ज पर राजस्थान स्टेट एजेंसी की स्थापना की घोषणा। 28 लाख परिवारों के लिए आवास निर्माण का कार्य स्वीकृत। ऑनलाइन सुविधा युक्त टेस्ट सेंटर्स का भी होगा निर्माण। नगर निकायों में 4 लाख नई स्ट्रीट लाइटें लगाई जाएंगी। मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के तहत एक लाख युवाओं को 10 लाख तक के ऋण पर ब्याज अनुदान की सुविधा मिलेगी। बांधों के डाउन स्ट्रीम में लगेंगे सायरन, खर्च होंगे 10 करोड़ रुपए।

–अतिथि संपादक,
बालमुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 12 फरवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 1:42 तक, हर्षण योग रात्रि 3:06 तक, विष्टि करण दिन 12:23 तक, चन्द्रमा आज दिन 1:42 से धनु राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य–मकर, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–मकर, बुध–कुम्भ, गुरू–मिथुन, शुक्र–कुम्भ, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह आज भद्रा दिन 12:23 तक है। आज फाल्गुनी संक्रांति सूर्य कुम्भ में रात्रि 4:09 पर प्रवेश करेगा। आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:33 तक, चर 11:18 से 12:41 तक, लाभ–अमृत 12:41 से 3:27 तक, शुभ 4:50 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:10, सूर्यास्त 6:12

मेष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

सिंह

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित कारणों से मन में असंतोष बना रहेगा।

धनु

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात मन:स्थिति में सुधार होगा।

वृष

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

कन्या

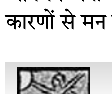

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों से संबंधित कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मिथुन

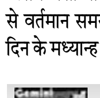

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

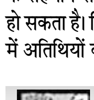

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ

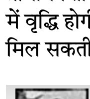

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

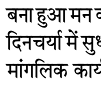

परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या–वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक

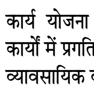

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मीन

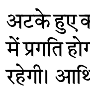

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

आम आदमी को राहत व प्रदेश के विकास को आगे ले जाने वाला बजट

सी.ए. शंकर अग्रवाल

आर्थिक विशेषज्ञ सी.ए. शंकर अग्रवाल ने राज्य बजट को आम आदमी को राहत व अनेक विकास योजनाओं के साथ–साथ भविष्य के विकसित राजस्थान का नक्शा प्रस्तुत किया है। वित्त मंत्री दीया कुमारी ने हर वर्ग चाहे किसान हो या व्यापारी, महिला, युवा, उद्यमी सभी वर्गों का ध्यान रखकर बजट प्रस्तुत किया है। गांव गरीब और किसान के साथ–साथ उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार व इन्फ्रास्ट्रक्चर सभी क्षेत्रों को प्रगति पथ पर ले जाने का सरकार का इरादा साफ झलकता है। राजस्थान पर्यटन क्षेत्र में अग्रणी है। अत: पर्यटन को बढ़ावा देने की अनेक घोषणाऐं राज्य के विकास का आधार बनेगा। महिला सशक्तिकरण हेतु लखपति दीदी योजना के अन्तर्गत सोलह लाख लखपति दीदी, व्यवसाय हेतु मिलने वाला ऋण एक से बढ़कर डेढ़ लाख रूपये करना महिलाओं को प्रशिक्षण व बच्चों हेतु आंगनबाड़ी केन्द्रों पर तीन से छ: वर्ष की आयु के बच्चों को शिक्षा हेतु पंजीयन करना। किसानों को 25000 करोड़ का ब्याज मुक्त ऋण तारबंदी हेतु दस से घटाकर सात किसानों की संख्या 2098 ग्राम पंचायत स्तर पर बर्मी कम्पोज खाद केन्द्र बनाये जायेंगे। 500 सोलर पम्पस पर 1500 करोड़ का खर्च, हरियाणा से किसानों को पानी उपलब्ध करवाना एवं 2.50 लाख किसानों को मुफ्त बीज उपलब्ध करवाने की घोषणा निश्चित ही प्रदेश के किसानों की हालत में सुधार के साथ–साथ राजस्थान कृषि क्षेत्र में अग्रणी होगा। अभी भी राजस्थान की कृषि का देश की औसत जीडीपी में योगदान 27 प्रतिशत है जो देश के अन्य राज्यों से कहीं ज्यादा है। राजस्थान का पहला बजट 7 अप्रेल 1952 को राज्य विधानसभा में नाथूराम मिर्धा ने वित्त मंत्री के रूप में प्रस्तुत किया था, जिसमें 1605.17.लाख का राजस्व व 1620.17 लाख का खर्चा था। आज हमारे बजट में 325740.14 करोड़ का राजस्व एवं 350054.07 करोड़ का राजस्व व्यय है। दूसरे शब्दों में कहूं तो वर्षों तक पिछडा राजसीन कहलाने का कलंक राज्य की जनता ने झेला है।

आज हमारा राज्य पिछड़ा व बीमार राज्य से निकल कर विकासशील राजस्थान की अग्र श्रेणी में आ गया है। यह हमारे सभी के प्रयासों व सरकार की इच्छाशक्ति का परिणाम है कि आज 16430 किमी. की सड़कों का जाल राजस्थान में बिछा है, कहीं भी जायें सड़कों को देखकर राजस्थान की प्रगति का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

राज्य की जीडीपी का देश की जीडीपी में 5.18 प्रतिशत योगदान है। किसी समय में हमारी जीडीपी दो से ढ़ाई प्रतिशत तक सीमित थी। आज राज्य की जीडीपी में 46 प्रतिशत हिस्सा सेवा क्षेत्र का है जिसमें पर्यटन सेवा, खनिज उद्योग क्षेत्र का बड़ा योगदान है। इसके अलावा 27 प्रतिशत उद्योग क्षेत्र व 27 प्रतिशत कृषि क्षेत्र का योगदान है। जहां राज्य में प्रवासी राजस्थानी उद्योग लगाने से डरते थे, क्योंकि यहां आधारभूत सुविधाओं के साथ–साथ बिजली–पानी का अत्यन्त अभाव था। राजस्थान जहां किसी समय में 3952 मेगावाट बिजली उत्पादन करता था, वहीं आज 6739 मेगावाट बिजली उत्पादन कर रहा है। जल आपूर्ति हेतु अनेक योजनाओं पर काम जारी है। अत: यह मानने में संकोच नहीं होना चाहिए कि राजस्थान में सभी क्षेत्रों में प्रगति की है। यह बहस का विषय हो सकता है कि किस सरकार ने कितना विकास कर राज्य को आगे बढ़ाया है। आज वित्त मंत्री ने राजस्थान की इस विकास यात्रा को आगे बढ़ाते हुये हर क्षेत्र को बिना नये कर लगाये, अतिरिक्त बजट देना व अनेक विकास योजनाओं की घोषणा निश्चित ही राज्य के विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

–सी.ए. शंकर अग्रवाल

आर्य समाज के संस्थापक "स्वामी दयानन्द सरस्वती"

12 फरवरी 2026 को स्वामी दयानन्द सरस्वती की 202वीं जयंती पर श्रद्धा सुमन

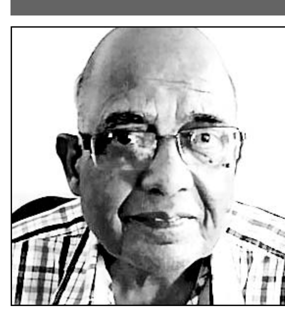

डॉ. जे.के. गर्ग,

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान विचारक, समाज सुधारक थे। उनका जन्म गुजरात के टंकारा में ओडीचय परिवार के अंदर 12 फरवरी 1824 को हुआ था, उनके बचपन का नाम मूल शंकर था। उन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया और मूर्तिपूजा, छुआछूत जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर वैदिक धर्म के पुनरुत्थान और हिंदी और स्वराज्य के लिए कार्य किया। उन्होंने सत्य की खोज में युवावस्था में ही घर छोड़ दिया था।

वेदों और वैदिक दर्शन के प्रकांड विद्वान

10 अप्रैल 1875 को मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का विरोध किया और महिला शिक्षा व विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। हिंदी में सत्यार्थ प्रकाश उनका प्रसिद ग्रन्थ है। उन्होंने वेदभाष्य, और संस्कार विधि की रचना की। उन्होंने ही स्वराज्य का नारा सबसे पहलें 1876 में दिया। 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली के दिन अजमेर में उनका निधन हुआ।

स्वामी दयानंद सरस्वती मूर्ति पूजा के विरोधी थे

स्वामी दयानंद ने अंधविश्वासों को मिटाकर वैदिक ज्ञान को पुनः स्थापित करने में अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनके विचारों का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी समाधि अजमेर में है। वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे। स्वामी जी यज्ञ पर विशेष जोर देते थे। आर्य समाज के अनुयायी देश के विभिन्न हिस्से में निवास करते हैं।

–डॉ. जे.के. गर्ग, पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

एक प्रगतिशील मुस्लिम राष्ट्र: ओमान

प्रो .कैलाश सोडाणी

मेरी विद्यार्थी प्रोफेसर कनिज फातिमा, जो पिछले 16 वर्षो से ओमान की निजवा विश्वविद्यालय में शिक्षक है, के निमंत्रण पर मुझे ओमान यात्रा का अवसर मिला। विश्वविद्यालय में लगभग 10000 विद्यार्थी एवं 400 शिक्षक हैं। जिनमे से 50 प्रतिशत शिक्षक अन्य देशों से हैं। उच्च शिक्षा के मामले में ओमान काफी पीछे था। सरकार एवं जनता दोनों में जागरूकता आयी है। ओमान में लगभग 29 विश्वविद्यालय हैं, उनमें निजी और सरकारी दोनों शामिल है। सरकार बहुत ही आधुनिक एवं डिजिटल व्यवस्था से पूर्ण श्रेष्ठ इंफ्रास्ट्रक्चर से युक्त विश्वविद्यालय बना रही है। यही कारण है कि टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में ओमान के 10 विश्वविद्यालय शामिल है। निजवा विश्वविद्यालय ओमान का सर्वोच्च रैंकिंग वाला विश्वविद्यालय हैं।

विश्वविद्यालय में क्लास–रूम टीचिंग के प्रति बहुत गंभीरता है। विद्यार्थियों की उपस्थिति लगभग 90 प्रतिशत रहती है। पुस्तकालय बहुत ही धनाढ्य एवं आधुनिक है। प्राय: अध्यापक एवं छात्र–छात्राएं कैफेटेरिया में ही लंच लेते हैं, जहां बहुत ही उम्दा किस्म का भोजन न्यूनतम दरों पर उपलब्ध है। पूरा विश्वविद्यालय ही वातानुकूलित है एवं कैंपस में पूर्ण शांति का माहौल है। महत्वपूर्ण बात यह है कि एक मुस्लिम देश के विश्वविद्यालय में छात्राओं की संख्या 90 प्रतिशत है। लडकियों में उच्च शिक्षा के प्रति यह जागरूकता ओमान के उज्जवल भविष्य की गारंटी प्रदान करती है। साथ ही छात्रों में उच्च शिक्षा के प्रति कमजोर मानसिकता चिन्ता का विषय है।

ओमान एक शांतिप्रिय, सुरक्षित एवं प्रगतिशील मुस्लिम राष्ट्र है। जहां सुल्तान के प्रभुत्व को स्वीकार करते हुए प्रजातांत्रिक व्यवस्था का लाभ भी ले रहे हैं।

आबादी लगभग 54 लाख है, जिसमें से 45 प्रतिशत प्रवासी हैं। प्रवासी समुदाय में सर्वाधिक संख्या भारतीयों की है, जो लगभग 9 लाख है। ओमान का कुल क्षेत्रफल लगभग 3,09,500 वर्ग किलोमीटर है। अपनी प्राचीन संस्कृति, पारंपरिक वास्तुकला, रेगिस्तानी नजारों और खूबसूरत समुद्री तटों के लिए मशहूर है। निजवा का म्यूजियम बहुत ही सराहनीय है। जहाँ ओमान के पुरातन से लेकर विकास की वर्तमान यात्रा को डिजिटल व्यवस्था से प्रदर्शित किया गया है। भारत के बड़े शहरों में भी इस प्रकार के म्यूजियम बनाने की आवश्यकता है। पर्यटन और मेहमान–नवाजी देश की पहचान है। देश की अर्थव्यवस्था तेल एवं गैस पर निर्भर है।

देश की शत–प्रतिशत आबादी को बिजली, पानी, शिक्षा एवं चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध है। बहुत ही मजबूत एवं खूबसूरत सडके हैं। लोगों में उच्च स्तर का ट्राफिक सेंस है इसलिए गाडयिां 125–150 किलोमीटर की रफ्तार से बिना हॉर्न की आवाज के दौड रही है। पूरे देश में पार्किंग व्यवस्था बहुत ही सराहनीय है ।

पूरा देश स्वच्छ है। नागरिक स्वच्छता एवं ट्राफिक व्यवस्था के प्रति बहुत ही गंभीर एवं अनुशासित हैं । कानून की पालन करना उनके जीवन शैली का स्वाभाविक हिस्सा बन चुका है । नीचे के स्तर पर भ्रष्टाचार नहीं है। नागरिकों का जीवन स्तर अच्छा है। लोग प्राय: दिन में मकान और दुकान पर ताला ही नहीं लगाते हैं। आप कभी कोई चीज कहीं भूल जाते है, दो–चार दिन बाद भी वह वस्तु वहीं मिलती है।

भारत और ओमान के मध्य अच्छे संबंध है। 2024 में दोनों देशों के मध्य 10.61 अरब डॉलर का व्यापार हुआ था। भारत के निर्यात 4.06 अरब डॉलर के मुकाबले आयात अधिक है, जो 6.55 अरब डॉलर है। कुछ दिनों पूर्व हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की ओमान यात्रा के दौरान जो समझौते हुए उसके आधार पर अगले पाँच वर्षो में दोनों देशों का व्यापार 20 अरब डॉलर तक पहुँच जाएगा। पिछले 15 वर्षो से रह रहे भारतीय व्यापारी श्री मोइज के अनुसार ओमान में व्यापार करना बहुत ही सहज है। एक बार जो हिंदुस्तानी यहां आ गया, वह यहां के सौहार्दपूर्ण वातावरण में रम–बस जाता है।

इस यात्रा में मेरे एक और विद्यार्थी से मुलाकात हुई। श्री अशोक पुरोहित जो पत्रकार है और ओमान टाइम्स में सह–संपादक है, पिछले 26 वर्षो से ओमान में ही कार्यरत है। भारत एवं ओमान के श्रेष्ठ संबंधों पर चर्चा के दौरान एक बहुत अच्छे वाकिये से वाकिफ करवाया। 1996 में भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट पति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ओमान यात्रा पर पधारे। ओमान के सुल्तान (राष्ट्रपति) काबूस बिन सईद का अध्ययन–अध्यापन भारत में हुआ था। डॉ. शंकरदयाल जी उनके शिक्षक थे। सुल्तान काबूस ने एक विद्यार्थी की हैसियत से अपने शिक्षक का भाव–भीना ऐतिहासिक स्वागत किया । डॉ. शर्मा हमारे सुल्तान के शिक्षक है, इसी भावना से संपूर्ण ओमान में वहाँ के नागरिकों ने सडक के दोनों ओर खड़े होकर डॉ. शंकरदयाल जी का स्वागत एवं अभिनंदन किया ।

–प्रो .कैलाश सोडाणी, पूर्व कुलगुरु, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

ग्रामीण भारत को विकसित बनाने की संकल्पना पूर्ण करने में मददगार होगी वीबी–जी राम जी

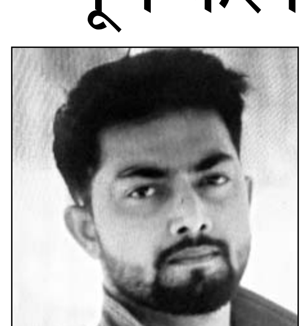

खेमचन्द बैनीवाल

वीबी–जी राम जी– विकसित भारत जिसका पूरा नाम रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) है, ग्रामीण विकास ढांचे को मजबूत बनाने का संकल्प है। यह विकसित भारत 2047 के केन्द्रीय बिन्दुओं युवा, किसान, महिला और गरीब को सशक्त करने का रोडमैप है। गरीब और किसान को सीधा कनेक्ट करने वाली यह योजना जरूरतमंद ग्रामीण आबादी विशेषकर गरीब(उसे ज्यादा जरूरत है) को पर्याप्त रोजगार की गारंटी देती है और किसान को खाली समय में अतिरिक्त रोजगार प्रदान करने के साथ ही व्यवस्था करती है जिससे पीक सीजन में श्रम की इतनी अनुपलब्धता न हो जाए कि खेती घाटे का सौदा हो जाए या हमारी खाद्य सुरक्षा ही खतरे में पड़ जाए। इसके साथ ही यह भारतीय कृषि को परोक्ष रूप से वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाती है।

यह योजना हर ग्रामीण परिवार को प्रत्येक वित्तीय वर्ष में एक सौ पच्चीस दिनों की मजदूरी की वैधानिक गारंटी देती है, ग्रामीणों का सशक्तीकरण करती है, महात्मा गांधी, दीनदयाल उपाध्याय और नानाजी देशमुख की ग्राम स्वराज और ग्राम विकास की संकल्पनाओं को साकार करने का रास्ता तैयार करती है।

छीजत पर रोक, एआई टूल्स का अपयोग कर गड़बड़ी की सम्भावना करेंगे शून्य-

इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि मनरेगा ने ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार दिया, विशेषकर विपरीत मौसम के समय ग्रामीण आबादी को बीमा जैसे सुविधा दी लेकिन भविष्य के लिए टिकाऊ परिसम्पत्तियों के निर्माण करने में उतनी सफल नहीं हो पायी और इसी बिन्दु पर वीबी–जी राम जी जैसी योजना की आवश्यता महसूस की गई।

नई योजना का फोकस जल सुरक्षा और जल संरक्षण पर है जिसमें सिंचाई सुविधाओं का विकास और बाढ़ बचाव कार्य भी शामिल हैं। इससे प्रत्यक्ष रूप से किसान व परोक्ष रूप से समूची ग्रामीण आबादी को लाभ मिलेगा।

यह योजना 'विकसित ग्राम पंचायत' संकल्पना को साकार करने के लिए 'पीएम गति शक्ति' के साथ एकीकृत करने का स्वप्न बुनती और साकार करती है ताकि ग्राम पंचायतों की विविध आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके जिससे सड़क बनने के बाद पाइपलाइन के लिए सड़क नहीं तोड़नी पड़े या इकॉलोजी सिस्टम को हानि पहुंचाने वाला या नदी बहाव में रूकावट ड़ालने वाला जल संरक्षण ढांचा स्वीकृत या निर्मित न हो।

योजना का लाभ समय पर मिले और पूरा मिले, इसके लिए व्यापक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से सुशासन, जवाबदेही और नागरिक सहभागिता को आधुनिक किया गया है। इसमें विभिन्न स्तरों पर बायोमीट्रिक प्रमाणीकरण, जीपीएस या मोबाइल–आधारित कार्यस्थल निगरानी, रियल टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम , डैशबोर्ड, सक्रिय सार्वजनिक प्रकटीकरण, बेहतर और नियमित ऑडिट तथा धोखाधड़ी–जोखिम न्यूनीकरण के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता(एआई) का उपयोग शामिल करने की परिकल्पना है।

समय पर भुगतान, समय पर रोजगार नहीं तो बेराजगारी भत्ता-

दैनिक मजदूरी का भुगतान एक सप्ताह के भीतर या असामन्य स्थिति में पंद्रह दिनों के भीतर किया जाएगा। राज्य सरकार वित्तीय वर्ष में बुआई तथा कटाई की चरम कृषि ऋतुओं को कवर करने वाली कुल साठ दिनों की ऐसी अवधि को अग्रिम अधिसूचित करेगी, जिसमें इस अधिनियम के अधीन कार्य नहीं किए जाएंगे। इससे किसानों को अपने खेतों में मजदूरी की कमी नहीं होगी व किसान–मजदूर सभी लाभ में रहेंगे। यदि योजना के अंतर्गत रोजगार आवेदक को आवेदन प्राप्ति के पंद्रह दिनों के भीतर या जिस तिथि से रोजगार मांगा गया है, रोजगार प्रदान नहीं किया जाता है तो वह इस धारा के प्रावधानों के अनुसार दैनिक बेरोजगारी भत्ता पाने का हकदार होगा।

विकास और योजना की धुरी है ग्राम पंचायत-

ग्राम पंचायत परिवार पंजीकरण एवं ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्ड जारी करने, आवेदन लेने, मास्टर रोल जारी करने, रोजगार आवंटन करने का कार्य करेगी। ग्राम सभा कार्यों का सामाजिक अंकेक्षण करेगी जो ग्राम स्वराज की संकल्पना को साकार करती है।

इस योजना में विशेष ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्ड का प्रावधान है। यह एकल महिला, दिव्यांग, साठ वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति, मुक्त बंधुआ मजदूर, विशेष श्रेणी के जनजातीय समूह के व्यक्ति हो व ट्रांसजेंडर को उपलब्ध होगा। यह कार्ड सामान्य कार्ड से अलग रंग का होगा, जो उस श्रमिक का कार्य मूल्यांकन और कार्यस्थल सुविधाओं में विशेष संरक्षण सुनिश्चित करेगा। न्यूनतम 10 मजदूर उपलब्ध होने पर नया कार्य शुरू होगा, वनीकरण कार्यों में इस संख्या में छूट रहेगी।

–खेमचन्द बैनीवाल, सहायक लेखा अधिकारी, जिला परिषद, जयपुर।

उत्तर-पश्चिम रेलवे ने उच्चतम राजस्व प्राप्त किया

जोधपुर, (कासं)। उत्तर पश्चिम रेलवे ने वर्ष 2025–26 में टिकट चेकिंग में अब तक का उच्चतम राजस्व प्राप्त किया है। यह उत्कृष्ट प्रदर्शन पिछले सभी रिकॉर्डों को पार कर गया है।

उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी अमित सुदर्शन के अनुसार उत्तर पश्चिम रेलवे नें टिकट चेकिंग में इस वित्त वर्ष 2025–26 में 9 फरवरी तक टिकट चेकिंग से 63.50 करोड़ रूपए का राजस्व प्राप्त किया है जोकि पिछले वर्ष इस अवधि में प्राप्त टिकट चेकिंग राजस्व की तुलना में 27.01 प्रतिशत अधिक है। यह उत्कृष्ट प्रदर्शन पिछले सभी रिकॉर्डों को पार कर गया है। 63.50 करोड़ रूपए का यह राजस्व उत्तर पश्चिम रेलवे के पिछले उच्चतम वार्षिक राजस्व 63.22 करोड़ रूपए (वित्त वर्ष 2023–24) के आंकड़े को 50 दिन पहले पार कर चुका है। अमित सुदर्शन ने बताया कि उत्तर पश्चिम रेलवे उत्कृष्टता और ग्राहक संतुष्टि के प्रति प्रतिबद्ध है। उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा बिना टिकट यात्रा की रोकथाम के लिए टिकट चेकिंग अभियान के साथ यात्रियों को जागरूक करने का प्रयास भी किया जा रहा है। टिकट चेकिंग के लिए विशेष योजना बनाई जाती है। इसके लिए विभिन्न रेलखण्डों में टिकटों की बिक्री, फील्ड स्टॉफ के फीडबैक तथा रेल मदद पोर्टल की समीक्षा कर टिकट चैकिंग की योजना बनाई जाती है। इस से ना सिर्फ रेल राजस्व में वृद्धि हो रही है, बल्कि यात्रियों की शिकायतों में कमी और रेल उपयोगकर्त्ताओं की संतुष्टि में भी वृद्धि हो रही है।

भजनलाल सरकार ने विधानसभा में 6.10 लाख करोड़ रुपए का बजट पेश किया

उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी ने 10 संकल्पों में पढ़ा सरकार का विजन

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर। राजस्थान की वित्त मंत्री दीया कुमारी ने बुधवार को विधानसभा में 6.10 लाख करोड़ रुपए का तीसरा आम बजट 10 संकल्पों में पेश किया। करीब 2 घंटे 54 मिनट के बजट भाषण में दीया कुमारी ने 8वें वेतन आयोग के लिए हाईपावर कमेटी बनाने, किसानों को 25 हजार करोड़ रुपए का ब्याज मुक्त लोन देने, मेधावी छात्रों को 20 हजार रु. का ई-वाऊचर, परीक्षाओं के लिए नई टेस्टिंग एजेंसी, स्कूली बच्चों को खेल किट और जादुई पिटारा देने का ऐलान किया। इसके साथ ही प्रदेश में औद्योगिक क्षेत्र को मजबूत करने तथा असहाय, विमंदित, लावारिस मरीजों के फ्री इलाज की घोषणा की। बजट में मुख्यमंत्री लखपति दीदी योजना में अब कर्ज की सीमा को 1 लाख से बढ़ाकर 1.50 लाख रु. किया। होमगार्ड्स के 5 हजार पद भी बढ़ाए गए है।

राज्य सरकार ने आगामी वित्त वर्ष 2026-27 के लिए लगभग 6 लाख 10 हजार 956 करोड़ का बजट आकार प्रस्तावित किया है। जो कि पिछले बजट से 52 हजार 360 करोड़ रु. ज्यादा है। बजट प्रावधानों के अनुसार वर्ष 2026-27 में कुल राजस्व प्राप्तियां 5 लाख 25 हजार 740 करोड़ 34 लाख रुपये रहने का अनुमान है। वहीं, राजस्व व्यय 3 लाख 50 हजार 50 करोड़ 54 लाख 7 हजार रुपये आंका गया है। सरकार ने वित्तीय संतुलन बनाए रखने पर जोर देते हुए राजकोषीय घाटा 79 हजार 492 करोड़ 52 लाख रुपये रहने का अनुमान जताया है, जो राज्य के सकल घरेलू उत्पाद का 3.69 प्रतिशत होगा। आर्थिक प्रगति के संकेत देते हुए राज्य का सकल घरेलू उत्पाद वर्ष 2026-27 में 21 लाख 52 हजार 100 करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान लगाया गया है।

वित्त मंत्री ने सदन में कहा कि, सरकारी कर्मचारी की मौत पर उसकी पुत्रवधु को भी अनुकंपा नियुक्ति मिल सकेगी। कर्मचारी अगर सरकारी नौकरी में रहते हुए स्थायी दिव्यांग हो जाता है और वह नौकरी करने में असमर्थ है तो आश्रित को अनुकंपा नियुक्ति मिलेगी। उन्होंने जलदाय विभाग में 3 हजार संविदा कर्मियों की नियुक्ति की घोषणा की गई है। साथ ही नई जल नीति लाने का भी ऐलान किया गया। करीब 6500 गांवों को हर घर नल हर घर जल योजना से जोड़ा जाएगा।

वित्त मंत्री दिया कुमारी ने कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में राज्य सरकार 1800 करोड़ रुपए की लागत से नई सड़कें और ब्रिज बनाएगी। इसके साथ ही 4 जिलों में एयरपोर्ट बनाने के लिए सर्वे भी किया जाएगा। अगले साल 15 नए रेलवे ओवर ब्रिज और अंडर ब्रिज भी बनाए जाएंगे।

वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार 30 हजार युवाओं को 10 लाख तक का ब्याज मुक्त लोन देगी। झींगा पालने वाले किसानों को सस्ती बिजली भी दी जाएगी। इसके अलावा सरकार ने दूसरे राज्यों से गाड़ी खरीदने पर टैक्स में छूट का भी ऐलान किया है।

उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी ने बुधवार को विधानसभा में राज्य सरकार का वित्त वर्ष 2026-27 का बजट पेश किया। इस दौरान उन्होंने कई मुद्दों को लेकर विपक्ष पर तंज कसा, जिस पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा समेत सत्ता पक्ष ने ठहाके लगाए।

- **8वें वेतन आयोग के लिए हाई पावर कमेटी गठन, किसानों को 25 हजार करोड़ रु. का ब्याज मुक्त ऋण तथा लावारिस-विमंदितों के मुफ्त इलाज की घोषणा**
- **मेधावी विद्यार्थियों को 20 हजार रु. का ई-वाऊचर तथा स्कूली बच्चों के लिए जादुई पिटारे की घोषणा**
- **महिला वर्ग को साधने के लिए मुख्यमंत्री लखपति दीदी योजना में अब कर्ज की सीमा 1 लाख से बढ़ाकर 1.50 लाख रुपए की**

देखा जाए तो 8वें वेतन आयोग के लिए हाई पावर कमेटी की घोषणा के साथ राज्य सरकार ने प्रदेश के 8 लाख सरकारी कर्मचारियों को साधने की कोशिश की है।

इसी तरह किसानों को 25 हजार करोड़ रुपए का ब्याज मुक्त ऋण देने की घोषणा से मार्च-अप्रैल में होने वाले पंचायत चुनावों से पहले एक बड़े वर्ग को साधने का प्रयास है।

मेधावी विद्यार्थियों को 20 हजार रुपए का ई-वाऊचर देने से भी इन तमाम परिवारों के बीच सरकार की पॉजिटिव ब्रांडिंग पहुंचाने की कोशिश है। वहीं स्कूली बच्चों के लिए जादुई पिटारा लोगों के लिए कौतूहल व चर्चा का विषय छोड दिया है। इसी प्रकार बजट में लखपति दीदी योजना में ऋण सीमा 1 लाख से बढ़ाकर डेढ़ लाख रुपए करने से भी महिला वर्ग को साधने का प्रयास है।

राजस्थान बजट में क्या सस्ता-क्या महंगा

स्टांप ड्यूटी पर सरचार्ज 3 फीसदी बढ़ा; डी.एल.सी. दरें भी बदली

जयपुर (विसं)। राजस्थान सरकार ने वित्त वर्ष 2026-27 के बजट में स्टाम्प पेपर पर लगने वाले सरचार्ज को 3 फीसदी बढ़ा दिया है। इस निर्णय का असर सीधे तौर पर स्टाम्प पेपर खरीदने पर देखने को मिलेगा। यही नहीं सरकार ने कुछ अलग-अलग कैटेगिरी की जमीनों की डीएलसी दरों में भी बदलाव करते हुए पूरे प्रदेश में एक समान दर लागू करने का आदेश जारी किया है। इन दोनों ही निर्णय से अचल सम्पत्तियों की रजिस्ट्री भी महंगी होगी।

बजट में सरकार ने बैंक या दूसरी वित्तीय संस्थाओं से लिए जाने वाले लोन या ऋण के लिए तैयार होने वाले डॉक्यूमेंट के रजिस्ट्रेशन पर लगने वाले चार्ज को भी आधा कर दिया है। अभी तक ऐसे डॉक्यूमेंट के रजिस्ट्रेशन की फीस 1 फीसदी लगती थी, लेकिन इसे कम करके आधी यानी 0.5 फीसदी कर दिया है। साथ ही इसकी अधिकतम सीमा 1 लाख रुपए निर्धारित कर दी है। यानी अगर 0.5 फीसदी चार्ज की राशि 1 लाख रुपए से ज्यादा बनती है तो सरकार केवल 1 लाख रुपए ही लेगी। इसी तरह इन डॉक्यूमेंट पर लगने वाली स्टाम्प ड्यूटी को भी 0.25 फीसदी से आधा यानी (0.125 फीसदी) कर दिया है। वहीं इसकी अधिकतम सीमा को भी 15 लाख रुपए से घटाकर 10 लाख रुपए कर दिया है।

सरकार ने अब फार्म हाउस की जमीन की आरक्षित दरों (डी.एल.सी. रेट) में भी बढ़ोतरी की है। सरकार पहले फार्म हाउस की जमीन का बाजार मूल्य वहां की एग्रीकल्चर जमीन की दर 1.5 गुना मानते हुए रजिस्ट्री करती थी। लेकिन फार्म हाउस की जमीन का बाजार मूल्य एग्रीकल्चर जमीन का 3 गुना मानते हुए रजिस्ट्री की जाएगी।

इसी तरह कोई रिसोर्ट की जमीन की रजिस्ट्री करवाता है तो पहले रिसोर्ट की जमीन का बाजार मूल्य वहां की कृषि भूमि का 2 गुना रेट मानकर करते थे, लेकिन अब ये दर वहां की कॉमर्शियल रेट का 75 फीसदी रेट मानकर रजिस्ट्री की जाएगी।बजट में सरकार ने दूसरे राज्य से गाड़ी (प्राइवेट व्हीकल) स्थायी रूप से लाने पर उसके रजिस्ट्रेशन पर लगने वाले टैक्स पर छूट दी है। वर्तमान में इस तरह की गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन पर मोटर व्हीकल टैक्स अलग-अलग वाहनों (क्षमता के अनुसार) पर अलग-अलग दर से लगता है, जिस पर सरकार अभी 25 फीसदी तक छूट देती है। सरकार अब ऐसी गाड़ियों पर लगने वाले टैक्स पर दी जाने वाली छूट को 25 से बढ़ाकर 50 फीसदी तक करने की घोषणा की है।

- **हालांकि दूसरे राज्यों से गाड़ी खरीदने पर टैक्स में छूट मिलेगी**
- **सरकार ने लोन डॉक्यूमेंट का रजिस्ट्रेशन शुल्क आधा किया**
- **फार्म हाउस की जमीन की रजिस्ट्री करवाना महंगा हुआ**

सीकर और झुंझुनूं में एयरपोर्ट का सर्वे, अरावली के किनारे बनेगी पक्की दीवार

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर। राजस्थान के बजट में वित्त मंत्री दीया कुमारी ने कहा कि अरावली पर्वतमाला का एक बड़ा हिस्सा जयपुर, अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर तथा उदयपुर में आता है। करीब 130 करोड़ रुपए की लागत से अरावली पर्वतमाला की करीब 4 हजार हैक्टेयर भूमि की जगह पर पक्की दीवार बनाई जाएगी। प्रदेश के सभी संभाग मुख्यालयों को सिग्नल फ्री किया जाएगा। दिया कुमारी ने बजट में घोषणा की है कि, प्रदेश के सैनिक, पूर्व सैनिकों, उनके आश्रितों और वीरांगनाओं को सभी सुविधाएं एक स्थान पर उपलब्ध हो सकें, इसके लिए जोधपुर, शेरगढ़, टोंक, फलोदी, खैरथल, ब्यावर, झुंझुनूं और श्रीगंगानगर में वॉर म्यूजियम, इंटीग्रेटेड सैनिक कॉम्प्लेक्स की स्थापना किया जाना प्रस्तावित है। पहले चरण में जोधपुर, शेरगढ़, झुंझुनूं और टोंक में 36 करोड़ की लागत से इन कॉम्प्लेक्स का निर्माण कराया जाएगा।

सीकर और झुंझुनूं में नए एयरपोर्ट के लिए सर्वे की घोषणा की गई है। 8 जिलों में 3000 करोड़ रुपए की लागत से मिनी सचिवालय बनाए जाएंगे। वित्त मंत्री ने शेखावाटी के लिए यमुना जल परियोजना का काम जल्द शुरू होने की घोषणा की है। इस परियोजना पर 32000 करोड़ रुपए खर्च होंगे।

बजट में प्रदेश के लिए प्रमुख घोषणाएं...

- स्टेट हाईवे, फ्लाईओवर और एलिवटेड रोड के निर्माण व मरम्मत पर 1800 करोड़ रुपये खर्च होंगे
- नॉन-पेचेबल व क्षतिग्रस्त सड़कों पर 1400 करोड़ तथा मिसिंग लिंग सड़कों पर 600 करोड़ रु. खर्च होंगे
- आगामी वर्ष 250 अटल प्रगति पथों के 500 करोड़ रुपये की लागत के कार्य हाथ में लिए जाएंगे
- विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों एवं लॉजिस्टिक पार्क के पहुंच मार्गों के विकास पर 400 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे
- आगामी वर्ष भी मानसून के बाद सड़कों की मरम्मत के लिए 500 करोड़ रुपये का बजट तय किया
- राष्ट्रीय-राज्य राजमार्गों एवं शहरों में 2000 कैमरे स्थापित करने पर 100 करोड़ रुपये खर्च होंगे
- मुख्यमंत्री जल जीवन मिशन (शहरी) योजना का दायरा बढ़ाते हुए 5000 करोड़ रुपये खर्च करेंगे
- अमृत 2.0 योजना के तहत आगामी वर्ष 3 लाख पेयजल कनेक्शन दिए जाएंगे
- एक हजार 92 गांवों की लगभग 20 लाख आबादी को बीसलपुर से पेयजल आपूर्ति
- आगामी वर्ष 600 ट्यूबवैल व 1200 हैण्डपम्प लगाये जाने प्रस्तावित
- सशक्त जल प्रबंधन की दृष्टि से जयपुर में ''सेंटर ऑफ एक्सिलेंस'' की स्थापना
- प्रदेश में 220 केवी के छह, 132 केवी के तेरह तथा 33 केवी के 110 जीएसएस निर्माण
- राज्य के नगर निकायों में 7 लाख स्ट्रीट लाईट्स लगेंगी
- मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना में युवाओं को 10 लाख रु. तक के ऋण पर शत-प्रतिशत ब्याज अनुदान
- रानी लक्ष्मी बाई केंद्रों की 150 महाविद्यालयों में स्थापना, लगभग 25 हजार छात्रायें लाभान्वित
- 9वीं कक्षा में प्रवेश लेने वाली जरूरतमंद छात्राओं को साइकिल के लिए ई-वाऊचर
- कक्षा 1 से 8 तक के 40 लाख से अधिक जरूरतमंद विद्यार्थियों को निःशुल्क यूनिफॉर्म
- प्रदेश के सभी विद्यालयों में टायलेट सुविधा तथा 1000 स्कूलों में एआई लैब की स्थापना
- खेलों राजस्थान ''यूथ गेम्स'' का ग्राम पंचायत, ब्लॉक जिला और राज्य स्तर पर आयोजन
- प्रदेश के जिला मुख्यालयों पर मेंटल हैल्थ केयर सेल की स्थापना
- जेके लोन अस्पताल में 500 बेड क्षमता का आईपीडी टावर
- चरणबद्ध रूप से 500 अतिरिक्त ड्रग डिस्ट्रिब्यूशन काउन्टर की स्थापना
- मृतक के पार्थिव शरीर को घर पहुंचाने के लिए निःशुल्क मोक्ष वाहिनी योजना
- 7500 आंगनबाड़ियों का नन्द घर के रूप में विकास
- खुड़ी-जेसलमेर में अल्ट्रा लग्जरी स्पेशल टयूरिज्म जोन तथा कुलधरा में पर्यटक सुविधा केंद्र
- 100 करोड़ रुपये भरतपुर में अत्याधुनिक ब्रज कन्वेंशन सेंटर का निर्माण।
- झुंझुनूं, चूरू एवं सीकर में 660 से अधिक चिन्हित हवेलियों का संधारण
- जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर और जालोर को शामिल करते हुए थार सांस्कृतिक सर्किट तथा झुंझुनूं में वार म्यूजियम।
- सभी नगरीय निकायों में चरणबद्ध रूप से स्मार्ट सेवा केंद्र की स्थापना
- आगामी वर्ष प्रथम चरण में 100 प्रमुख सेवाओं को वाट्सऐप प्लेटफॉर्म पर भी शुरु
- 25 हजार युवाओं एवं महिलाओं को 'मिनी ई मित्र' के रूप में अधिकृत
- प्रदेश में सिंचाई सुविधाओं से संबंधी विभिन्न कार्य 11 हजार 300 करोड़ रुपये की लागत से होंगे
- आगामी वर्ष 50 हजार सोलर पंप संयंत्रों पर एक हजार 500 करोड़ रुपये की लागत से होंगे
- विभिन्न कृषि यंत्रों पर 160 करोड़ रुपये का अनुदान, लगभग 50 हजार कृषक लाभान्वित होंगे
- प्रदेश में 250 मीट्रिक टन एवं 500 मीट्रिक टन क्षमता के 50-50 गोदामों का निर्माण
- प्रदेश के चयनित जिलों में 2 हजार कृषकों, व्यापारियों व निर्यातकों को प्रशिक्षण
- नवगठित जिलों में जिला सहारकी उपभोक्ता भंडार तथा सभी जिलों में नवीन उपहार विक्रय केंद्र
- 200 ग्राम पंचायतों में पशु चिकित्सा उपकेंद्र तथा 25 पशु चिकित्सा उपकेंद्रों का क्रमोन्नयन
- अलवर में 3 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता के मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट
- आगामी वर्ष 5000 गांवों में 2500 करोड़ रुपये की लागत से वाटर हारवेस्टिंग स्ट्रक्चर कार्य
- वन भूमि की क्षतिपूर्ति के लिए गैर-वन भूमि से एक हजार हेक्टेयर का लैंड बैंक

दौसा में बारात से लौट रहे छह युवकों की सड़क दुर्घटना में दर्दनाक मौत

सभी युवक एक ही गांव के थे तथा शादी-समारोह में शामिल होकर लौट रहे थे

दुर्घटना से 30 मीनट पूर्व युवकों द्वारा सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई फोटो।

हादसे के बाद घायलों को एंबुलेंस से अस्पताल भिजवाया।

- हादसा जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर दौसा उपखण्ड में स्थित ग्राम कैलाई के पास मंगलवार देर रात करीब बारह बजे हुआ, जब तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर पार कर गई और दूसरी ओर से आ रहे ट्रेलर से जा टकराई
- प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी भीषण थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार लोग बुरी तरह फंस गए

दौसा, (निसं)। जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर दौसा उपखण्ड में स्थित ग्राम कैलाई के पास देर रात हुए भीषण सड़क हादसे में चार युवकों की मौके पर तथा दो की उपचार के दौरान मौत हो गई। सभी युवक एक ही गांव के हैं तथा शादी-समारोह में शामिल होकर लौट रहे थे। इस भीषण हादसे के बाद ग्राम कालाखो में हाहाकार मच गया तथा खुशियां मातम में बदल गई। हादसा मंगलवार देर रात करीब बारह बजे हुआ, जब तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर पार कर गई और दूसरी ओर से आ रहे ट्रेलर से जा टकराई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, कार की रफ्तार काफी तेज थी। अचानक नियंत्रण बिगड़ने से वाहन सीधे डिवाइडर लांघते हुए विपरीत दिशा में पहुंच गया। उसी दौरान सामने से आ रहे ट्रेलर से उसकी आमने-सामने की जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार लोग बुरी तरह फंस गए। इधर हादसे की सूचना मिलते ही सिकंदरा थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से कार में फंसे घायलों को बाहर निकाला और तुरंत इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल भिजवाया, जहां चिकित्सकों ने पांच लोगों को मृत घोषित कर दिया, जबकि एक युवक की हालत गंभीर होने पर उपचार के लिए जयपुर रैफर कर दिया, जहाँ उसकी भी मौत हो गई। पुलिस ने मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर सिकंदरा अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया, पोस्टमार्टम की कार्रवाई के बाद शव परिजनों को सौंपे दिए। वहीं दूसरी ओर हादसे के बाद कुछ समय तक हाइवे पर यातायात बाधित रहा। पुलिस ने क्रेन की मदद से क्षतिग्रस्त वाहनों को हटवाकर यातायात सुचारु कराया। प्रारंभिक जांच में तेज रफ्तार और वाहन चालक का नियंत्रण खोना हादसे का कारण माना जा रहा है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है और ट्रेलर चालक से भी पूछताछ की जा रही है। इस दर्दनाक हादसे ने क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ा दी है।

शादी से लौट रहे थे : हादसे में समय सिंह पुत्र रामसिंह योगी, लोकेश पुत्र गोवर्धन योगी, दिलखुश पुत्र बनवारी योगी, मनीष पुत्र हरिमोहन योगी, अंकित पुत्र लालराम बैरवा तथा नवीन योगी की मौत हो गई ये सभी कालाखो के रहने वाले थे, रात्रि को एक शादी समारोह में शामिल होकर पुनः घर लौट रहे थे। लौटने से पूर्व सभी युवकों ने एक साथ फोटो खिंचवाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट की थी, इधर इस घटना के बाद शादी की खुशियां मातम में बदल गई।

कुएं में डूबने से युवक की मौत

उदयपुर,(कासं)। जिले के घासा थाना क्षेत्र में स्थित कुएं में डूबने से युवक की मौत हो गई।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार बुधवार को घासा थाना क्षेत्र में स्थित कुएं में युवक का शव होने की सूचना मिलने पर घासा थानाधिकारी सुरेन्द्रसिंह, एएसआई प्रेमशंकर ने मौके पर पहुंच कर मृतक को कुएं से बाहर निकाल उसकी शिनाख्त झालों का ढाणा नूरड़ा निवासी बक्शुराम उर्फ बक्शीराम रेबारी (50) पुत्र अर्जुनजी रेबारी के रूप में शिनाख्त कर परिजनों को सूचना दी। एएसआई प्रेमशंकर ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। बक्शीराम मानसिक रोगी होकर महिला के कपड़े पहनकर इधर-उधर घूमता रहता था। शव करीब चार दिन पुराना बताया जाता है। कुएं में बदबू आने पर लोगों की सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर उसे बाहर निकाल खेमली चिकित्सायल मोर्चरी में रखवाया था।

युवक ने घर में आत्महत्या की

जोधपुर, (कासं)। शहर के सूरसागर स्थित नारवा पुल के पास रहने वाले एक युवक ने अपने घर में फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। उसके आत्महत्या का कारण पता नहीं चला है। पुलिस ने शव को कार्रवाई के बाद परिजन के सुपुर्द किया। इस बारे में मृतक के भाई की तरफ से मर्ग में रिपोर्ट दी गई।

सूरसागर पुलिस ने बताया कि मूलतः उटाम्बर हाल नारवा पुल के पास संत लक्ष्मीदास नगर सूरसागर निवासी प्रेम पुत्र देवाराम सुथार ने मर्ग में रिपोर्ट दी। इसमें बताया कि रात्रि के समय उसके भाई राहुलराम ने घर में फंदा लगा लिया। पता लगने पर उसे फंदे से उतार कर अस्पताल लाया गया, मगर डॉक्टर ने उसे चैक कर मृत बता दिया। पुलिस ने कार्रवाई कर शव परिजन को सौंपा।

पुलिस वैन से टकराई कार, महिला थाना प्रभारी की मौत

- एक पुलिसकर्मी सहित दो गंभीर घायल, पेट्रोलिंग कर रही थी पुलिस टीम
- हादसे में हरियाणा नंबर की कार के चालक को भी चोटें आई हैं। ड्राइवर बीकानेर के खाजूवाला क्षेत्र का बताया जा रहा है

श्रीगंगानगर, (निसं)। यहां एक तेज रफ्तार कार ने पुलिस पेट्रोलिंग वैन को टक्कर मार दी। हादसे में महिला पुलिस ऑफिसर की मौत हो गई। हादसे में एक पुलिसकर्मी सहित दो लोग गंभीर घायल हुए हैं। हादसा श्रीगंगानगर शहर में पायल थियेटर रोड स्थित चौराहे पर बुधवार सुबह चार बजे हुआ। श्रीगंगानगर शहर में पायल थियेटर रोड स्थित चौराहे पर बुधवार सुबह करीब चार बजे पुलिस की गाड़ी से कार की टक्कर हो गई।

जानकारी के अनुसार एसएचओ ज्योति नायक किसान चौक से पेट्रोलिंग करते हुए रमेश चौक के पॉइंट की ओर जा रही थी, तभी यह हादसा हुआ। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि पुलिस वैन पलट गई। ड्राइवर के साइड वाली सीट पर बैठी एसएचओ ज्योति का सिर बुरी तरह से दब गया। इसी कारण उन्होंने मौके पर दम तोड़ दिया। वहीं, टक्कर मारने वाली कार कुछ मीटर आगे टकराकर रुक गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि पुलिस वैन का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। शहर कोतवाल पृथ्वीपाल सिंह ने बताया हादसे में हरियाणा नंबर की कार के चालक को भी चोटें आई हैं। ड्राइवर बीकानेर के खाजूवाला क्षेत्र का बताया जा रहा है। एक्सीडेंट में एक अन्य पुलिसकर्मी और कार चालक भी गंभीर घायल हुए हैं। सूचना मिलते ही एसपी अमृता दुहन सहित पुलिस के अधिकारी घटनास्थल और अस्पताल पहुंचे।

Rajasthan State Road Development And Construction Corporation Ltd., JAIPUR.

No. NIT/2025-26/34700-14 — **निविदा सूचना/2025-26** — Date: 11.02.2026

निम्नलिखित कार्यों के लिए केन्द्र / राज्य सरकार के अभियांत्रिकी विभागों एवं उनके अधिकृत संगठनों में पंजीकृत एवं अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदायें आमंत्रित की जाती है

कार्य का विवरण	कार्य की कुल अनुमानित लागत (रु.)	निविदा सूचना संख्या
SITC of HVAC work at Admin. Block Marwar Medical University of Borawas, Jodhpur.UBN: RRC2526WSOB01197	366.00 Lakh	ई-690/25-26
Additional work Required at Medical College, Karauli. UBN: RRC2526WSOB01201	365.33 Lakh	अल्पकालीन ई-691/25-26
Construction of Outer Facade work at Sambhagiya Kar Bhawan at Jaipur. UBN: RRC2526WLOB01203	1245.14 Lakh	ई-694/25-26

निविदा से सम्बन्धित प्रपत्र में निविदा शुल्क, धरोहर राशि, डाउनलोड करने व खोलने की तारीख सहित सम्पूर्ण विवरण एवं संशोधन वेबसाईट: http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.nic.in तथा http://pwd.rajasthan.gov.in/rsrdc पर देखा जा सकता है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

महाप्रबंधक

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड नोखा

क्रमांक-3374-81 दिनांक 03.02.2026

Notice Inviting Bid- 12/2025-2026

Bids for Repair work and Strengthening and Renewal Work are invited from interestedd bidders upto 06.02.2026 [09.30AM] to 16.02.2026 [06 PM], other particulars of the bid may be visited on the procurement portal https://www.pwd.rajasthan.gov.in & eproc.rajasthan.gov.in & http://sppp.rajasthan.gov.in of the state and departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 223.99 Lakh.

NIB CODE NO. PWD2526A5491, UBN-PWD2526WSOB22377, UBN-PWD2526WSOB22378. UBN-PWD2526WSOB22379. UBN-PWD2526WSOB22380

Executive Engineer
PWD Dn. Nokha

DIPR/C/2664/2026

जोधपुर में चार हजार रुपए की रिश्वत लेते पटवारी गिरफ्तार

- परिवादी की दादी के नाम से जमीन के खाते में करेक्शन करने के बदले पांच हजार रुपए की रिश्वत मांगी थी

जोधपुर, (कासं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की जोधपुर ग्रामीण टीम ने एक पटवारी को रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। एसीबी ने जोधपुर जिले के पटवार हल्का खारिया मीठापुर, तहसील बिलाड़ा के पटवारी रोहित कुमार को 4 हजार रुपए की रिश्वत लेते पकड़ा है।

शिकायतकर्ता ने भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो जोधपुर ग्रामीण इकाई को बताया था कि आरोपी पटवारी रोहित कुमार उसकी दादी के नाम से जमीन के खाते में करेक्शन करने के बदले पांच हजार रुपए की रिश्वत मांग रहा है। जांच के दौरान यह वेरिफाई हुआ कि आरोपी ने पहले पांच हजार रुपए की डिमांड की, लेकिन शिकायतकर्ता की गुहार पर 4 हजार रुपए पर सहमत हो गया। एसीबी के डीआईजी भुवन भूषण यादव और एसीबी एएसपी जोधपुर ग्रामीण पारस सोनी के नेतृत्व में टीम ने कार्रवाई करते हुए रोहित कुमार को रिश्वत लेते मौके पर ही दबोच लिया। एसीबी महानिरीक्षक राजेश सिंह के सुपरविजन में आरोपी से पूछताछ व कार्रवाई जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

भरतपुर में लैब टेक्नीशियन ने 25 हजार की रिश्वत ली

भरतपुर/जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने भरतपुर के राजकीय जनाना चिकित्सालय स्थित ब्लड स्टोरेज यूनिट (बीएसयू) में कार्यरत लैब टेक्नीशियन (प्लेसमेंट कार्मिक) राम कुंवार को 25 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

एसीबी महानिदेशक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि करौली चौकी को शिकायत मिली थी कि आरोपी परिवादी को जनाना चिकित्सालय भरतपुर में संविदा पर ट्रॉली पूलर वार्ड बॉय के पद पर नियुक्ति दिलाने के नाम पर 30 हजार रुपए की रिश्वत मांग कर परेशान कर रहा है। शिकायत के सत्यापन के बाद एसीबी ने कार्रवाई की योजना बनाई। उप महानिरीक्षक पुलिस डॉ. रामेश्वर सिंह के सुपरविजन में पुलिस निरीक्षक जगदीश भारद्वाज के नेतृत्व में ट्रैप कार्रवाई की गई। आरोपी ने परिवादी को जनाना चिकित्सालय में बुलाकर 25 हजार रुपए रिश्वत के रूप में प्राप्त किए। इसी दौरान टीम ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। एसीबी महानिरीक्षक पुलिस राजेश सिंह के निर्देशन में आरोपी से पूछताछ की जा रही है। आरोपी के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान शुरू कर दिया गया है।

पुलिस ने नाबालिग का बाल विवाह रुकवाया

- परिवार बारात का इंतजार कर रहा था और मौके पर पुलिस पहुंच गई

सीकर, (निसं)। बाल संरक्षण इकाई की संरक्षण डॉ. गार्गी शर्मा ने बताया कि पुलिस थाना क्षेत्र सदर सीकर में रात ग्राम जगमालपुरा में बाल अधिकारिता विभाग सीकर व गायत्री सेवा संस्थान एवं चाइल्ड हेल्पलाइन टीम ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए एक नाबालिग बच्ची का बाल विवाह रुकवाया।

गांव में उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब बारात के स्वागत की तैयारियों के बीच पुलिस टीम अचानक मौके पर पहुंच गई। परिवार बारात का इंतजार कर रहा था, लेकिन इससे पहले कि विवाह की रस्में शुरू होतीं, प्रशासन ने हस्तक्षेप कर नाबालिग की शादी रुकवा दी। जिला प्रशासन को गुप्त सूचना मिली थी कि विवाह में शामिल दुल्हन की उम्र 18 वर्ष से कम है। सूचना के आधार पर पुलिस एवं टीम ने मौके पर पहुंचकर दस्तावेजों की जांच की। जांच में सामने आया कि नाबालिक बच्ची की उम्र 15 वर्ष है उम्र कम पाए जाने पर विवाह को तत्काल प्रभाव से रोक दिया गया। अधिकारियों ने परिजनों को समझाइश की। पुलिस ने परिवार को कानूनी कार्रवाई की चेतावनी दी और नाबालिग को शिक्षा जारी रखने की सलाह दी। प्रशासन ने आम लोगों से अपील की है कि कहीं भी बाल विवाह की सूचना मिलने पर तुरंत संबंधित अधिकारियों को सूचित करें, ताकि बच्चों के अधिकारों की रक्षा की जा सके।

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, बीकानेर

स्वास्थ्य भवन, त्यागी वाटिका, जेल वैल, बीकानेर

फोन-0151-2201142 email:eemhbikaner@ymail.com

क्रमांक-EE/M&H/BKN/2025-26/3309 दिनांक-29.01.2026

ई-टेण्डरिंग निविदा सूचना संख्या-60/2025-26

निम्नहस्ताक्षरकर्ता द्वारा राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जिला बीकानेर में कुल रू. 228.49 लाख के 02 कार्य उप जिला अस्पताल पर विद्युत कायर्यो हेतु निविदा में बताये अनुसार श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष उपर्युक्त विद्युत श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे/एमईएस इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त विद्युत श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेबसाईट www.dipronline.org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN NO. 1. NRH2526WSOB02297
2. NRH2526WSOB02298

(शिम्भू राम जाटव)
अधिशाषी अभियन्ता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, बीकानेर

DIPR/C/2352/2026

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, बीकानेर

स्वास्थ्य भवन, त्यागी वाटिका, जेल वैल, बीकानेर

फोन-0151-2201142 email:eemhbikaner@mail.com

क्रमांक-EE/M&H/BKN/2025-26/3310 दिनांक-29.01.2026

ई-टेण्डरिंग निविदा सूचना संख्या-61/2025-26

निम्नहस्ताक्षरकर्ता द्वारा राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जिला बीकानेर में कुल रू. 144.65 लाख के 02 कार्य उप जिला अस्पताल पर विद्युत कार्यो हेतु निविदा में बताये अनुसार श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष उपर्युक्त विद्युत श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे/एमईएस इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त विद्युत श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेबसाईट www.dipronline.org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN NO. 1. NRH2526WSOB02299
2. NRH2526WSOB02301

(शिम्भू राम जाटव)
अधिशाषी अभियन्ता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, बीकानेर

DIPR/C/2351/2026

जाली नोट छापने वाले गिरोह का पर्दाफाश, दो गिरफ्तार

नकली नोट छापने में इस्तेमाल प्रिंटर, स्याही, पेपरशीट जब्त

राजसमंद, (निसं)। केलवा थाना क्षेत्र में जाली नोट छापने वाले गिरोह का भंडाफोड़ कर पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मौके से दो आरोपियों को गिरफ्तार कर बड़ी मात्रा में नकली नोट और उपकरण जब्त किए हैं।

केलवा थाना अधिकारी सुबोध जांगिड़ ने बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत केलवा थाना पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि जैतपुरा गांव में एक मकान में नकली नोट छापे जा रहे हैं। सूचना पर पुलिस टीम ने मौके पर दबिश दी और दो युवकों को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। आमेट थाना क्षेत्र के आगल गांव निवासी नारायण लाल पुत्र मोहन लाल गुर्जर और कमलेश गुर्जर पुत्र मोहन लाल गुर्जर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 500 रुपये के 15 नोट, 200 रुपये के 362 नोट और 50 रुपये के 4 नोट बरामद किए, जिनकी कुल कीमत 80 हजार 100 रुपये है। इन सभी नोटों पर एक ही सीरियल नंबर अंकित मिला। मौके से जाली नोट छापने में इस्तेमाल प्रिंटर, स्याही के कंटेनर, पेपरशीट, कट्टर और अन्य उपकरण भी जब्त किए गए हैं। फिलहाल पुलिस दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है और मामले की जांच की जा रही है।

पिस्टल के साथ आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। कैथून पुलिस टीम ने इलाके में कार्रवाई करते हुए अवैध देशी पिस्टल सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि अवैध हथियारों के खिलाफ कार्रवाई के लिये कोटा ग्रामीण पुलिस द्वारा ऑपरेशन क्रिमिनल डस्टिंग अभियान चलाया जा रहा है। ग्रामीण एसपी ने बताया कि उसी अभियान के तहत कैथून थानाधिकारी मनोज सिकरवार ने मय जाप्ता इलाके में कार्रवाई करते हुए एक जने से अवैध हथियार देशी पिस्टल बरामद की। पुलिस टीम ने मौके पर आर्म्स एक्ट में कार्रवाई करते हुए कैथून निवासी मोहम्मद शहिद उर्फ कालिया (34) को गिरफ्तार किया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि पकड़े गये आरोपी ने पूछताछ में सकिल मेवाती से अवैध हथियार लाना बताया है, पकड़े गये आरोपी से अनुसंधान जारी है।

स्मैक तस्कर को तीन साल का कठोर कारावास

जोधपुर, (कासं)। एनडीपीएस न्यायालय जोधपुर के विशिष्ट न्यायाधीश मधुसूदन मिश्रा ने 16 साल पुराने अवैध मादक पदार्थ स्मैक के मामले में फैसला सुनाते हुए आरोपी को 3 वर्ष का कठोर कारावास और बीस हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है।

सरकार की ओर से पैरवी के लिए नियुक्त गोविन्द जोशी विशिष्ट लोक अभियोजक एनडीपीएस जोधपुर ने बताया कि 24 जून 2011 को पुलिस थाना पीपाड़ शहर के तत्कालीन थानाधिकारी इंद्रसिंह ने पीपाड़ से देवाताड़ा जाने वाली रोड से एक मोटरसाइकिल के पीछे बैठे बंशीलाल पुत्र पोकरराम विश्नोई निवासी कांकेलाव की ढाणी डांगियावास जोधपुर से 27 ग्राम अवैध स्मैक बरामद कर आरोपी को गिरफ्तार किया तथा बाद अनुसंधान आरोपी के खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र प्रस्तुत किया। गोविन्द जोशी विशिष्ट लोक अभियोजक एनडीपीएस जोधपुर ने न्यायालय से वर्तमान में अवैध मादक पदार्थों के मामलों में उत्तरोत्तर वृद्धि होने, अवैध मादक पदार्थों के अपराध गंभीर किस्म की प्रकृति के अपराध होने और उसका समाज में प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की वजह से आरोपी को कठोरतम सजा देने की मांग की जबकि आरोपी ने नरमी बरतने का आग्रह किया।

विशिष्ट न्यायालय एनडीपीएस जोधपुर के विशिष्ट न्यायाधीश मधुसूदन मिश्रा ने शुक्रवार को अभियोजन पक्ष की ओर से प्रस्तुत कुल 15 गवाह, 26 दस्तावेजी साक्ष्य और 1 आर्टिकल के आधार पर अभियुक्त बंशीलाल पुत्र पोकर राम विश्नोई निवासी कांकेलाव की ढाणी डांगियावास, जोधपुर को अवैध मादक पदार्थ स्मैक रखने के आरोप में दोषी ठहराते हुए 03 वर्ष का कठोर कारावास व बीस हजार रुपए के जुर्माने की सजा सुनाई।

दुष्कर्म के दोषी को 20 साल की सजा

कोटा, (निसं)। नाबालिग से दुष्कर्म के करीब दो साल से अधिक पुराने मामले में पॉक्सो क्रम-4 न्यायालय ने पकड़े गये आरोपी को दोषी मानते हुए 20 साल की सजा सुनाई, साथ ही 40 हजार के अर्थदंड से दंडित किया। विशिष्ट लोक अभियोजक वंदना नागर ने बताया कि 27 दिसम्बर 2023 को पीड़िता के पिता ने कोटा ग्रामीण के एक थाने में शिकायत दी। शिकायत मे कहा कि उसकी 12 वर्षीय नाबालिग बेटी 24 दिसम्बर 2023 की रात्रि को बिना बताये कहीं चली गई। जब उसने देखा तो बाहर से कुंडी लगी हुई थी, कमरे में बेटी नहीं थी। शिकायत में एक युवक पर भगा ले जाने का आरोप लगाया। पुलिस ने पिता की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया। पुलिस ने मामले में अनुसंधान करते हुए नाबालिग को बहला-फुसलाकर भगा ले जाने और दुष्कर्म व पॉक्सो एक्ट में मामला दर्ज करते हुए आरोपी युवक को गिरफ्तार किया था।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता जन स्वा.अभि.विभाग, वृत चित्तौड़गढ़

शास्त्रीनगर, चित्तौडगढ-312001

फोन नं. 01472-240916 E-mail: secircle.chi.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांक- एसई/वृचि/निविदा/2025-26/4358-65 दिनांक-30.01.2026

निविदा सूचना संख्या 39 से 43 वर्ष 2025-2026

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निविदा सूचना संख्या 39 से 43 में वर्णित कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है। इन कार्यो की अनुमानित लागत, निविदा डाउनलोड/अपलोड, तकनिकी बिड, निविदा खोलने की तिथी, निविदा शुल्क/धरोहर राशि एवं निविदा प्रक्रिया शुल्क जमा कराने की तिथियॉ एवं निविदा की शर्ते इत्यादि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता हैं तथा वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov. पर निविदा प्रपत्र निर्धारित अवधि में डाउनलोड/अपलोड किए जा सकते है। इच्छुक संवेदक द्वारा सभी विवरण यू.बी.ए. नं. के माध्यम से किए जा सकते है। इच्छुक संवेदक द्वारा सभी विवरण यू.बी.एन. नं. के माध्यम से www.sppp.rajasthan.gov.in पर भी देखे जा सकते है।

PHE2526WSOB12519, PHE2526WSOB12520, PHE2526WSOB12521, PHE2526WSOB12522, PHE2526WSOB12523

(सुनीत कुमार गुप्ता)
अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वा. अभि. विभाग, वृत्त चित्तौडगढ

DIPR/C/2329/2026

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड सांचौर

क्रमांक-अअ/सांचौर/2025-26/4255 दिनांक-03.02.2026

निविदा सूचना संख्या 17 वर्ष 2025-2026

NIB NO. PWD2526A5480

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से सडक कार्य के आधार पर उपयुक्त श्रेणी के सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से निर्धारित प्रपत्र में कार्य जिनकी लागत राशि रू. 60.00 लाख है के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	4 फरवरी 2026 9.30 बजे से 16 फरवरी 2026 सायं 06.00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। कार्यवार यू बी एन संख्या निम्नानुसार है।

PWD2526WSOB22340

(प्रदीप पंवार)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड सांचौर

DIPR/C/2620/2026

पक्षियों का शिकार करने से मना करने पर किसान पर हमला किया

गंगापुर सिटी, (निसं)। वजीरपुर थाना क्षेत्र में शिकार रोकने पर एक किसान पर हमला किया गया। घायल किसान को गवर्नमेंट अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसका इलाज चल रहा है। पीड़ित ने पुलिस को रिपोर्ट दी है।

घायल किसान को अस्पताल में भर्ती कराया।

फुलवाड़ा पेपट निवासी बृजमोहन मीना ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि 10 फरवरी की सुबह करीब 9.30 बजे वह अपनी पत्नी गुड्डी देवी के साथ गांव स्थित बोरिंग पर सरसों की फसल काटने गए थे। इसी दौरान उन्होंने पूरण वागरिया के बेटे और उसके 2 साथियों को मोर और कबूतर का शिकार करते देखा। बृजमोहन ने जब उन्हें शिकार करने से रोका, तो तीनों ने उनके साथ गाली-गलौच शुरू कर दी। रिपोर्ट के अनुसार विवाद बढ़ने पर एक युवक ने गिलोल से बृजमोहन की बाईं आंख पर वार किया। आरोपियों के पास टोपी वाली बंदूक, गिलोल और डंडा जैसे हथियार थे। आरोप है कि पहले डंडे से मारपीट की गई, फिर पूरण वागरिया के बेटे ने कुछ दूरी से टोपी वाली बंदूक से फायर किया। गोली बृजमोहन के कान के ऊपर से निकल गई, जिससे वह बाल-बाल बच गए। हालांकि, छर्रे लगने से उनके सिर और शरीर के अन्य हिस्सों में चोटें आईं और वह गंभीर रूप से घायल हो गए। फायर की आवाज सुनकर मौके पर पहुंची पत्नी गुड्डी देवी ने बीच-बचाव करने का प्रयास किया, तो आरोपियों ने उनके साथ भी डंडों से मारपीट की।

शोर मचाने पर आरोपी मौके से फरार हो गए। आसपास के लोगों की मदद से घायल को पहले खंडीप अस्पताल ले जाया गया, जहां से उसे गंगापुर सिटी अस्पताल रेफर कर दिया गया। बृजमोहन का इलाज गंगापुर गवर्नमेंट अस्पताल में जारी है। पीड़ित ने बताया कि वह आरोपियों को नाम से नहीं जानता, लेकिन सामने आने पर पहचान कर सकता है। थाना अधिकारी राजवीर सिंह ने बताया कि परिजनों द्वारा अभी इस मामले में कोई शिकायत नहीं दी गई है।

हमले में घायल पिता की मौत, बेटे ने की थी मारपीट

कोटा, (निसं)। जिला बूंदी के केश्वरायपाटन थाना इलाके में घरेलू विवाद के चलते बेटे ने पिता के साथ मारपीट कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया था। हमले में घायल वृद्ध की एमबीएस अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई।

केश्वरायपाटन थाने के एएसआई हरिशंकर शर्मा ने बताया कि थाना इलाके के सोडेला गांव निवासी रामरतन के तीन बेटे हैं, जिसमें बड़ा और छोटा बेटा गांव से बाहर रहते हैं और एक बेटा लेखराज रामरतन के साथ रहता है। एएसआई ने बताया कि मंगलवार रात्रि को रामरतन और लेखराज के बीच घरेलू विवाद को लेकर झगड़ा हो गया और उसी झगड़े के चलते लेखराज ने लकड़ी से पिता के साथ मारपीट कर दी। हमले में घायल रामरतन को उपचार के लिये केश्वरायपाटन के चिकित्सालय में भर्ती कराया गया, जहां हालत में सुधार नहीं होती देख उसे कोटा के एमबीएस अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसकी उपचार के दौरान मौत हो गई। एएसआई ने बताया कि मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया है। एएसआई ने बताया कि आरोपी लेखराज के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

गांजे सहित एक गिरफ्तार : उदयपुर के बैकरिया थाना पुलिस ने तलाशी अभियान के दौरान अवैध गांजे से भरी कार जब्त कर चालक को गिरफ्तार कर अवैध गांजा जब्त किया। बैकरिया थानाधिकारी उत्तमसिंह मय टीम खजूर घाटी कालीबोर कोटड़ा रोड़ पर कार को रोक चालक प्रकाश पुत्र नीलकंठ पुरोहित निवासी अनोपपुरा नउवा चन्देसरा डबोक को गिरफ्तार कर इसके कब्जे से 3 किलो 140 ग्राम अवैध गांजाा जब्त किया।

राजस्थान-सरकार

कार्यालय आबकारी आयुक्त, राजस्थान

आबकारी भवन-2 गुमानियावाला, पंचवटी, उदयपुर-313001

क्रमांक-F.32(B)(After Policy 2026-27)/ex/I/2026-06481-9018219/693

दिनांक-11.02.2026

कम्पोजिट रिटेल ऑफ मदिरा दुकानों के वर्ष 2025-26 के अनुज्ञाधारियों को वर्ष 2026-27 के लिये अनुज्ञा पत्र नवीनीकरण के लिये आवेदन (विकल्प प्रस्तुत करने की नियत तिथि को बढाई जाने की सूचना

इस कार्यालय की समसंख्यक विज्ञप्ति क्रमांक 665 दिनांक 28.01.2026 के सन्दर्भ में राज्य के कम्पोजिट रिटेल ऑफ मदिरा दुकानों के वर्ष 2025-26 के समस्त अनुज्ञाधारियों को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2026-27 के समस्त अनुज्ञाधारियों को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2026-27 के लिए अनुज्ञापत्रों के नवीनीकरण के लिए पात्र एवं इच्छुक अनुज्ञाधारी अपना नवीनीकरण आवेदन (विकल्प) पत्र मय निर्धारित आवेदन शुल्क के साथ दिनांक 18.02.2026 तक संबंधित जिला आबकारी अधिकारी कार्यालय में प्रस्तुत किये जा सकेंगे। दिनांक 16.02.2026 तक नवीनीकरण आवेदन (विकल्प) प्राप्त नहीं होने पर अनुज्ञाधारी का नवीनीकरण करवाने का विकल्प समाप्त हो जावेगा।तथा दुकान/समूह (Cluster) का आवंटन ई-नीलामी/ई-निविदा द्वारा किया जाएगा।
वर्ष 2026-27 हेतु अनुज्ञापत्र नवीनीकरण से संबंधित समस्त जानकारी के लिए विभागीय वेबसाइट https://iems.rajasthan.gov.in का अवलोकन करें।
अन्य सभी शर्ते पूर्वानुसार यथावत रहेगी।

DIPR/C/____/2026 आबकारी आयुक्त, राजस्थान

जेकेलॉन अस्पताल में 500 बैड का अत्याधुनिक आई.पी.डी. टावर का निर्माण करेगी राज्य सरकार

जयपुर, अजमेर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा और जोधपुर मेडिकल कॉलेजों से संबद्ध अस्पतालों में 500 करोड़ की लागत से अत्याधुनिक विश्राम गृहों का निर्माण होगा, मरीजों के परिजनों को सुविधाएं मिलेंगी : खींवसर

जयपुर (कासं)। चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रस्तुत राज्य का वर्ष 2026-27 का बजट स्वास्थ्य सेवाओं को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के साथ ही प्रदेश के सर्वांगीण विकास का स्पष्ट रोडमैप प्रस्तुत करता है। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी द्वारा प्रस्तुत बजट में महिला, युवा, गरीब, किसान सहित सभी वर्गों के उत्थान एवं विकसित राजस्थान का दूरदर्शी विजन है। यह बजट आमजन को सुलभ, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि बजट में वंचित पात्र परिवारों को मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना का लाभ दिलाने के उद्देश्य से पंचायत स्तर पर आरोग्य शिविरों का आयोजन

चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर

करने की महत्वपूर्ण घोषणा की गई है, जिससे हर परिवार को निःशुल्क उपचार का लाभ मिल सकेगा। जयपुर स्थित जेके लोन अस्पताल में 500 बेड क्षमता का अत्याधुनिक आईपीडी टावर स्थापित होने से शिशु एवं बाल स्वास्थ्य

- **प्रदेश में 500 अतिरिक्त ड्रग डिस्ट्रीब्यूशन काउंटर की स्थापना तथा सड़क दुर्घटना, प्रसूति एवं हार्ट अटैक जैसी आपात स्थितियों में त्वरित उपचार के लिए राज सुरक्षा योजना लागू करना सराहनीय**

सेवाओं का व्यापक विस्तार होगा। प्रदेश के प्रमुख चिकित्सा महाविद्यालयों जयपुर, अजमेर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा और जोधपुर के संबद्ध अस्पतालों में 500 करोड़ रुपये की लागत से अत्याधुनिक विश्राम गृहों का निर्माण होने से मरीजों के परिजनों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी।

खींवसर ने कहा कि प्रदेश में चरणबद्ध रूप से 500 अतिरिक्त ड्रग डिस्ट्रीब्यूशन काउंटर स्थापित किए जाने की घोषणा से दवा वितरण प्रणाली अधिक पारदर्शी और सुलभ बनेगी। सड़क दुर्घटना, प्रसूति एवं हार्ट अटैक जैसी आपात स्थितियों में त्वरित उपचार सुनिश्चित करने हेतु राज सुरक्षा योजना लागू की जाएगी, जिससे आपातकालीन चिकित्सा तंत्र और अधिक प्रभावी होगा। इसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए राज ममता योजना प्रारंभ करने की घोषणा की गई है। प्रत्येक जिला मुख्यालय पर मानसिक स्वास्थ्य केयर सेल भी स्थापित किए जाएंगे। बदलती जीवनशैली एवं बढ़ती प्रतिस्पर्धा के दौर में मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह पहल अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। अस्पताल परिसरों में स्वच्छ एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए अटल आरोग्य फूड कोर्ट के लिए 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जो मरीजों और परिजनों के लिए राहतकारी प्रयास है। इसी प्रकार दुर्घटना में मृत व्यक्ति की पार्थिव देह को सम्मानपूर्वक घर तक पहुंचाने के लिए मोक्ष वाहिनी योजना शुरू करने की घोषणा संवेदनशील कदम है।

खींवसर ने कहा कि बजट में सड़क, फ्लाईओवर एवं राज्य मार्गों के विकास के साथ ही नगरीय निकायों में 7 लाख स्ट्रीट लाइट्स लगाने का प्रावधान किया गया है। युवाओं के लिए रोजगार सृजन, स्टार्टअप प्रोत्साहन एवं कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार किया गया है। साथ ही, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार भी बजट की महत्वपूर्ण विशेषता है।

विधानसभा में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी का शायराना अंदाज दिखा

-विधानसभा संवाददाता-

''कश्ती चलाने वालों ने जब हार के दी पतवार हमें,
लहर-लहर तूफान मिले और संग-संग मझधार हमें
फिर भी दिखाया है हमने और आगे भी दिखा देंगे,
इन हालात में भी आता है दरिया करना पार हमें''

जयपुर। राजस्थान की वित्त मंत्री दीया कुमारी ने इन पंक्तियों के साथ बुधवार को बजट पेश करने की शुरुआत की। इस बार बजट की अटैची का रंग भी बदला हुआ था। दीया कुमारी लाल-सफेद फागुनिया (बंधेज) साड़ी पहनकर सदन में पहुंची। उन्होंने फाल्गुन माह और राजस्थानी परंपरा से जुड़ाव को दिखाया।

दीया कुमारी ने कवि सोहनलाल द्विवेदी की निरंतर कर्म कर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने की पंक्तियों को पढ़ा उन्होंने कहा कि ''चलो नई मिसाल हो, जलो नई मिसाल हो, बढ़ो नया कमाल हो, झुको नहीं-रूको नहीं, बढ़ेचलो, बढ़े चलो।'' दीया कुमारी ने इस कविता के माध्यम से कहा कि सरकार समर्पण भाव के साथ काम करते हुए प्रदेश की अर्थव्यवस्था को आगे लेकर जाएगी।

बजट पेश के दौरान दिया कुमारी ने कहा ''प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्।'' अर्थात राजा का सुख प्रजा के सुख में है और हित भी प्रजा के हित में है। दीया कुमारी ने कहा कि कम भोज, कम बोझ अधिक भरोसा और तेज फैसला, इसी सिद्धांत पर हमारी डबल इंजन की सरकार काम कर रही है। बजट भाषण के अंत में दिया कुमारी ने फिर शायरान अंदाज दिखाया।

''राह में मुश्किल होगी हजार, तुम दो कदम बढाओ तो सही
हो जाएगा हर सपना साकार, तुम चलो तो सही।
मुश्किल है पर इतना भी नहीं, कि तू कर ना सके
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं, कि तु पा ना सके
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।''

विधानसभा में गूंजे ठहाके

दीया कुमारी ने हंसते हुए कहा कि, ये सभी के लिए, सबको सुनना चाहिए। मानसिक रोगों की शीघ्र पहचान पर परामर्श, उपचार पुनर्वास एवं रेफरल सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए जिला मुख्यालयों पर मेंटल हैल्थकेयर सेल की स्थापना की जाएगी। यह सुनते ही विधानसभा में ठहाके लगने लगे।

किरोडीलाल ने पर्ची भेजी

बजट भाषण के दौरान मंत्री किरोड़ीलाल ने कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा को पर्ची भेजी। पर्ची पढ़कर डोटासरा मुस्कुराए और पर्ची अपनी जेब में रख ली। इसी तरह से एक पर्ची सीएम भजनलाल शर्मा तक भी पहुंचीं। वे भी पर्ची पढ़कर मुस्कुरा गए। बजट के बाद सबसे ज्यादा चर्चा इसी पर्ची की रही।

''भाषण नहीं, बजट पढ़िए।''

बजट भाषण के दौरान वित्त मंत्री दीया कुमारी ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के बिजनेस रिफॉर्म एक्शन प्लान के तहत राजस्थान टॉप अचीवर्स रहा है। यह हम सब के लिए गर्व की बात है, बजाओ आप ताली। विपक्ष की ओर से ताली नहीं बजाने पर वित्त मंत्री ने कहा कि यह अचीवमेंट राजस्थान का है, केवल भारतीय जनता पार्टी का नहीं है। दीया ने कहा कि डबल इंजन की सरकार लगातार इस दिशा में काम रही है। इस पर डोटासरा ने कहा कि ''भाषण नहीं, बजट पढ़िए।''

'अपनी तरह से जगा हुआ हूं'

बजट भाषण शुरू होने के करीब 14 मिनट बाद कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा सदन में पहुंचे। अचानक डोटासरा ने उनकी तरफ इशारा करके कहा कि कृषि मंत्री सो गए हैं। स्पीकर ने कहा कि आप बैठ जाइए, आपने उन्हें जगा दिया। इस पर किरोड़ी ने कहा कि मैं अपनी तरह से जगा हुआ हूं।

स्कूली बजट पर हंगामा

उपमुख्यमंत्री व वित्त मंत्री दिया कुमारी ने बजट भाषण में कहा कि पिछली सरकार ने स्कूल बिल्डिंग की मरम्मत की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जिससे कई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हुईं। मैं स्कूल बिल्डिंग की मरम्मत के लिए 550 करोड़ रुपए की घोषणा करती हूं। इस पर डोटासरा ने कहा कि जर्जर स्कूल और क्लासरूम की मरम्मत के लिए 20 हजार करोड़ की आवश्यकता है, आप क्या दे रहे हो, आपको शर्म आनी चाहिए। इस पर सदन में हंगामा हो गया, विपक्षी विधायक शेम-शेम के नारे लगाने लगे।

अशोक गहलोत पर तंज कसा

दीया कुमारी ने बजट पेश करते हुए कहा कि ''सरकार स्कूली बच्चों को खेल सामग्री और जादुई पिटारा देगी। इस पर 323 करोड़ खर्च होंगे। दीया कुमारी ने पूर्व सीएम अशोक गहलोत पर तंज कसते हुए कहा कि ''हमारा जादुई पिटारा पहले वालों की तरह नहीं है, उन्होंने कहा था कि आप मांगते-मांगते थक जाओगे, मैं देते-देते नहीं थकूंगा। हमारा जादुई पिटारा बच्चों के विकास के लिए है।''

बजट प्रदेश की जनता पर डबल इंजन सरकार का दोहरा कुठाराघात : पायलट

सचिन पायलट

- **सचिन पायलट ने कहा कि ''पहले केन्द्रीय बजट में राजस्थान की अनदेखी हुई, अब राज्य सरकार ने भी लोगों की उम्मीद पर पानी फेर दिया है।''**
- **पायलट ने कहा कि ''हाईकोट में सरकार ने हफलनामे के माध्यम से स्वीकार किया था कि प्रदेश की स्कूलों की मरम्मत के लिए 21 हजार करोड़ रुपए की जरूरत है, लेकिन बजट में मात्र 500 करोड़ रु. का प्रावधान दिखाता है कि सरकार को विद्यार्थियों की सुरक्षा की चिंता नहीं है।''**

जयपुर (कासं)। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट ने राजस्थान की भाजपा सरकार द्वारा बुधवार को विधानसभा में प्रस्तुत बजट को निराशाजनक बताया। पायलट ने कहा कि पहले केन्द्रीय बजट में भाजपा सरकार द्वारा राजस्थान की अनदेखी की गई और अब राज्य सरकार ने अपने बजट के माध्यम से किसानों, युवाओं, महिलाओं, मध्यम वर्ग की आशाओं पर पानी फेर दिया है।

पायलट ने कहा कि झालावाड़ की स्कूल में हुए हादसे पर संज्ञान लेते हुए राजस्थान हाईकोर्ट ने सरकार को कड़ी फटकार लगाई थी और सरकार हफलनामे के माध्यम से यह स्वीकार भी किया था कि प्रदेश की स्कूलों की मरम्मत के लिए 21 हजार करोड़ रूपयों की आवश्यकता है। बावजूद इसके राज्य बजट में मात्र 500 करोड़ रूपये का प्रावधान किया जाना यह बताता है कि राज्य सरकार को विद्यार्थियों की सुरक्षा की कोई चिंता नहीं है। इस बजट के माध्यम से सरकार ने बच्चों के भविष्य को अंधेरे में ढकेलने का काम किया है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के वित्तीय कुप्रबन्धन के चलते राजस्व घाटा बढ़ा है, सरकार को कर्ज लेना पडेगा, जिससे महंगाई बढेगी। सरकार ने शब्दों के मायाजाल से अपनी 2 वर्षो की नाकामी को छुपाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि सरकार के गत् वर्षो के बजट की भांति यह बजट भी धरातल पर उतरने वाला नहीं है।

पायलट ने कहा कि हाई टेक सिटी, आईटी सिटी और एयरो सिटी जैसी बड़ी घोषणाएं धरातल के बजाय केवल कागजों तक सीमित रह गई हैं। सरकार अपने पिछले बजट्स की उपलब्धियों पर पूरी तरह मौन साधे हुए है। प्रदेश में बेरोजगारी की भयावह स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार का 4 लाख नौकरियां देने का वादा पूरा नहीं होना और निजी क्षेत्र के रोजगार आंकड़ों का सार्वजनिक न करना सरकार की विफलता को दर्शाता है। पायलट ने कहा कि नहरी क्षेत्रों में फार्म पौंड की सब्सिडी दो साल से बंद पडी है। सामाजिक सुरक्षा पेंशन में बढ़ोतरी न करना प्रदेश की गरीब जनता के साथ सीधा अन्याय है। उन्होंने कहा कि टेक्सटाइल उद्योग पर अमेरिकी टैरिफ के संभावित संकट और सोलर पार्कों के नाम पर राज्यवृक्ष खेजड़ी के संरक्षण को लेकर सरकार के पास कोई ठोस नीति नहीं है।

'दो साल में 20 प्रतिशत घोषणाएं पूरी, 30 फीसदी शुरू भी नहीं हुई'

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने भजनलाल सरकार के तीसरे बजट को पूरी तरह नीरस और निराशाजनक करार देते हुए कहा कि सरकार घोषणाओं तक सीमित है, जमीनी क्रियान्वयन बेहद कमजोर है। प्रेस वार्ता में उन्होंने बताया कि पिछले दो वर्षों में सरकार ने 2718 बजट घोषणाएं कीं, जिनमें से केवल 20 प्रतिशत ही पूरी हो पाई हैं। 30 प्रतिशत घोषणाएं अब तक शुरू नहीं हुईं, जबकि 40 प्रतिशत पर काम चल रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार 2047 के सपने दिखा रही है, जबकि वर्तमान समस्याओं की सुध लेने को तैयार नहीं है। रिफाइनरी शुरू करने की पूर्व घोषणा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि तय समयसीमा बीत जाने के बाद भी काम आगे नहीं बढ़ा।

बजट में मेंटल हेल्थ चेकअप सेंटर की घोषणा पर जूली ने कटाक्ष करते हुए कहा कि सरकार को पहले अपना मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण कराना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकारी नीतियों से कर्मचारी और आमजन परेशान हैं। प्रदेश में रोज हादसे हो रहे हैं, जो सिस्टम की लापरवाही और खराब सड़कों का परिणाम हैं। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए की गई घोषणाओं को भी उन्होंने 'जादू के पिटारे' जैसा बताया। जूली ने 4.3

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली

ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य पर प्रश्न उठाते हुए कहा कि सरकार बताए कि ये आंकड़े किस आधार पर तय किए गए हैं। सरकार ने दो वर्षों में ही प्रदेश को भारी कर्ज में डुबो दिया है। 1000 इलेक्ट्रिक बसों की खरीद, विभिन्न परियोजनाओं और निवेश के दावों पर भी उन्होंने स्पष्ट जवाब मांगा। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने भी बजट को इतिहास का सबसे नीरस बजट बताया। उन्होंने कहा कि स्कूल मरम्मत के लिए 21 हजार करोड़ की आवश्यकता के मुकाबले मात्र 550 करोड़ रुपये रखे गए हैं। सड़कों और अतिवृष्टि से क्षतिग्रस्त भवनों के लिए पूर्व में आवंटित राशि खर्च नहीं होने का आरोप लगाया। पेपर लीक मामले में सरकार की कमजोर पैरवी से आरोपी के छूटने का भी जिक्र किया।

'बजट से हरवर्ग को मिलेगा लाभ' कुसुम यादव

जयपुर। निवर्तमान महापौर कुसुम यादव ने बताया कि यह बजट विकसित राजस्थान 2047 की आधारशिला रखते हुए उसे मूर्तरूप प्रदान करने वाली एक व्यापक कार्ययोजना है। अंत्योदय के संकल्प के साथ यह बजट समाज के हर स्तंभ युवाओं के सपने, किसानों की खुशहाली, महिलाओं के सम्मान और गरीबों के कल्याण को नई ऊंचाइयां देने के लिए समर्पित है।बजट में आधारभूत ढांचे के विस्तार, ग्रामीण विकास, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान दिया गया है, जो आने वाले वर्षों में प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा। महिला सशक्तिकरण पर ध्यान देते हुए लखपति दीदी योजना के तहत पात्र महिलाओं को अब डेढ़ लाख रुपये तक का ऋण देने की बात कही है।

पांच साल में 100 इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर की घोषणा की थी, परंतु 2 साल में मात्र एक बना

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राजस्थान सरकार के वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट में युवाओं के कौशल विकास के लिए कोई नई घोषणा नहीं किए जाने की चर्चाएं विधानसभा के गलियारों में रही। भाजपा ने राजस्थान में चुनाव लड़ने पूर्व अपने मैनिफेस्टो में घोषण की थी कि, हमारी सरकार बनने के बाद 5 साल में 100 इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना की जाएगी। परंतु राज्य सरकार के बीते 2 वर्ष के कार्यकाल में मात्र एक इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर बनकर तैयार हुआ है। जबकि गत 2 बजट में सरकार ने 19 केन्द्रों की स्थापना की घोषणा की थी।

ज्ञात रहे कि इन ''इंड्रस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर्स'' (औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों) में महिलाओं समेत ऐसे युवाओं को सरकारी इंस्टीट्यूट के माध्यम से प्रशिक्षण देना था। ताकि इन लोगों को रोज़गार प्राप्त हो सके। उल्लेखनीय है कि हाल ही में

- **राजस्थान में युवाओं के कौशल विकास के लिए कोई नई घोषणा नहीं की गई बजट में**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी छात्रों के साथ हुई चर्चा में कहा था कि अगर वह प्रधानमंत्री नहीं होते तो वह कौशल विकास मंत्रालय का पदभार संभालते। प्रधानमंत्री का यह कथन दर्शाता है कि वे युवाओं और महिलाओं के रोजगार व कौशल विकास को लेकर गंभीर है, और शायद इसी वजह से राजस्थान में भाजपा ने भी 100 इण्डस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर (आई.टी.आई.) के निर्माण की घोषणा की थी। सरकार बनने के बाद बीते 2 वर्ष में 19 आईटीआई स्थापना की घोषणा भी गत बजटों में हुई। परंतु बीते 2 वर्ष के कार्यकाल में अभी तक सिर्फ 1 आई.टी.आई. का निर्माण कार्य ही पूरा हो सका है। शेष 18 में से कुछ जगहों पर तो अभी भूमि आवंटन की प्रक्रिया भी शुरू नहीं हुई है।

बजट आंकड़ों के अनुसार वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट में सरकार ने 10 आई.टी.आई. केन्द्र खोलने की घोषणा की थी। राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड द्वारा जिन 10 आई.टी.आई. का निर्माण किया जाना था उनमें एक-एक केन्द्र का निर्माण डीगाना-नागौर, बारां, दौसा, जोधपुर, पाली, बांसवाड़ा, सलूम्बर में निर्माण होना था और दो केन्द्रों का निर्माण जयपुर में किया जाना था। परन्तु अभी तक नागौर, जयपुर और बांसवाडा में केन्द्र के निर्माण के लिए भूमि आवंटन भी नहीं हुआ है। वहीं बजट घोषणा 25-26 में 9 अन्य आई.टी.आई. निर्माण करने की घोषणा की थी, जिनमें से केवल एक का ही निर्माण हुआ है जो विद्याधर नगर जयपुर में स्थित है।

पतंजलि शहद पर शोध प्रकाशित

हरिद्वार। पतंजलि अपने प्रत्येक उत्पाद में गुणवत्ता, शुद्धता और उपभोक्ता सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। इस प्रतिबद्धता को एक और सशक्त वैज्ञानिक मान्यता उस समय मिली, जब पतंजलि शहद पर किया गया विस्तृत शोध विश्वप्रसिद्ध ''एल्सवियर'' प्रकाशन के प्रतिष्ठित रिसर्च जर्नल ''एप्लाइड फूड रिसर्च'' में प्रकाशित हुआ। इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि पतंजलि जो कहता है, वही करता है और यह एक शाश्वत सत्य है। पतंजलि का उद्देश्य है इस देश को मिलावट के जहर से बचाना और पतंजलि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सदा ही समर्पित है। उन्होंने कहा कि भारतीय खाद्य उत्पादों को लेकर लंबे समय से वैश्विक मंच पर संदेह की दृष्टि से देखा जाता रहा है, किंतु अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित इस शोध द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि भारत में भी विश्वस्तरीय अनुसंधान संभव है। यह उपलब्धि न केवल पतंजलि के लिए, बल्कि समूचे भारतीय उद्योग के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने बताया कि पतंजलि शहद में किसी प्रकार की बाहरी शर्करा, सिंथेटिक सिरप या अवांछित रासायनिक अवशेष नहीं पाए गए हैं। पतंजलि के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अनुराग वार्ष्णेय ने कहा कि इस शोध में, पतंजलि शहद के 25 विभिन्न बैचों का उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से व्यापक परीक्षण किया गया।

'कैडर घोषणा नहीं होने से सहकारी पैक्स कार्मिक निराश'

जयपुर। ऑल राजस्थान को-ऑपरेटिव बैंक एम्प्लाइज यूनियन ऑफिसर्स एसोसिएशन के प्रान्तीय महासचिव, सहकारी साख समितियां एम्प्लाइज यूनियन के प्रान्तीय अध्यक्ष सहकार नेता सूरज भान सिंह आमेरा ने राज्य सरकार के बजट प्रावधान घोषणाओं को उद्योग कृषि, पशुपालन, ग्रामीण विकास ,तकनीकी शिक्षा को समर्पित प्रगतिशील बजट बताया है।

आमेरा ने कृषि बजट में 7.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी, प्रदेश के 35लाख किसानों को 25000 करोड रुपए के ब्याजमुक्त शून्य ब्याज दर पर फसली ऋण वितरण, फसली ऋण पर 800 करोड रुपए का ब्याज अनुदान , 590 करोड रुपए के अकृषि ऋण पर 5 प्रतिशत ब्याज अनुदान की घोषणा स्वागत योग्य है। आमेरा ने ग्राम सेवा सहकारी समितियों के व्यवस्थापक कार्मिक के वेतन भुगतान सुरक्षा के लिए बहुप्रतीक्षित कैडर बनाने की घोषणा नहीं होने से प्रदेश के पैक्स कर्मचारियों को भारी असंतोष व निराशा व्याप्त हुई है।

सार-समाचार

विकासोन्मुखी है बजट : गजेन्द्र सिंह

जयपुर/जोधपुर। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राजस्थान बजट 2026-27 को दूरदर्शी और विकासोन्मुखी बताते हुए कहा कि यह आमजन के जीवन स्तर में सुधार का मार्ग प्रशस्त करेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत' विजन के अनुरूप मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रस्तुत यह बजट प्रदेश को नए विकास सोपानों तक ले जाएगा। शेखावत ने पर्यटन क्षेत्र में 'थार सांस्कृतिक सर्किट', जैसलमेर में विशेष पर्यटन क्षेत्र, धार्मिक स्थलों पर मॉडल सड़कें और शेखावाटी की हवेलियों के संरक्षण जैसी घोषणाओं को ऐतिहासिक बताया। जोधपुर-पाली-मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र के विकास, एआई आधारित ट्रैफिक सिस्टम और बुनियादी ढांचे के विस्तार को उन्होंने क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने युवाओं को 10 लाख रुपये तक ब्याज मुक्त ऋण, लखपति दीदी योजना की सीमा बढ़ाने, किसान हितैषी प्रावधानों और यमुना जल परियोजना को गेम-चेंजर बताते हुए विश्वास जताया कि यह बजट विकसित राजस्थान के लक्ष्य को मजबूती देगा।

विकसित राजस्थान का विजन : चतुर्वेदी

जयपुर। राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी ने राजस्थान बजट 2026-27 को समावेशी और दूरदर्शी बताया। उन्होंने कहा कि बजट मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की भावना पर आधारित है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप विकसित राजस्थान 2047 की दिशा में गति देगा। चतुर्वेदी ने बताया कि बजट गरीब, युवा, किसान, नारी, मजदूर और अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को ध्यान में रखकर बनाया गया है। आधारभूत ढांचा, उद्योग विस्तार, कृषि व पशुपालन सशक्तीकरण और निवेश प्रोत्साहन से रोजगार सृजन को बल मिलेगा। बजट के तहत वर्ष 2028-29 तक राज्य की अर्थव्यवस्था को 350 बिलियन डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। युवाओं के लिए नई भर्तियां, कौशल विकास और स्टार्टअप प्रोत्साहन, महिलाओं के सशक्तिकरण और शिक्षा क्षेत्र में सुधार के प्रावधान भी शामिल हैं। ग्रीन बजट के माध्यम से सौर, पवन और जल ऊर्जा पर विशेष जोर दिया गया है, जिससे राजस्थान को ग्रीन एनर्जी हब बनाने की दिशा में कदम बढ़ाया जाएगा। अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि यह बजट प्रदेशवासियों की खुशहाली सुनिश्चित करते हुए आत्मनिर्भर एवं विकसित राजस्थान के संकल्प को साकार करने में मील का पत्थर साबित होगा।

'उद्योग, कृषि, शिक्षा व स्वास्थ्य पर फोकस'

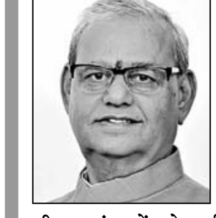

जयपुर। पूर्व सांसद रामचरण बोहरा ने राजस्थान बजट 2026-27 पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बजट विकास और जनकल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में वित्त मंत्री दिया कुमारी ने सर्वहितैषी, सर्वस्पर्शी एवं सर्वसमावेशी बजट प्रस्तुत कर बजट के माध्यम से किसान, युवा, महिला और मध्यम वर्ग सभी की आकांक्षाओं को पूर्ण किया है। उद्योग, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत संरचना पर विशेष जोर देकर प्रदेश को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने की दिशा में मजबूत कदम उठाया गया है।

'व्यापारियों व उद्योगों के लिए नई दिशा'

जयपुर। फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एण्ड इंडस्ट्री (फोर्टी) के कार्यकारी अध्यक्ष तथा भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. अरूण अग्रवाल ने राजस्थान सरकार के बजट को व्यापारियों व उद्योगों को नई दिशा देने वाला बताया। उन्होंने कहा कि वित्त मंत्री एवं उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बजट में व्यापारियों के लिए एकल खिड़की प्रणाली, व्यापार प्रोत्साहन नीति, और लॉजिस्टिक्स पार्क जैसी महत्वपूर्ण घोषणाएँ की गई हैं। इनसे व्यापार करना आसान होगा और व्यापारियों को नए अवसर प्राप्त होंगे। बजट में उद्योगों के लिए फ्लैटेड फैक्ट्री व्यवस्था, औद्योगिक क्षेत्र, और विशेष औद्योगिक पार्क जैसी घोषणाएँ की गई हैं। इन घोषणाओं से उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा और नए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। पर्यटन स्थलों के विकास व प्रचार, स्थानीय कला-संस्कृति को बढ़ावा देने, पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन, किसानों के लिए नई तकनीकों व संसाधनों के प्रावधान सराहनीय है।

'विकासोन्मुखी है राजस्थान बजट'

जयपुर। पूर्व उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और वित्त मंत्री दिया कुमारी को राजस्थान बजट 2026-27 प्रस्तुत करने पर शुभकामनाएं देते हुए इसे ऐतिहासिक और विकासोन्मुखी बजट बताया। उन्होंने कहा कि करीब 21.52 लाख करोड़ रुपये के बजट आकार और 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक के प्रभावी पूंजीगत व्यय का प्रावधान राज्य की सुदृढ़ अर्थव्यवस्था का संकेत है। किसानों के लिए 1.19 लाख करोड़ रुपये का कृषि बजट, ब्याज मुक्त कृषि ऋण, 50 हजार सोलर पंप, सिंचाई विस्तार और आधुनिक कृषि योजनाएं आय बढ़ाने में सहायक होंगी। उन्होंने बताया कि ग्रीन बजट के तहत 33 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान, 10 करोड़ पौधारोपण और अरावली संरक्षण जैसी पहल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अहम कदम हैं।

'अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने वाला बजट'

जयपुर। कराधान एवं कॉर्पोरेट विशेषज्ञ सीए अंशुल चित्तौड़ा ने उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी द्वारा प्रस्तुत 2026-27 के बजट को राजस्थान की अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने वाला दूरदर्शी दस्तावेज बताया।

चित्तौड़ा का कहना है कि बड़े पैमाने पर नई सड़कों का निर्माण न केवल कनेक्टिविटी सुधारेगा, बल्कि निजी निवेश को भी आकर्षित करेगा। युवाओं के लिए लाखों नौकरियों की घोषणा और मेधावी छात्रों को डिजिटल शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता देना मानव संसाधन में किया गया एक बड़ा निवेश है। ऋण दस्तावेजों पर पंजीकरण दर और स्टाम्प ड्यूटी में कमी से रियल एस्टेट क्षेत्र में तरलता बढ़ेगी। बकाया करों के लिए एमनेस्टी योजना लाना राजस्व वसूली को सरल बनायेगा। अन्य राज्यों के वाहनों पर टैक्स में छूट से उपभोक्ताओं को सीधी राहत मिलेगी।

सर्वांगीण विकास का बजट : गोतोड़

जयपुर। भाजपा नेता मनोज सिंह गोतोड़ राजस्थान बजट 2026-27 पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था 21 लाख करोड़ रुपये से अधिक पहुंचने और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि का अनुमान सरकार की मजबूत वित्तीय दिशा को दर्शाता है। युवाओं के लिए राजस्थान टेस्टिंग एजेंसी की स्थापना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत 10 लाख तक ब्याज मुक्त ऋण, 30 हजार युवाओं को लाभ और 30 करोड़ रुपये से एआई टेक्नो हब की स्थापना जैसे प्रावधान महत्वपूर्ण हैं। महिलाओं के लिए लखपति दीदी योजना की ऋण सीमा बढ़ाकर 1.5 लाख रुपये करना, रूरल वूमेन बीपीओ और राजसखी स्टोर खोलने की घोषणा को उन्होंने सशक्त कदम बताया। उन्होंने विश्वास जताया कि यह बजट विकसित राजस्थान 2047 के संकल्प को मजबूती देगा।

'उद्योग-व्यापार को गति देगा बजट'

जयपुर (कासं)। राजस्थान सीए सोसाइटी के अध्यक्ष सीए सुधीर भंसाली ने राजस्थान बजट 2026-27 को उद्योग व व्यापार को गति देने वाला बताया। उन्होंने कहा कि एमएसएमई को ऋण-सुविधा के लिए 15 करोड़ की मार्जिन मनी उपलब्ध कराने का प्रावधान-जिससे नई इकाइयों की स्थापना और मौजूदा इकाइयों के विस्तार में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि उद्यमियों को पूंजी की कमी के कारण अवसर न छूटें, और वित्तीय सहायता गेम-चेंजर साबित हो। साथ ही बड़े औद्योगिक क्षेत्र के लिए 3600 हेक्टेयर भूमि का विकास और अगले दो वर्षों में 600 करोड़ खर्च का प्रस्ताव तथा औद्योगिक क्षेत्र के विकास के लिए 400 करोड़ का प्रावधान अहम है। डिजिटल और सेवाओं का सरलीकरण और ई-मित्र की 100 महत्वपूर्ण सेवाएं वाट्सएप प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराने से राहत मिलेगी।

'पर्यटन ढांचे को मिलेगी मजबूती'

जयपुर। इंडियन हैरिटेज होटल्स एसोसिएशन के सेक्रेटरी जनरल, गज सिंह अलसीसर ने कहा कि राजस्थान के बजट में शेखावाटी क्षेत्र में धरोहर संरक्षण, जैसलमेर में विशेष पर्यटन क्षेत्र का विकास, थार सांस्कृतिक सर्किट तथा भरतपुर में ब्रज कन्वेंशन सेंटर की स्थापना से राज्य के पर्यटन ढांचे को नई मजबूती मिलेगी। झुंझुनूं, चूरू और सीकर की 660 से अधिक हवेलियों के संरक्षण, फेसाड सुधार, हेरिटेज स्ट्रीट फर्नीचर के विकास के लिए आगामी दो वर्षों में 200 करोड़ रुपये का व्यय ऐतिहासिक विरासत को नई पहचान देगा।

वहीं, हवेलियों को पर्यटन इकाई में बदलने पर वित्तीय सहायता से स्थानीय लोगों को भी लाभ होगा। शेखावाटी की हवेलियों को यूनेस्को विश्व विरासत सूची में शामिल कराने का प्रयास प्रदेश की अंतरराष्ट्रीय पहचान बढ़ाएगा।

Celebrating Hug Day: The Power of a Simple Embrace

Hug Day, celebrated on February 12 every year, is a heartfelt reminder of the warmth and comfort a simple embrace can bring. Beyond just a gesture of affection, hugs are known to reduce stress, release feel-good hormones, and strengthen emotional bonds between friends, family, and partners. Whether it's a quick squeeze to say hello or a long embrace to offer support, Hug Day encourages people to express love and care without words. In a world that often feels rushed, taking a moment to hug someone can create connection, happiness, and a sense of belonging.

#ROOTS

Dad, Berserk, Pajama...

Old Words We Still Use Today, and Where They Came From

Many of the words we use in everyday conversation have ancient roots, some dating back hundreds or even thousands of years. Words like pajama, berserk, salary, alcohol, and even dad may seem simple or modern, but each carries a long and surprising history across different cultures and languages.

Let's take a closer look at these five everyday words and explore their origins, evolution, and meanings.

Pajama (Also spelled Pyjama)

The term was adopted into English during the British colonial period in India in the 17th and 18th centuries. Initially, pajamas were loose-fitting trousers tied at the waist, worn by men in South and West Asia for sleeping or lounging.

The British found them comfortable and began wearing them as sleepwear, eventually bringing the word and concept back to the West.

Berserk

A berserkr (or berserker) was a fierce Norse warrior who fought in a trance-like fury. The term likely referred to warriors who wore bear-skin cloaks and entered battle with uncontrollable rage.

From Norse Myth to Modern Language:

These warriors became legendary in Viking mythology and sagas. Over time, the word evolved in English to mean someone who is wild, uncontrollably angry, or out of control.

Salary

In ancient Rome, salt was a valuable commodity used for preserving food and was sometimes part of a Roman soldier's payment. The term salarium originally referred to money given to soldiers to buy salt. Over centuries, salarium broadened to mean any form of payment for work, and that's how we get the modern word salary.

Alcohol

In medieval chemistry and alchemy, al-kuhul came to mean any purified or distilled substance. Over time, European alchemists adopted the word to refer to distilled spirits, and it eventually narrowed to mean ethanol, the intoxicating ingredient in drinks.

Dad

In English, dad began appearing in written texts around the 16th century, though the spoken use likely goes much further back.

Final Thoughts

Words are living artifacts of history. As we've seen, terms we use casually, like pajama, berserk, salary, alcohol, and dad, have ancient, global origins. They've crossed borders, shifted meanings, and adapted to new cultures and times.

Next time you slip into your pajamas or call your dad, you're unknowingly connecting to centuries of linguistic evolution.

So This Is What A European Face Is Doing On A Temple Tower

Bust of William Lambton at St. Thomas Mount, Chennai.

The first baseline of the survey was between Marina Beach and the Madras race course (roughly 12 kms away) and the observation post was St. Thomas Mount in Chennai. The actual work was deceptively simple. The distance was measured with a blistered steel chain (which was less prone to thermal expansion) exactly 100 feet long at 62 degrees F. They carried a thermometer with them, so that they reworked the length if the temperature was different (the correction was +/- 0.00725 inches for every degree Fahrenheit variation). The angles were calculated using a device called theodolite, it weighed over half a tonne and was carried by 12 men.

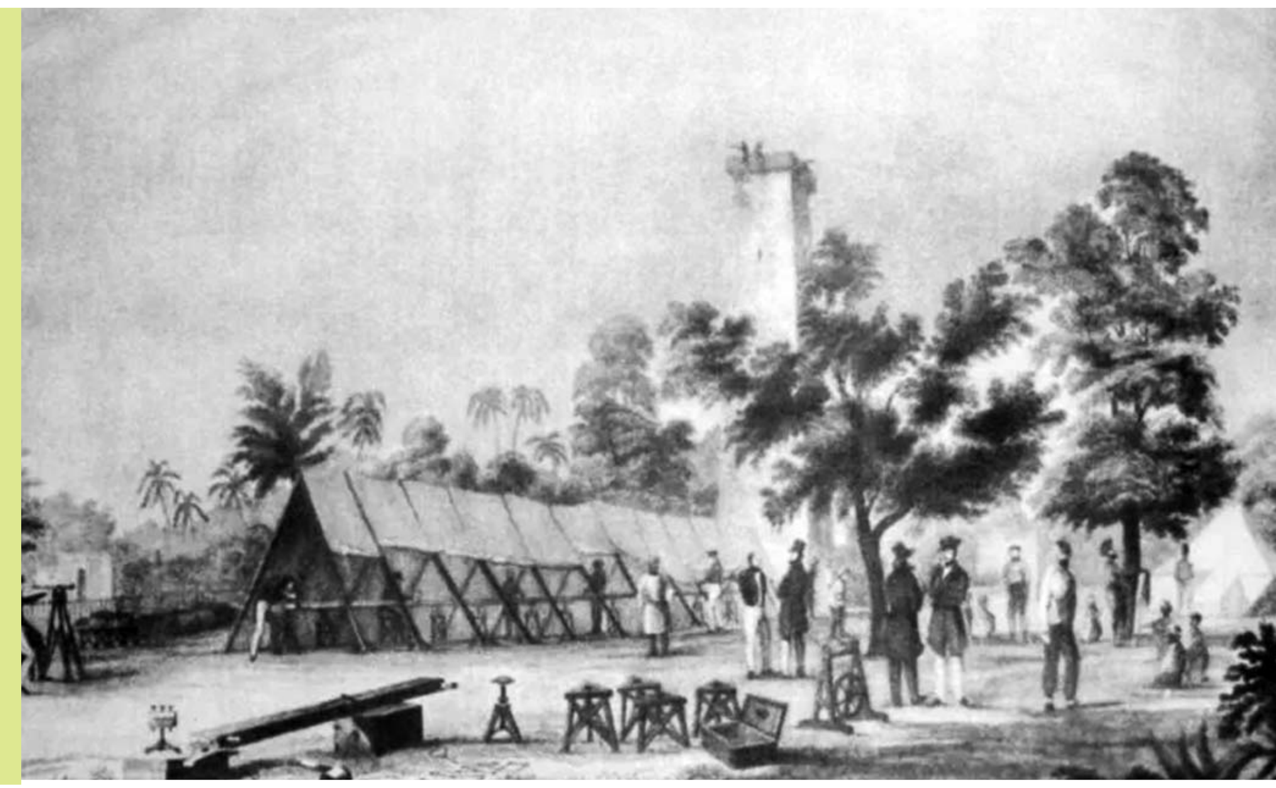

A sketch of the Calcutta baseline by James Prinsep.

● Kshema Jatuhkarna

A certain panel depicting a very European-looking face at the Brihadeeswara Temple in Thanjavur has puzzled devotees for years. Now, many historians believe the sculpture is of the extraordinary cartographer and soldier Lt. Col. William Lambton.

The Great Trigonometrical Survey of India was the largest measurement of the Earth's surface ever attempted. Apart from mapping the country, the project measured the height of Mount Everest, the tallest peak in the world, and even corroborated Newton's theory about the shape of the Earth. This is the story of the man who led this massive project, Col. William Lambton.

No one knows when exactly Lambton was born; our best guess is 1753. Young Lambton had a passion for science, especially mathematics and astronomy. Once, he damaged one of his eyes trying to observe a solar eclipse with inadequate protection!

When he grew up, Lambton started working as a surveyor for the British army in America. He was taken prisoner in the Battle of Yorktown (1781) but was released after the American War of Independence. In 1796, he was posted to India, where he took part in many campaigns. It was during the Fourth Anglo-Mysore War that his navigational skills came to the fore. The most celebrated case was when General Baird led the troops on a night manoeuvre: without realising it, he began leading them towards enemy lines. Lambton, navigating by the stars, corrected the general, and prevented slaughter by enemy cannon.

After the fall of Mysore, British India had become a large colony. Lambton proposed a survey to map this territory accurately. There was administrative, security and commercial justification for Lambton's idea, because maps of those days were very approximate. There were some reservations in the beginning, some of the higher authorities were not convinced about the project's significance. Ultimately, Maj. Gen Arthur Wellesley (later the Duke of Wellington) and some other influential leaders backed Lambton, and that was how Lambton began the Great Trigonometrical Survey of India in 1802.

By this time, trigonometry (Greek for 'triangle measurement') was a mature science. Lambton used a trigonometric method called triangulation. Its principle was: if you know the distance between two points in a line (the baseline), you can calculate the distance to a third point without actually measuring it; all you need to know is the angles between the two baseline points and the third point. These three points would form a triangle and a trigonometric formula would do the trick! After that, you kept adding adjacent triangles till you measured the whole land.

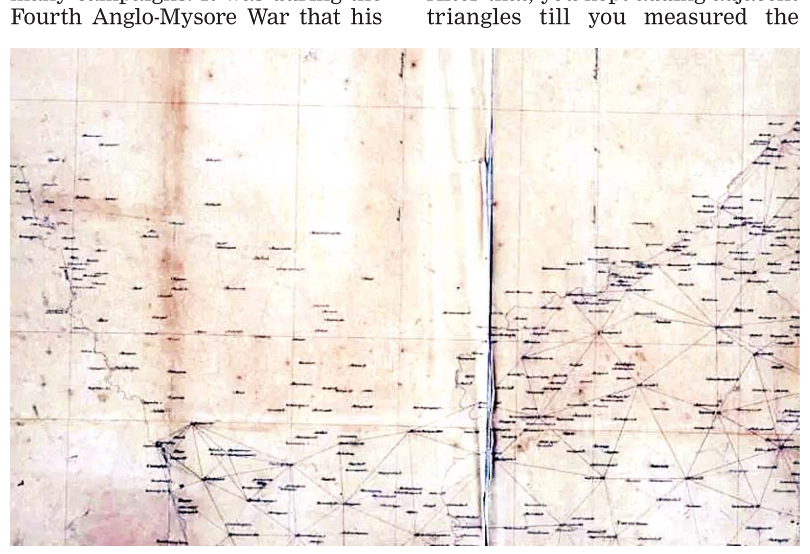

A trigonometric map.

#BRIHADEESHWARA

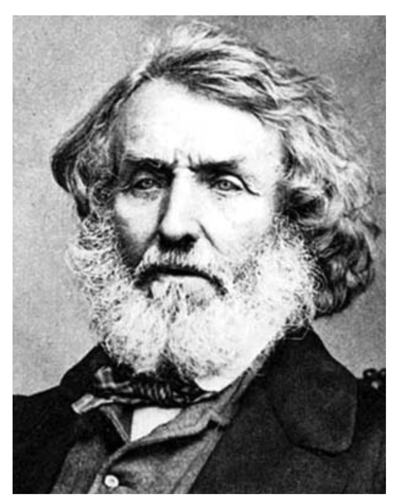

George Everest.

The Brihadeeswara Temple in Thanjavur.

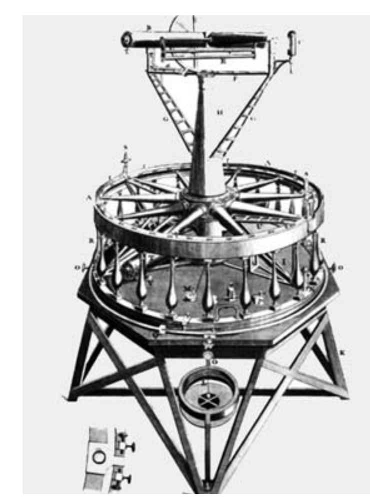

Diagram of a theodolite.

The first baseline of the survey was between Marina Beach and the Madras race course (roughly 12 kms away) and the observation post was St. Thomas Mount in Chennai. The actual work was deceptively simple. The distance was measured with a blistered steel chain (which was less prone to thermal expansion) exactly 100 feet long at 62 degrees F. They carried a thermometer with them, so that they reworked the length if the temperature was different (the correction was +/- 0.00725 inches for every degree Fahrenheit variation). The angles were calculated using a device called theodolite, it weighed over half a tonne and was carried by 12 men.

And he used another instrument called the zenith sector which pinpointed the location with reference to the stars. Because the Earth is not a flat plane, they had to make many daily adjustments in the readings to compensate for this; these were factors like the curvature of the earth, its non-spherical nature, altitude and its effect on gravity (they used pendulums and plumblines), refraction errors, temperature variations and so on. It was a laboriously slow process for the survey party of about 150 men. Accuracy, not speed, was the focus.

The survey team crossed rivers, mountains, and jungles, braving rain, wild animals, thieves and disease, across the peninsula. Four years later, they arrived at Mangalore, on the west coast. Lambton's map proved that Mangalore was closer to Madras by a whopping 10% as compared to the previous official figure! The East India Company was greatly impressed. They now wanted India to be mapped from Kanyakumari to Banog in the Himalayan foothills! It was much longer than the five-year project that they had originally planned for. Lambton immediately began the southern phase from Kanyakumari to Nagpur. It was then that the survey team reached Thanjavur. The team needed a high point for the survey and got permission to perch on top of the Brihadeeswara temple gopuram (tower). At 65 metres, it was one of the tallest structures in India then.

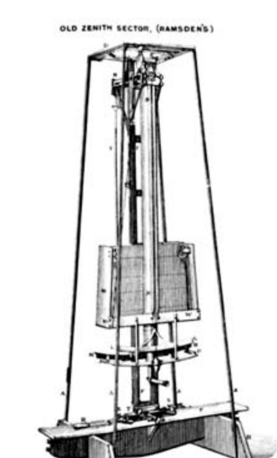

Illustration of a zenith sector.

They hauled the massive theodolite up the tower. Unfortunately, a mishap occurred, they accidentally dropped the theodolite from the gopuram while setting it up. That was a big setback, but Lambton salvaged it carefully. However, the theodolite had also chipped off a part of the bas-relief on the tower. Now, this was a holy temple and Lambton was obliged to repair it immediately. Apparently, they affixed a new image, a modern Lambton look-alike. There is no clear evidence on how it was executed. Perhaps, they got away with it because the then Thanjavur king, Serfoji II, was a British ally and a progressive sponsor of scientific knowledge.

Not all kings were friendly though. Lambton had to cross several other Indian princely states in his route during the survey. Some of them panicked when they saw the military-looking team entering their borders. (At its peak, the survey team had nearly 700 members!) Only after they patiently explained the project did the kings support the scientific exercise.

Once, the French navy intercepted a ship carrying Lambton's theodolite and seized it, probably assuming it was a weapon. When they understood its purpose, they gracefully repacked it and returned it to him. Sometime in 1817, a membership in the French Academy of Sciences was conferred upon Lambton!

The project moved on. If Lambton was constantly on the move, what kind of family life did he have? We can only guess. Apparently, for many years, he sent a substantial portion of his salary back home, to support his parents; therefore, raising his own family might have been financially challenging. And he was married to this project. But somewhere along the way, he found himself an Indian companion named Kumerboo and had at least three children with her. One of them, William Lambton Jr., joined his father's survey team in 1815.

For Lambton, 1818 was an eventful year. He was invited to become a Fellow of the Royal Society. Governor-General Warren Hastings realised the national importance of the survey and made it a central subject under the control of the Supreme Council at Calcutta (now Kolkata). Lambton had triggered a culture of scientific cartography in India! His survey was formally christened the Great Trigonometrical Survey (GTS) and he became its first Superintendent. He was also allotted an energetic deputy, Captain George Everest. Years after Lambton died and Everest had retired, the GTS ascertained that peak XV in Nepal was the tallest peak ever. It was named after Everest, the worthy successor of Lambton.

Sir Isaac Newton had theorised that the Earth was not a sphere but an oblate spheroid. An oblate spheroid is something like grapefruit, nearly spherical but flattened at the top and bottom. Newton had concluded that this shape is caused by the spinning of the Earth. Lambton's expedition had covered such a large portion of the Earth, that it created adequate field data to support Newton's theory. Lambton's work was thus very important in the scientific world. By late 1822, Lambton was approaching Nagpur, the end of the southern phase. He had covered around 4,25,000 sq.km in about 20 years, mostly by foot. A sturdy man, he was suddenly struck with pulmonary illness. He was around 70, but still vigorous. He recovered and got ready for the final trek to Nagpur, 75 kms away. But he never saw Nagpur. He passed away peacefully in his sleep at one of the camps.

But his team never faltered; they crossed Nagpur and eventually reached the Himalayas many years later. Perhaps, the greatest manual survey in the history of science, the Great Trigonometrical Survey functioned for about 70 years, led by successors who practised Lambton's high standards. In 1875, it merged with the Survey of India and became a permanent department of the government of India.

rajeshsharma1049@gmail.com

Colonel William Lambton on the walls of Brihadeeshwara Temple.

#TEACHER

Lessons from Wolves

What the Wild Can Teach the Human Soul

In a world that often demands compromise, constant noise, and the loss of inner instinct, the wolf stands as a quiet, powerful reminder of another way to live. Wolves are more than fierce predators or mythic creatures of the forest, they are deeply intelligent, emotionally complex, and bound by a code of behavior that speaks to something ancient in us.

If we listen closely, the wolf teaches. Not through words, but through action. Through instinct. Through loyalty, strength, and silence. Here are the timeless lessons we can learn from wolves, truths that can guide the soul, especially in a world that has forgotten the wilderness within.

1. Never Eat What Is Rotten

A wolf will sniff, examine, and reject food that is spoiled. It refuses to poison its body, a lesson for humans not just in diet, but in life.

Do not consume what corrupts your spirit. This includes toxic relationships, degrading environments, or beliefs that no longer serve you. Learn to walk away from anything that contaminates your peace. Feed yourself with what nourishes, physically, emotionally, spiritually.

2. Choose What Nourishes Your Soul

Wolves hunt with focus and patience. They do not chase everything, they pursue only what sustains the pack. In this, they teach us to be intentional.

Choose pursuits, people, and places that feed your spirit. In a world of distractions, clarity is a rare strength. Don't waste your energy chasing what leaves you empty. Trust your gut. Know your hunger.

3. Never a Wolf in a Circus

You'll never see a wolf performing tricks under bright lights for applause. Wolves do not submit to cages or crowds. Their dignity is not for sale. Be wild enough to resist becoming entertainment. You were not born to be someone else's spectacle. Don't contort yourself for approval. Freedom may be lonely at times, but it is sacred.

4. Wolves Are Loyal in Love

Wolves mate for life. When one partner dies, the other may never take another. Some mourn in silence for years. Their bond is not convenience, it is commitment.

Loyalty still matters. In a world where love is often disposable, the wolf reminds us of devotion that runs deep. To love like a wolf is to choose again and again, even when it's hard. To mourn deeply is to have loved deeply.

5. Wolves Respect Bloodlines

Within the pack, there is a deep sense of heritage and order. Elders are honoured, the alpha leads not through domination but through earned respect, and every member has a role. Know where you come from. Respect your ancestry, your family, your roots. Don't forget the struggles and wisdom of those who came before. Let it guide your path without chaining you.

6. Wolves Care for Their Elders

Old wolves are not cast out, they are protected. They pass on knowledge, guard the young, and are fed even when they can no longer hunt.

Honour the wisdom of age. A society that discards its elders loses its memory. Value those who have walked before you. Listen. Learn. One day, you will be the elder.

7. Stay United in the Pack

A lone wolf may be fierce, but it is the pack that survives. Wolves succeed through cooperation, communication, and shared survival. They protect each other. They raise the pups together.

Find your pack. Whether it's family, friends, or community, stay connected. Fight for each other, not against each other. There is strength in unity that the individual can never match.

8. Live with the Discipline of the Wolf

Wolves are not reckless. They live by rhythm, hunting with strategy, traveling with purpose, resting in cycles. Their life is not chaotic, but precise. Discipline is not control, it is power. Learn the patterns that bring you strength. Rise early, speak with intention, move with clarity. Live by a code, even if no one is watching.

● Return to the Wild Within

The wolf does not pretend to be anything it's not. It doesn't apologize for its hunger, its solitude, its love, or its strength. It simply is. In a world where many wear masks, be a wolf, raw, real, and rooted. Protect your soul the way a wolf protects its pack. Hunt only what feeds you. Speak only when needed. And walk through this life with the quiet, fierce wisdom of the wild.

THE WALL

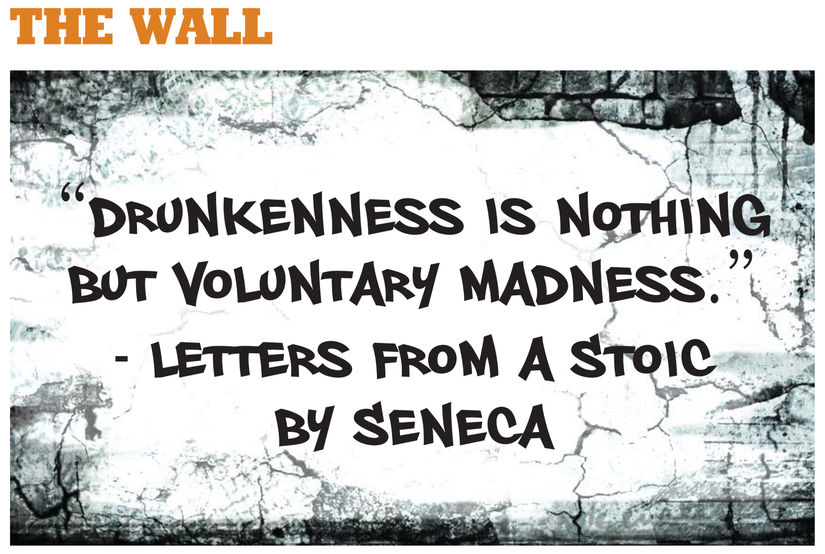

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

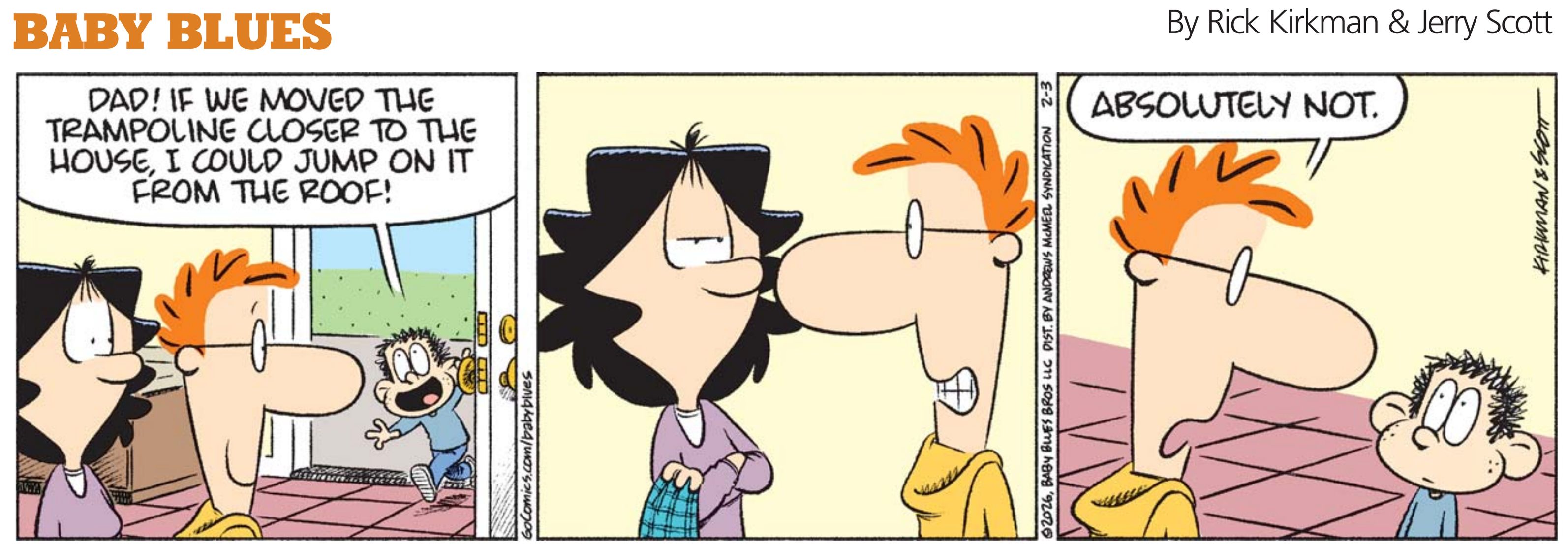

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

भीलवाड़ा में 42 किलो डोडा-चूरा के साथ जोधपुर के दो तस्कर गिरफ्तार

आरोपियों के पास से एक देसी पिस्टल और आठ जिंदा कारतूस भी बरामद हुए

- जांच करने पर ट्रक के नीचे बने टूल बॉक्स और केबिन के अंदर से तीन प्लास्टिक के कट्टे बरामद हुए, इनमें अवैध अफीम डोडा-चूरा भरा हुआ था
- पुलिस अब यह पता लगा रही है कि डोडा-चूरा की खेप कहां से लाई गई थी और कहां पर सप्लाई होनी थी

भीलवाड़ा, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन में मादक पदार्थ तस्करों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सदर थाना पुलिस और एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स को बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने एक मिनी ट्रक से 42 किलो 160 ग्राम अवैध डोडा-चूरा जब्त कर जोधपुर निवासी दो युवकों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से एक देसी पिस्टल और आठ जिंदा कारतूस भी बरामद हुए हैं।

जानकारी के अनुसार, सदर थानाधिकारी गजेंद्र सिंह को ए.एन.टी.एफ. चौकी प्रभारी अयूब मोहम्मद से गुप्त सूचना मिली थी कि अजमेर-भीलवाड़ा रोड पर जोधड़ास चौराहे के पास एक संदिग्ध मिनी ट्रक खड़ा है, जिसमें नशीले पदार्थ होने की प्रबल संभावना है। सूचना पर पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची और ट्रक की तलाशी ली। तलाशी के दौरान मिनी ट्रक की ट्रॉली में पॉलिस्टर फिल्म्स के रोल भरे हुए थे, लेकिन बारीकी से जांच करने पर ट्रक के नीचे बने टूल बॉक्स और केबिन के अंदर से तीन प्लास्टिक के कट्टे बरामद हुए। इनमें 42 किलो 160 ग्राम अवैध अफीम डोडा-चूरा भरा हुआ था। मादक पदार्थों के साथ-साथ पुलिस को आरोपियों के पास से अवैध हथियार भी मिले हैं। खलासी सीट पर बैठे युवक महिपाल के पास मौजूद नीले बैग से एक देसी पिस्टल और दो मैगजीन बरामद की गईं, जिनमें आठ जिंदा कारतूस लोड थे।

पुलिस ने आरोपी राजकुमार विश्नोई निवासी गुढ़ा विश्नोईयान, थाना विवेक विहार, जोधपुर (चालक), महिपाल चौधरी निवासी एकता नगर, नांदड़ी, जोधपुर (परिचालक) को गिरफ्तार किया है। इस कार्रवाई में सदर थानाधिकारी गजेंद्र सिंह, ए.एन.टी.एफ. प्रभारी अयूब मोहम्मद, कांस्टेबल राजाराम और नारायण (विशेष योगदान) सहित पूरी टीम की अहम भूमिका रही। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ एक्ट और आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू कर दिया है। अब यह पता लगाया जा रहा है कि यह खेप कहां से लाई गई थी और कहां सप्लाई होनी थी।

पिकअप से नकदी चुराने के दो आरोपी युवक गिरफ्तार

- आरोपियों ने पांच फरवरी को कंवलियास स्थित मंदिर के बाहर खड़ी गाड़ी के लॉक तोड़कर करीब डेढ़ लाख रुपये उड़ा लिए थे
- पुलिस अब इनसे यह पता लगाने में जुटी है कि चोरी की गई राशि कहां छिपाई गई है और क्या इनके साथ इस वारदात में कोई और भी शामिल था

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की गुलाबपुरा थाना पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए पिकअप गाड़ी का लॉक तोड़कर नकदी चुराने के मामले में दो युवकों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने पांच फरवरी को कंवलियास स्थित एक मंदिर के बाहर खड़ी गाड़ी से करीब डेढ़ लाख रुपये उड़ा लिए थे। पुलिस अब आरोपियों से पूछताछ कर चोरी की गई राशि बरामद करने का प्रयास कर रही है।

पुलिस के अनुसार, राजसमंद निवासी प्रवीण कुमार जोशी 5 फरवरी की शाम अपनी पिकअप लेकर गुलाबपुरा क्षेत्र में आए थे। उन्होंने अपनी गाड़ी कंवलियास स्थित त्रिदेव महादेव मंदिर के पास खड़ी की थी। इसी दौरान अज्ञात चोरों ने मौका पाकर गाड़ी के गेट का लॉक तोड़ दिया और केबिन में रखे 1 लाख 45 हजार रुपये लेकर फरार हो गए। जब पीड़ित वापस लौटा तो चोरी का पता चला, जिसके बाद गुलाबपुरा थाने में मामला दर्ज कराया गया। वारदात की गंभीरता को देखते हुए थाना प्रभारी संजय गुर्जर के नेतृत्व में टीम गठित की गई। जांच अधिकारी पृथ्वीराज ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले। तकनीकी साक्ष्यों और मुखबिरों की सूचना के आधार पर पुलिस ने घेराबंदी कर पप्पू सिंह (25) पुत्र जीतसिंह राजपूत और भैंरूलाल पुत्र देवीलाल मेघवंशी (दोनों निवासी मोडाजी का खेड़ा) को डिटेन किया। थाने लाकर जब संदिग्धों से कड़ाई से पूछताछ की गई, तो उन्होंने पिकअप से नकदी चोरी करने की वारदात स्वीकार कर ली। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। थाना पुलिस अब इनसे यह पता लगाने में जुटी है कि चोरी की गई राशि कहां छिपाई गई है और क्या इनके साथ इस वारदात में कोई और भी शामिल था।

जिला कलैक्टर ने कठूमर सीएचसी में व्यवस्थाओं का जायजा लिया

- निरीक्षण के दौरान अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं, साफ-सफाई, दवा वितरण व्यवस्था एवं रोगियों को मिल रही सेवाओं की जानकारी ली

अलवर जिला कलैक्टर आर्तिका शुक्ला ने कठूमर में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया।

अलवर, (निसं)। अलवर जिला कलैक्टर आर्तिका शुक्ला ने बुधवार को कठूमर का दौरा कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं, साफ-सफाई, दवा वितरण व्यवस्था एवं रोगियों को मिल रही सेवाओं का जायजा लिया।

जिला कलैक्टर आर्तिका शुक्ला ने चिकित्सा अधिकारियों और स्टाफ से चर्चा कर व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने आगामी बरसात के मौसम को ध्यान में रखते हुए भवन के जर्जर व आवश्यक हिस्सों की समय पर मरम्मत की कार्य योजना तैयार करने को कहा, ताकि बारिश के दौरान मरीजों और स्टाफ को किसी प्रकार की परेशानी न हो। इसके अलावा उन्होंने अस्पताल में आवश्यक स्वास्थ्य उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया। जिन उपकरणों की कमी है, उनकी सूची तैयार कर शीघ्र प्रस्ताव भेजने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए गए। कलैक्टर ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराना प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने मरीजों से संवाद कर उपचार और व्यवस्थाओं की जानकारी ली। इस दौरान स्थानीय प्रशासनिक अधिकारी व चिकित्सा विभाग के कर्मचारी मौजूद रहे।

मेहरानगढ़ दुर्ग में कल से आयोजित होगा 17वां सेक्रेड स्पिरिट फेस्टिवल

- दुर्ग में गूंजेगी देश-विदेश के ख्यातिनाम संगीतकारों की स्वर लहरियां
- इस आयोजन में देश व विदेश के कलाकारों द्वारा प्रदर्शन होगा

जोधपुर, (कासं)। विश्व की विभिन्न संगीत परम्पराओं, राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को एक मंच पर लाने वाला तीन दिवसीय 17 वां सेक्रेड स्पिरिट फेस्टिवल 13 से 15 फरवरी को ऐतिहासिक मेहरानगढ़ दुर्ग में मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित होगा। इस फेस्टिवल में भारतीय व अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करेंगे।

मेहरानगढ़ म्युजियम ट्रस्ट के प्रशासक कर्नल अजय सिंह शेखावत ने बताया कि फेस्टिवल पूर्व नरेश गजसिंह व गॉर्डन मैथ्यू संनर स्टिंग के संरक्षण में आयोजित होगा। फेस्टिवल निदेशक बाईजीलाल प्रिंसेज शिवरंजनी राज्ये व एलेक्जेंड्रा डी. फैडावल एवं आर्टिस्ट डायरेक्टर एलेन वेबर होंगे। सेक्रेड स्पिरिट फेस्टिवल के संरक्षक गजसिंह द्वितीय ने कहा कि इस बात की खुशी व हर्ष का अहसास हो रहा है कि 17वां सेक्रेड स्पिरिट फेस्टिवल 13 से 15 फरवरी को ऐतिहासिक व अपनी भव्यता व विरासत के लिए प्रसिद्ध मेहरानगढ़ दुर्ग में आयोजित हो रहा है। इस आयोजन में देश व विदेश के कलाकारों द्वारा आध्यात्मिक सूफी संगीत और नृत्य व भारतीय विरासत का शानदार प्रदर्शन होगा। इस फेस्टिवल में राजस्थानी संगीतकारों और विदेशी कलाकारों के बीच जुगलबंदी रोमांचित करने वाले क्षण रहेगा। जोधपुर के मेहरानगढ़ में आयोजित यह फेस्टिवल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के देशी व विदेशी कलाकारों की भागीदारी से कला, संस्कृति व विरासत का अन्तर्राष्ट्रीय मंच बन गया है।

फेस्टिवल के आर्टिस्ट डायरेक्टर फ्रांस के एलेन वेबर ने बताया कि जोधपुर में आयोजित यह फेस्टिवल महाराजा गज सिंह का जोधपुर में दर्शकों के लिए एक बड़ा तोहफा व अवसर है। उन्होंने फेस्टिवल के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि सेक्रेड स्पिरिट फेस्टिवल कुछ वर्षों से अंतरराष्ट्रीय कल्चर प्रोग्राम कैलेंडर में शुमार होने लगा है। उन्होंने बताया कि समय-समय पर दर्शकों के सुझावों के आधार पर फेस्टिवल कार्यक्रमों में बदलाव कर और अधिक बेहतर व रोचक बनाने का लगातार प्रयास किया जाता है। उन्होंने बताया कि जोधपुर का सेक्रेड फेस्टिवल (सूफी फेस्टिवल) ने दुनिया के चार बड़े फेस्टिवल में शुमार है। अब तक पुर्तगाल, मोरक्को व फ्रांस में ही इसका आयोजन होता था।

सेक्रेड स्पिरिट फेस्टिवल में चीन के लिंगलिग वेनेकी गू, जियान ठाुई लू, क्लेमेंट जैनी, स्पेन के एपेरनलोपेज, अनाइस ओलिववेरास, टर्की के मेटे एडमैन, एमरेइसिक, तजाकिस्तान के अक्नाजर अलोवातोव, कुशबख्त नियजोन, वेहरूज सकारोव व जिल्वा दिवलो, ईरान के नगीब शानबेहजादेह, ट्ययूनिशिया के जींद जौरी सहित कई देशों के कलाकार आएंगे। वहीं जोधपुर के साबिर खान, पंजाब के प्रसिद्ध लेखक व कवि एवं सूफी गायक मदन गोपाल सिंह, पंजाब की रजिया सुल्तान, बैंगलोर के मशहूर वायलिन कम्पोजर अंबी सुब्रमण्यम, गिटार वादक व संगीतकार कोणार्क रेड्डी, अनवर खान मांगणियार, मुजफ्फर रहमान, मुस्तफा खान, हनीफ खान, घेवर खान मांगणियार सहित अनेक कलाकार शिरकत करेंगे। वहीं महाराजा गजसिंह पर लिखित पुस्तक का विमोचन होगा। महाराजा गज सिंह जी (द्वितीय) के जीवन और उनके द्वारा विरासत संरक्षण पर केन्द्रित पुस्तक "बापजी: महाराजा ऑफ जोधपुर मारवाड़: दी किंग हू वुड बी मैन" लेखक अमन नाथ व योगी वैद्य द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में लेखक द्वारा उनके बचपन से लेकर एक आधुनिक महाराजा के रूप में मारवाड़ की विरासत के संरक्षण व संवर्द्धन की यात्रा का वर्णन है। इसमें उनके जीवन के सभी पहलुओं को कवर किया गया है।

पत्नी, बेटों ने सहमति कर नेत्रदान संपन्न कराया

कोटा, (निसं)। दो माह पूर्व विज्ञान नगर, निवासी ट्रांसपोर्ट व्यवसायी विनय कुमार छाबड़ा के बड़े भाई राजेंद्र छाबड़ा के आकस्मिक निधन के उपरांत संस्था शाईन इंडिया फाउंडेशन के माध्यम से उनका नेत्रदान संपन्न हुआ था। विनय का भी हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया।

नेत्रदान की, सरल और रक्त विहीन प्रक्रिया को, प्रारंभ से ही परिवार के सदस्य जानते थे। इसीलिए जैसे ही संस्था के ज्योति मित्र श्याम दीवाना ने विनय कुमार की पत्नी सविता, बेटे मनीष और अंकुश से नेत्रदान की चर्चा की तो परिवार ने तुरंत सहमति दे दी। श्याम की सूचना पर संस्था सदस्यों की ओर से घर पर नेत्रदान की प्रक्रिया संपन्न हुई। विनय के अचानक देवलोक गमन जाने से पंजाबी समाज में शोक की लहर आ गई। मंगलवार दिन रात लाल बिहारी जी का चौक, चौमुखा बाजार, बूंदी निवासी पंडित श्रीकांत शर्मा की पत्नी गीता शर्मा का आकस्मिक निधन हुआ, जिसके उपरांत बेटे लक्ष्मीकांत, शिवकांत और बेटी अनीता ने स्वप्रेरणा से गीता के नेत्रदान करवाने का निर्णय लिया। सभी की सहमति से ऋतुराज कोठीवाला स्मृति संस्थान के मधुसूदन गुप्ता को नेत्रदान प्रक्रिया संपन्न करवाने के लिए, संपर्क किया संस्था के ज्योति मित्र इदरीस बोहरा की सूचना पर देर रात श्रीकांत के निवास पर, डॉ.कुलवंत गौड़ ने नेत्रदान प्रक्रिया सम्पन्न की।

हमले में हुये घायल की मौत, सर्व समाज में भारी आक्रोश

घायल जगदीश सिंह का उदयपुर के चिकित्सालय में उपचार चल रहा था

- मांडल थाना क्षेत्र के चतरपुरा भादू गांव में एक फरवरी की रात को 50-60 असामाजिक तत्वों ने एक परिवार पर हमला किया था
- हमलावरों ने घर में आगजनी कर आतंक मचाया था, इस हमले में जगदीश सिंह गंभीर रूप से घायल हो गया था

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा जिले के मांडल थाना क्षेत्र के चतरपुरा भादू गांव में विगत एक फरवरी की रात को एक परिवार पर हुए हमले में घायल हुए जगदीश सिंह ने बीती रात दम तोड़ दिया। जगदीश सिंह का उदयपुर के चिकित्सालय में उपचार चल रहा था। उनकी मृत्यु की सूचना के बाद रावणा राजपूत समाज सहित सर्व समाज में गहरा आक्रोश है।

जानकारी के अनुसार एकफरवरी की रात को चतरपुरा भादू में लगभग 50-60 असामाजिक तत्वों ने जगदीश सिंह के घर में अनाधिकृत प्रवेश कर महिलाओं एवं पुरुषों के साथ कुल्हाड़ी और सरियों से जानलेवा हमला किया था। हमलावरों ने घर में आगजनी कर आतंक मचाया था। इस हमले में जगदीश सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए थे। समाज के प्रतिनिधियों ने बताया कि पीड़ित परिवार द्वारा 25 से 30 आरोपियों के विरुद्ध नामजद रिपोर्ट दर्ज करवाने के बावजूद पुलिस प्रशासन द्वारा अब तक मात्र 1-2 व्यक्तियों को ही हिरासत में लिया गया है।

पुलिस की इस सुस्त कार्यप्रणाली और मुख्य आरोपियों को अब तक गिरफ्तार न किए जाने को लेकर समाज में भारी नाराजगी है। मृतक जगदीश सिंह को न्याय दिलाने और सभी हत्यारों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग को लेकर 11 फरवरी को प्रात: दस बजे भीलवाड़ा के महात्मा गांधी अस्पताल की मोर्चरी पर सर्व समाज और रावणा राजपूत समाज द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन के दौरान सभी 30 आरोपियों की 24 घंटे के भीतर गिरफ्तारी हो, पीड़ित परिवार को सुरक्षा एवं उचित मुआवजा प्रदान किया जाए, मामले की जाँच हेतु विशेष टीम का गठन किए जाने की मांग की गई। समाज के पदाधिकारियों ने चेतावनी दी है कि जब तक प्रशासन ठोस कार्रवाई का आश्वासन नहीं देता और आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होती, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

फैक्ट्रियों से ट्रांसफार्मर चोरी करने वाले चार आरोपी गिरफ्तार

- पुलिस ने तीन क्विंटल कॉपर और दो बाइक बरामद की

अलवर, (निसं)। अलवर जिले में फैक्ट्रियों से ट्रांसफार्मर चोरी करने वाले गिरोह को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इस मामले में पुलिस ने चार आरोपियों को पकड़ा है। आरोपियों के पास से करीब तीन क्विंटल कॉपर तार और चोरी में इस्तेमाल की गई दो मोटरसाइकिल बरामद की गई हैं।

पुलिस अधीक्षक सुधीर चौधरी ने बताया कि यह कार्रवाई उद्योग नगर थाना पुलिस ने की है। पुलिस को सूचना मिली थी कि एमआईए औद्योगिक क्षेत्र में लगातार ट्रांसफार्मरों से कॉपर तार चोरी किया जा रहा है। सूचना के बाद पुलिस ने जांच शुरू की और तकनीकी मदद से आरोपियों को पकड़ लिया। जांच में सामने आया कि आरोपी अलग-अलग फैक्ट्रियों में चोरी करते थे। रात के समय ट्रांसफार्मर के अंदर से कॉपर तार निकालकर चोरी किया जाता था और उसे गैंग के अन्य लोगों के साथ मिलकर बेच दिया जाता था। यह एक इंटर स्टेट गैंग है, जिसमें चार आरोपियों के अलावा अन्य लोग भी शामिल हैं, जिनकी गिरफ्तारी अभी बाकी है।

जानकारी के अनुसार पांच जनवरी को आरजी एग्रो फूड फैक्ट्री, 14 जनवरी को सनमति मार्बल्स फैक्टरी, 20 जनवरी को एचबी मार्बल्स फैक्टरी, 24 जनवरी को गौरव केमिकल मिनरल फैक्टरी और 30 जनवरी को माइक्रोन इंडिया फैक्टरी से ट्रांसफार्मर चोरी की घटनाएं हुई थीं। इन मामलों में मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश की जा रही थी। पुलिस ने इस गैंग के चार मुख्य आरोपी बलविन्द्र सिंह, गुरविन्दर सिंह, सोनू और हरजीत उर्फ रणजीत सिंह को गिरफ्तार किया है। ये आरोपी ग्रामीण इलाकों में भी ट्रांसफार्मर चोरी की वारदातें करते थे। आरोपी दिन में फैक्टरी इलाकों की रेकी करते थे और रात में ट्रांसफार्मर से कॉपर तार काटकर चोरी करते थे। फिलहाल पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। पुलिस को उम्मीद है कि पूछताछ में और भी चोरी की घटनाओं का खुलासा हो सकता है। फिलहाल पुलिस ने बख्तल की चौकी पर तीन कॉन्स्टेबल एक्स्ट्रा लगा दिए हैं।

अवैध बजरी से भरे तीन ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त

बजरी से भरे ट्रैक्टर-ट्रॉली को थाने में खड़ा करवाया।

निवाई, (निसं)। पुलिस ने अवैध बजरी खनन व परिवहन की रोकथाम को लेकर अलग-अलग स्थानों से बजरी से भरे तीन ट्रैक्टर-ट्रॉलियों को जब्त किया है।

थानाधिकारी घासीराम मीणा ने बताया कि पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार मीणा के निर्देशानुसार क्षेत्र में अवैध बजरी खनन व परिवहन की रोकथाम को लेकर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रतनलाल भार्गव व पुलिस उपाधीक्षक रवि प्रकाश शर्मा के सुपरविजन में पुलिस की विशेष टीम का गठन किया।

टीम द्वारा अवैध बजरी खनन व परिवहन के विरूद्ध कार्रवाई करते हुए गश्त के दौरान अवैध बजरी से भरे हुए एक ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया है। इसी प्रकार दतवास पुलिस ने बजरी से भरे दो ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया है। दतवास थानाधिकारी हीरालाल वर्मा ने बताया कि अरणिया तिराहे से बजरी से भरे दो ट्रैक्टर-ट्रॉली एवं रामचन्द्रपुरा गांव के समीप से बजरी से भरी एक ट्रॉली को जब्त किया है। जिनके चालक फरार हो गए। पुलिस ने ट्रैक्टर-ट्रॉलियों को थाना परिसर में खड़ा करवा दिया है एवं चालक व मालिक के विरूद्ध एमएमडीआर एक्ट में मामला दर्ज कर लिया है।

अवैध खनन में लिप्त तीन गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। भीण्डर थाना पुलिस ने अवैध खनने करने वाले तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर मौके से मशीन व डंपर जब्त किए। जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर चलाए जा रहे तलाशी अभियान के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, पुलिस उप अधीक्षक राजेन्द्रसिंह जैन के सुपरविजन में आरपीएस रामकुमार भादू प्रोबेशनर थानाधिकारी भीण्डर, खनिज कार्य देशक धर्मपालसिंह राणावत मय टीम ने कार्यवाही करते हुए मुखबीर से मिली सूचना के आधार पर खनखेर धूणी भग्गड़ के पास पहुंच कर पोकलेन एलएनटी मशीन जब्त कर चालक पप्पूलाल मीणा व साथी शंकर मीणा खलासी प्रकाश मीणा, डंपर चालक जीवराज उर्पु जीवा एवं डंपर खलासी प्रभू मीणा को पूछताछ के बाद डिटेन किया तथा पोकलेन मशीन व डंपर जब्त कर जीवराज उर्फ जीवा मीणा पुत्र मंजीत मीणा निवासी कारवा दोवड़ा डूंगरपुर, प्रभू मीणा, प्रकाश मीणा पुत्र सुरेश मीणा निवासी हजारीगुढ़ा पारसोला प्रतापगढ़, प्रकाश पुत्र सुरेश मीणा निवासी हजारीगुढ़ा पारसोला प्रतापगढ़ को पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया।

शराब व डीजल चोरी के आरोपी को पकड़ा

कोटा, (निसं)। कैथून पुलिस टीम ने चोरी के दर्ज मामले में कार्रवाई करते हुए शराब की पेटी व डीजल चोरी के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस टीम ने घटना में प्रयुक्त कार को भी जप्त किया है।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि जिला चूरू के ढाणी आशा निवासी फरियादी धमेन्द्र ने कैथून थाने में 23 दिसम्बर 2025 को रिपोर्ट दी। फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि वह पिकअप बोलेरो का चालक है और पिकअप में ग्रिन फाईट कैरियर के माध्यम से 70 पेटी शराब की लेकर मुम्बई जाने के लिये निकला था। रिपोर्ट में कहा कि थाना इलाके में 8 लेन पर ट्रक से टक्कर होने पर उसकी पिकअप क्षतिग्रस्त हो गई थी। फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि उसकी क्षतिग्रस्त वाहन पिकअप से 8 पेटी शराब और वाहन से डीजल की कोई चोरी करके ले गया। नींद की झपकी लगने से उसे घटना का पता नहीं चला। ग्रामीण एसपी ने कहा कि फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया गया। मामले का खुलासा करने के लिये ग्रामीण अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकल्याण मीणा के निर्देशन में पुलिस उपअधीक्षक राजेश ढाका के सुपरविजन में कैथून थानाधिकारी मनोज सिकरवार के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि गठित टीम ने तकनीकी आधार व मुखबीर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए जिला बारां के बंबूलिया कला गांव निवासी अनीष (27) को गिरफ्तार किया।

चीता की एआई से बनी फर्जी फोटो वायरल की, युवक गिरफ्तार

- गंगापुर सिटी के अलीगंज में चीता दिखने की अफवाह से दहशत फैल गई थी

गंगापुर सिटी, (निसं)। अलीगंज गांव में मंगलवार को चीता दिखने की अफवाह फैल गई। सोशल मीडिया पर एआई से बनी फर्जी तस्वीर वायरल होने के बाद इलाके में दहशत का माहौल बन गया। इस मामले में पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है।

अफवाह की सूचना मिलते ही पुलिस और वन विभाग की टीम तहसीलदार मुकेश जैमन के साथ अलीगंज पहुंची। टीमों ने पूरे गांव और आसपास के खेतों में गहन सर्च ऑपरेशन चलाया। हालांकि, जांच के दौरान चीता या किसी अन्य वन्यजीव की मौजूदगी के कोई प्रमाण नहीं मिले, न ही पैरों के निशान या अन्य संकेत मिले। इसके बाद वायरल तस्वीर की तकनीकी जांच की गई, जिसमें पता चला कि यह फोटो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तकनीक का उपयोग करके बनाई गई थी। इस मामले में सदर थाना पुलिस ने अलीगंज निवासी शाहिल पुत्र रफीक को गिरफ्तार किया है। सदर थाना प्रभारी राधारमन गुप्ता ने बताया कि आरोपी शाहिल ने पूछताछ में स्वीकार किया है कि उसने एआई का इस्तेमाल कर चीते की फर्जी तस्वीर बनाई थी। उसने यह फोटो फेसबुक पर पोस्ट की थी, जिसका उद्देश्य केवल सनसनी फैलाना था। हालांकि, इससे ग्रामीणों में भय का माहौल बन गया और प्रशासन को मौके पर पहुंचकर स्थिति संभालनी पड़ी। अफवाह फैलने के बाद सैकड़ों ग्रामीण अलीगंज ओवरब्रिज के पास जमा हो गए थे। कई लोग अपने बच्चों और बुजुर्गों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाते दिखे। इस दौरान कुछ समय के लिए पूरे क्षेत्र में दहशत का माहौल रहा और लोग घरों से बाहर निकलने से बचते रहे। प्रशासन ने ग्रामीणों से अपील की है कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें और किसी भी जानकारी की पुष्टि किए बिना उसे आगे साझा न करें।

खाटूश्यामजी में होटल, धर्मशालाओं एवं रेस्टोरेंट की जांच

सीकर, (निसं)। खाटूश्यामजी में बुधवार को खाद्य विभाग की टीम ने घरेलू गैस सिलेण्डरों के अवैद्य भण्डारण रिफलिंग के संबंध में 32 होटल, धर्मशालाओं एवं रेस्टोरेन्ट की जांच की गई। जिला रसद अधिकारी सीकर विजेंद्र पाल ने बताया कि खाटूश्यामजी नगरपालिका में मेले के दौरान होटल, रेस्टोरेंट, भण्डारा, रसोई इत्यादि पर घरेलू गैस सिलेण्डरों के व्यवसायिक दुरूपयोग को रोकने के लिए गठित जांच दल द्वारा बुधवार को आकस्मिक जांच कर कार्रवाई की गई।

मौके पर कार्रवाई में सुनीता वर्मा प्रवर्तन अधिकारी, अनुराग बैरवाल प्रवर्तन निरीक्षक एवं जयराम प्रवर्तन अधिकारी द्वारा 32 फर्मों में से 6 स्थानों पर गैस सिलेण्डरों की जांच कार्रवाई में एलपीजी की उपदर्शित मानक क्षमता 14.2 किग्रा के कुल 13 गैस सिलेण्डर होटल परिसर में असुरक्षित ढंग से चाय नाश्ता, खाना बनाने के काम में लिया जाना पाया गया।

इस कार्रवाई में क्रमशः प्रतिष्ठानों श्याम आलोक होटल से 1, बरबरीक कैंटीन से दो, काठमांडू धर्मशाला से तीन, बाबा श्याम कडी कचौरी होटल से एक, होटल कृष्ण सुदामा से पांच, श्याम रेस्टोरेन्ट से एक घरेलू गैस सिलेण्डर का वजह सबूत व्यवसायिक दुरूपयोग पाये जाने जब्त किया गया।

मौके पर प्रतिष्ठान फर्मों से पूछताछ करने पर कोई कागजात पेश नहीं किये गये ना ही कोई संतोषप्रद जवाब दिया गया। द्रवित पेट्रोलियम गैस आपूर्ति उपबंधों का प्रतिष्ठानों द्वारा उल्लंघन किया जा रहा था जिस पर वजह सबूत गैस सिलेण्डरों को मौके पर ही जब्त किया गया।

महिला की मौत

उदयपुर, (कासं)। शहर के प्रतापनगर थाना क्षैत्र में महिला की अकाल मौत हो गई। बुधवार को प्रतापनगर थाना क्षैत्र चन्द्रा कॉलोनी निवासी अणछीबाई (54) पत्नी उदयलाल माली की अचानक तबीयत खराब होने पर परिजनों ने उसे उपचार के लिए एमबी अस्पताल पहुंचाया। जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। इस पर एएसआई नरपतसिंह ने पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

निवाई में बोर्ड परीक्षाओं का महाकुंभ आज से

निवाई में बोर्ड परीक्षा केन्द्र सरस्वती विद्या मंदिर में परीक्षाओं की व्यवस्थाएं की।

निवाई। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वर्ष 2026 की सीनियर सेकेंडरी व सेकेंडरी बोर्ड परीक्षाएं गुरुवार से उपखंड क्षेत्र में शुरू होगी। परीक्षाओं को लेकर शिक्षा विभाग ने निवाई ब्लॉक में सभी प्रशासनिक तैयारियां पूर्ण कर ली हैं।

इस बार निवाई ब्लॉक में कुल 21 परीक्षा केंद्र स्थापित किए गए हैं, जहां लगभग 8 हजार 500 से अधिक परीक्षार्थी अपने भाग्य का फैसला करेंगे। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मंजू मीणा ने बताया कि शांतिपूर्ण व

■ निवाई ब्लॉक में 21 केंद्रों पर हजारों परीक्षार्थी देंगे परीक्षा

नकलविहीन परीक्षा संपन्न कराने के लिए पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। निवाई मुख्य शहर में कुल 4 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं।

शहर के प्रमुख केंद्रों में पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, इम्मानुएल मिशन सीनियर सेकेंडरी स्कूल निवाई व सरस्वती विद्या मंदिर शामिल हैं। इन केंद्रों पर फर्नीचर, पेयजल व रोशनी की व्यवस्था का अंतिम दे दिया गया है। परीक्षा की गोपनीयता व निष्पक्षता बनाए रखने के लिए ब्लॉक स्तर पर विशेष उडऩदस्तों (सतर्कता दल) का गठन किया गया है, जो परीक्षा के दौरान विभिन्न केंद्रों का औचक निरीक्षण करेंगे। सभी केंद्र अधीक्षकों को निर्देश दिए गए हैं कि वह सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन का सख्ती से पालन करें।

परीक्षा केंद्रों के आसपास सुरक्षा के लिहाज से पुलिस जाब्ता भी तैनात रहेगा ताकि किसी भी प्रकार की अवांछनीय गतिविधि को रोका जा सके। विद्यार्थियों को परीक्षा शुरू होने के निर्धारित समय से कम से कम 30 मिनट पूर्व केंद्र पर पहुंचने की सलाह दी गई है। प्रवेश पत्र के बिना परीक्षा केंद्र में प्रवेश वर्जित होगा। साथ ही मोबाइल फोन, स्मार्ट वॉच व किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक गैजेट पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा।

परीक्षा को लेकर दिनभर विद्यार्थी व अभिभावक अपने-अपने केंद्रों की स्थिति जानने के लिए विद्यालयों के चक्कर काटते नजर आए।

सरकार की उदासीनता को निंदनीय बताया

चौमूं/कालाडेरा। बुधवार को राजस्थान विधानसभा के बजट में चौमूं क्षेत्र के लिए कुछ सड़क निर्माण कार्य स्वीकृत किए गए हैं, लेकिन यह क्षेत्र की व्यापक और तत्काल आवश्यकताओं के मुकाबले नाकाफी हैं।

चौमूं विधायक डॉ शिखा मील बराला के अथक प्रयासों से स्वीकृत परियोजनाओं में -52 सीकर रोड से प्राचीन भोमिया जी महाराज मंदिर तक सीसी सड़क, मैन स्टैंड से मालेश्वर मंदिर तक सीसी सड़क तथा चौमूं में विभिन्न सड़क निर्माण कार्य शामिल हैं। विधायक डॉ शिखा मील बराला ने कहा कि इन प्रयासों के बावजूद बजट को ऊँट के मुँह में जीरा के समान बताया जा सकता है, क्योंकि क्षेत्र के बड़े और आवश्यक विकास कार्य अब भी लंबित हैं। चौमूं विधायक डॉ. शिखा मील बराला ने कहा कि चौमूं विधानसभा क्षेत्र के लोगों को अब और भी बड़ी योजनाओं की आवश्यकता है, जैसे चौमूं -रेनवाल रोड का चौड़ाईकरण और डिवाइडर युक्त निर्माण, चौमूं -चीथवाड़ी रोड का फोर लेन निर्माण और चौमूं -अजीतगढ़ रोड का फोर लेन निर्माण, वीर हनुमान जी रोप-वे शुरू करना एवं मंदिर परिसर में मोबाइल टावर लगाना एवं मंदिर का विकास

■ बजट में चौमूं क्षेत्र के लिए कुछ सड़क निर्माण कार्य स्वीकृत

कार्य, गोविन्दगढ़ में बस स्टैण्ड निर्माण, चौमूं बस स्टैंड का सौन्द्रीयकरण, चौमूं में सेंट्रल पार्क की तरह पर पार्क का निर्माण आदि। उन्होंने बताया कि बजट में बीसलपुरा योजना और ईआरसीपी में चौमूं का नाम शामिल नहीं किया गया है, जबकि अमृत 2.0 और जल जीवन मिशन जैसी महत्वपूर्ण योजनाएँ धरातल पर कहीं नजर नहीं आ रही हैं। विधायक डॉ. शिखा मील बराला ने कहा कि हमारे अथक प्रयासों से क्षेत्र में विकास के कई छोटे- बड़े कार्य आगे बढ़े हैं, लेकिन अभी भी चौमूंवासियों की बुनियादी जरूरतों जैसे पीने के पानी और सड़क, स्वास्थ्य व अन्य बुनियादी सुविधाओं के मामले में गंभीर सुधार की आवश्यकता है। गर्मियों के मौसम में इन समस्याओं की तीव्रता और बढ़ जाती है। विधायक डॉ. शिखा मील बराला ने स्पष्ट किया कि चौमूं के उचित और संतुलित विकास के लिए लगातार प्रयास किए जाएंगे और क्षेत्रवासियों की मूलभूत जरूरतों को प्राथमिकता देने का कार्य निरंतर जारी रहेगा। उन्होंने सरकार से चौमूंवासियों की आवाज़ सुनने और उनका हकदार विकास सुनिश्चित करने की अपील भी की।

बजट में भरतपुर को मिली अनेकों सौगात

भरतपुर (निस)। राजस्थान विधानसभा में दिया कुमारी ने राज्य बजट 2026-27 पेश किया। भजनलाल सरकार का यह तीसरा बजट है जिसमें युवा, महिला, किसानों और बुनियादी ढांचे को लेकर बडी घोषणाएं की गई हैं।

बजट की घोषणा के तुरन्त बाद भारतीय जनता पार्टी कार्यालय भरतपुर पर जिलाध्यक्ष शिवानी दायमा के नेतृत्व में अनेकों कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को गले लगाकर बधाई दी और मिठाई खिलाकर मुंह मीठा कराया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष शिवानी दायमा ने कहा कि यशस्वी मुख्यमंत्री भजनलाल सरकार का यह बजट महिला सशक्तिकरण को बढावा देने वाला है। जिसमें लखपति दीदी योजना, महिला स्वयं सहायता समूह, बैंक सखी, किशोरियों के लिए पोषण और एआई आधारित मेंटल हेल्थ सेवाओं से महिलाओं और बच्चों के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता दी गई है।

पूर्व प्रदेश मंत्री गिरधारी तिवारी ने कहा कि यह बजट पंच गौरव योजना पर आधारित है जिसके अन्तर्गत आधारभूत संरचना, पर्यटन उन्नयन, सांस्कृतिक संरक्षण, स्थानीय उत्पादों की ब्रांडिग तथा नवाचार आधारित परियोजनाओं के लिए 150 करोड रूपये व्यय किए जायेंगें। पूर्व जिलाध्यक्ष सत्येन्द्र गोयल ने कहा कि राज्य सरकार ने किसानों को मुफ्त बीज उपलब्ध कराने की घोषणा की है। सरकार की इस पहल से किसानों की लागत घटेगी और उत्पादन में वृद्धि होगी। कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए गुणवत्ता पूर्ण बीज उपलब्ध कराकर छोटे और सीमान्त किसानों को विशेष राहत दी गई है। जिला कोषाध्यक्ष सीए हेमन्त अठावाल ने बताया कि राजस्थान बजट विकास, सामाजिक सुरक्षा, रोजगार सृजन और निवेश संवर्धन की स्पष्ट दिशा तय करता है।

यह बजट डिजीटल राजस्थान, सशक्त किसान, महिला सशक्तिकरण और युवा केन्द्रित विकास के मजबूत स्तम्भों पर आधारित है। जिला मीडिया प्रभारी डॉ. वीरेन्द्र पचौरी ने कहा कि राज्य बजट राजस्थान के युवाओं को समर्पित है। जिसमें 1 लाख युवाओं को स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत 10 लाख रूपये तक का अनुदान दिये जाने का प्रावधान रखा गया है।

इससे सरकार की यह मंशा स्पष्ट होती है कि युवा नौकरी लेने वाला नहीं नौकरी देने वाला होना चाहिए। इनके अतिरिक्त भरतपुर-डीग क्षेत्र में एयरपोर्ट एवं 100 करोड की लागत से बृज कन्वेंशन सेन्टर की घोषणा की गई है। जिससे भरतपुर में पर्यटन के क्षेत्र को बढावा मिलेगा। भरतपुर के डेनेज सिस्टम को मजबूती प्रदान करने के लिए घोषणा की गई है।

नाम परिवर्तन

मेरा नाम बनवारी लाल यादव पुत्र श्री पांचू राम गलत अंकित हो गया है। जबकि सभी दस्तावेजों में मेरा नाम बनवारी लाल यादव पुत्र श्री सूजा राम यादव (Banwari Lal Yadav S/o Shri Suja Ram Yadav) है। जो सही है। भविष्य में इसी नाम से जाना जाए।

मैं आर्मी नं. 13832741M सिपाही तोलाराम पुत्र केसर देव शर्मा मैंने अपना नाम तोलाराम शर्मा से बदलकर तोलाराम रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाये। पता-24-ए दीप नगर बिनजारी मार्ग निवारू रोड झोटवाडा जयपुर (राज.)

मैं सविता के पी पत्नी सेना नं. 15210482K नाम प्रसन्ना के निवासी नं. 62 वार्ड नं. 3, मत्तीहल्ली कैम्प, बेत्रीहल्ली, विजयानगर कर्नाटक 583127 मेरे पति के सेवा अभिलेख में मेरा नाम सविता के बी है जबकि सही नाम सविता के पी है।

मैं सिद्धलिंगप्पा के केनछपरा पिता सेना नं. 15210482K नाम प्रसन्ना के निवासी नं. 62 वार्ड नं. 3, मत्तीहल्ली कैम्प, बेत्रीहल्ली, विजयानगर कर्नाटक 583127 मेरे पुत्र के सेवा अभिलेख में मेरा नाम सिद्धालिंगप्पा है जबकि सही नाम सिद्धालिंगप्पा के केनछपरा है और मेरे पुत्र के सेवा अभिलेख में मेरी जन्म तिथि 01.07.1954 है जबकि सही जन्मतिथि 25.08.1950 है।

I hereby declare that I have changed my name from Sushant Madhogaria to Sushant Agrawal. Henceforth, I should be known and identified by the name Sushant Agrawal for all purposes. Address: 4 BHA 15, Jawahar Nagar, Jaipur.

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

बजट में आमजन, गरीब, मजदूर हित के लिए कई घोषणाएं'

■ बजट में युवाओं और कर्मचारियों की अपेक्षाओं को नजर अंदाज किया : इंद्राज गुर्जर

पावटा। राजस्थान की वित्त मंत्री दिया कुमारी द्वारा बुधवार को विधानसभा में वर्ष 2026-27 के पेश किए गए बजट को लेकर विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक एवं प्रदेश प्रवक्ता कुलदीप धनकड़ ने इसे विकसित राजस्थान के संकल्प को पूरा करने वाला ऐतिहासिक और दूरदर्शी बजट बताया है। बजट को ऐतिहासिक बताते हुए धनकड़ ने कहा कि इसमें समाज के हर वर्ग का ध्यान रखा गया है। इसमें आम व्यक्ति, गरीब, मजदूर, महिला, किसान, विद्यार्थी के हित के लिए एवं हर वर्ग के लिए कल्याणकारी और विकासोन्मुखी, आर्थिक मजबूती सुनिश्चित करने वाला एक सकारात्मक बजट बताया, जो केंद्र सरकार के साथ मिलकर विकास को गति देगा। धनकड़ ने कहा कि यह बजट सर्व सुखाय, सर्व हिताय" और राजस्थान को आत्मनिर्भर बनाने वाला रोडमैप है। बजट में बुनियादी ढांचे, सड़क विकास, युवा, किसान, महिला सशक्तीकरण और रोजगार बढ़ाने पर जोर दिया गया है। उन्होंने कहा कि यह बजट को विकसित राजस्थान के संकल्प को सुदृढ़ करता 2026-27 का यह आम बजट राजस्थान के विकास की नई परिभाषा गढ़ेगा। विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के पावटा एवं विराटनगर तहसील के एनिकटों का जीर्णोद्धार के कार्य हेतु 07 करोड़ रुपये, भाबरू एन.एच.-48 से लुहाकना कलां सड़क का चौड़ाईकरण एवं सुदृढ़ीकरण कार्य हेतु 8.70 करोड़ रुपये, नवीन 33/11 केवी ठिाड सब स्टेशन ( ) लाडाकाबास स्वीकृत करने पर विधायक धनकड़ ने प्रदेश मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

संत समाज ने अपने आशीर्वचन में सामाजिक एकता का संदेश दिया

प्रागपुरा में कलश यात्रा के साथ विराट हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया।

पावटा। उपखंड क्षेत्र पावटा के प्रागपुरा कस्बे में कलश यात्रा के साथ विराट हिन्दू सम्मेलन का भव्य आयोजन श्री श्री 1008 मणिदासजी महाराज महंत नृसिंह मंदिर प्राणपुरा के मुख्य आतिथ्य व पंडित सोहनलाल शर्मा की अध्यक्षता एवं अमित गरिडा के सानिध्य व हरिदास महाराज बनजोडी धाम, परशुराम दास महाराज गढ़ी धाम प्रागपुरा एवं रघुवर दास महाराज के विशिष्ट आतिथ्य में हुआ।

जबकि मुख्य वक्ता के रूप में जयपुर प्रांत के प्रांत गौ सेवा प्रमुख (प्रचारक) मोहन सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत नृसिंह मंदिर से मंगल कलश यात्रा के साथ हुई, जो मुख्य बाजार होते हुए सुभाष चौक पहुंची। कलश यात्रा में सैकडों महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यात्रा के दौरान विभिन्न स्थानों पर पुष्प वर्षा की गई तथा आकर्षक आतिशबाजी भी की गई। सम्मेलन का शुभारंभ वंदे मातरम और भारत माता के जयघोष के साथ दीप प्रज्ज्वलन एवं आरती कर किया गया। इस दौरान हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ किया गया। कार्यक्रम में राजेन्द्र वशिष्ठ ने इतिहास गा रहा है गीत प्रस्तुत किया। मातृ शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए सरोज सादन और अर्पणा अठावाल ने काव्य पाठ कर उपस्थित जनसमूह को भावविभोर किया। मुख्य वक्ता मोहन सिंह ने अपने संबोधन में पंच परिवर्तन के पांच विषयों-सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक दायित्व, पर्यावरण संरक्षण और स्व बोध-पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा समाज को संगठित रहने का संदेश दिया। संत समाज ने भी अपने आशीर्वचन में सामाजिक एकता और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने पर जोर दिया।

बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास में ऐतिहासिक और दूरदर्शी कदम : गोयल

कोटपूतली। राजस्थान विधानसभा में वित्तीय वर्ष 2026-27 हेतु वित्त मंत्री के रूप में डिप्टी सीएम दिया कुमारी द्वारा बुधवार को प्रस्तुत किये भजन लाल सरकार के तृतीय बजट पर प्रतिक्रिया देते हुये भाजपा नेता मुकेष गोयल ने कहा कि यह बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक और दूरदर्शी कदम है।

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2026/1442
चूंकि प्रार्थी श्री GOPAL LAL SHARMA, D 30 HARI NAGAR NEAR JALSU HOUSE SHASTRI NAGAR JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत प्रन्यास श्री खाण्डल विप्र सेवा संस्थान ट्रस्ट J3A, JHALANA INSTITUTIONAL AREA PARYAVARAN MARG JAIPUR के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 11.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 16.04.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2026/1443
चूंकि प्रार्थी श्री GOPAL LAL SHARMA, D 30 HARI NAGAR NEAR JALSU HOUSE SHASTRI NAGAR JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत प्रन्यास श्री खाण्डल विप्र सेवा संस्थान 6 DADDHO KA BAG MOTI DUNGRI JAIPUR के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 11.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 16.04.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2026/1445
चूंकि प्रार्थी श्री RAJENDRA KUMAR SUREKA, 47 SANJAY MARG NEAR VIDHYAK PURI POLICE STATION HATHORIB SCHEME JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत प्रन्यास त्रिवेणी देवी सुरेखा चैरिटेबल ट्रस्ट 47 HATHROI JAIPUR के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 11.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 16.04.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2026/1438
चूंकि प्रार्थी श्री CHANDRA MOHAN DADHICH, 82/60, PRATAP NAGAR, SECTOR-8, SANGANER, JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत प्रन्यास सोशियल एजुकेशन अवेयरनेस एण्ड रिसर्च इन कम्यूनिटी हेल्थ सोसाइटी जयपुर, SUBHASH CHOWK, NARAYANA, JAIPUR, RAJASTHAN के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 11.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 16.04.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2026/1440
चूंकि प्रार्थी श्री NEETA SINGH, KARIRI TODABHIM KARAULI ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत प्रन्यास यूनिवर्सल एम्पावरमेंट एंड रिसर्च फॉउंडेशन, D 415 SIDDHARTH NAGAR MALVIYA NAGAR JAIPUR के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 11.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 16.04.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

आम सुचना सर्व साधारण को सुचित किया जाता है, कि कृषि भूमि खसरा नम्बर 579 रकबा 4 बीघा 18 बिस्वा, खसरा नम्बर 716 रकबा 2 बिस्वा खसरा नम्बर 717 रकबा 9 बीघा 13 बिस्वा, खसरा नम्बर 718 रकबा 6 बीघा 19 बिस्वा इस प्रकार कुल रकबा 21 बीघा 18 बिस्वा मे 1/3 हिस्सा एवं खसरा नम्बर 580 रकबा 15 बीघा 18 बिस्वा मे 3/10 हिस्सा की दो बीघा बारह बिस्वा भूमि दिनांक 29.10.2002 को या अन्य किसी दिन बैचने का इकरार चेतराम पचार पुत्र मुखराम एवं रणजीत सिंह साहरन पुत्र रतीराम से या अन्य किसी से बैचने का इकरार नही किया। फर्जी इकरारनामा 29.10.2002 की सत्य प्रति प्राप्त होने पर एफ.आई.आर दर्ज कराई जायेगी। कोई भी फर्जी इकरारनामा पर विश्वास नही करे। अन्यथा स्वयं जिम्मेदार होगा।
जयपुर
दिनांक-11/2/2026
(फराज हुसैन) एडवोकेट
मो.नः-9929797865

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (द्वितीय) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 55/2026
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि प्रार्थी श्री सुभाष सिंह पुत्र मोहर सिंह निवासी वार्ड 12 पचेरी कलां, पचेरी कला, पचेरी बडी तह. बुहाना झुंझुंनू ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत सत्यम शिवम शिक्षा समिति जखराना तह. बहरोड जिला कोटपूतली बहरोड के सम्बन्ध में जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 6.2.26 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 15.4.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (द्वितीय)
देवस्थान विभाग जयपुर

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (द्वितीय) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 57/2026
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि प्रार्थी श्री स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती शिष्य श्री महन्त केदारपुरी निवासी कल्याणकारी गौशाला संस्था 2 लगम गंगानगर ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत मन्दिर श्री महादेव जी ग्राम पनियाला तह. कोटपतली के सम्बन्ध में जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 06.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 15.04.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (द्वितीय)
देवस्थान विभाग जयपुर

खोया पाया

मेरी शॉप/प्लाट नं. A2/100/K स्कीम ट्रांसपोर्ट नगर योजना जयपुर का जेडीए द्वारा जारी आवंटन पत्र कहीं खो गया है। कृपया मिलने पर सूचित करें गोवर्धन छापरवाल पुत्र श्री सूरजमल छापरवाल 9414047367

मेरे मकान नम्बर 31/33 का ओरिजनल अलाटमेंट लेटर नम्बर 1220 दिनांक 21.02.1992 कहीं खो गया मिलने पर सूचित करें- ममता-9829815161

मेरे मकान 75/110 मानसरोवर का Possession Letter (Handing Over Taken Over) खो गया। मिलने पर सूचित करें-9887370009

राजीव गांधी सद्भावना एवं ग्रामोत्थान संस्थान सोडाला, जयपुर रजिस्ट्रेशन क्रमांक 340/जयपुर/2003-04 हमारी संस्था का विधान नियमावली पत्रावली, रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र खो गया है। जिस किसी को भी मिले कृपया सूचित करें-9672558102

मेरे प्लॉट नं. 314, जॉयमेक्स गार्डन-ए, ग्राम महला, मौजमाबाद जयपुर का जेडीए का मूल साइट प्लान कहीं गुम हो गया है मिलने पर सूचित करें- तरूण चौधरी मो. 9829511993

NAME CHANGE

I Hemraj Sharma Son Of Shimbhu Dayal Sharma My Army No. 6949710H Rank NK/DVR 18 ROU c/o 56-APO of Village Duhar Chogan Teh. Thanagazi Distt Alwar State Rajasthan. I have Changed my mother name Gandi Devi to Gendi Devi to all future will be known as Gendi Devi.

नोटिस वास्ते जाहिर करने वजह
(Civil Procedure Code AppendiX 'H' Form No. 4)
अज किराया अधिकरण, पाली (राज.)
अर्जीदार :- ईश्वरचन्द
बनाम
प्रत्यर्थीगण :- विशनदास व अन्य
प्रकरण संख्या :- 27/2024
बाबत् - याचिका अन्तर्गत धारा 9 (क) (झ) राजस्थान किराया नियंत्रण अधिनियम, 2001
बनाम
विशनदास पुत्र श्री प्रेमचन्दजी, जाति सिन्धी, पता: झेलम अपार्टमेन्ट, ब्लॉक नं. एच/19, द्वारकापुरी सर्किल के पास, प्रताप नगर, सांगानेर, पोस्टः- जयपुर (राज.) 302 033
क्योंकि अर्जीदार ने इस न्यायालय में याचिका अन्तर्गत धारा 9 (क) (झ) राजस्थान किराया नियंत्रण अधिनियम, 2001 की दरख्वास्त पेश की है, जिसकी नकल अर्जीदावा मय दस्तावेज एवं शपथ-पत्र साथ संलग्न है।
लिहाजा आपको इत्तला दी जाती हैं कि तारीख 30 माह 03 सन् 26 बरोज 10.00 AM वार ...... बजे दिन को अदालत हाजा में असालतन या अदालतन हाजिर होकर दरख्वास्त के खिलाफ वजह जाहिर करो. वरना दरख्वास्त मजकूर एक तरफा सुना व फैसला की जावेगी।
बसब्त मेरे दस्तखत व मुहर अदालत आज तारीख 03 माह 02 सन् 2026 जारी किया।
मुहर
वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश एवं मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, पाली (राज.)

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक:9466 जाहिर आम-सूचना दिनांक:01.01.2026
राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 32/07 (HIG), (एरिया 236.25 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री शशी प्रभा गुप्ता पुत्र श्री ललित कुमार गुप्ता को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 1622 दिनांक 21.12.1991 एवं संशोधित आवंटन पत्र क्रमांक 5303 दिनांक 25.01.1993 को जारी किया गया। डॉ. सुनिता बाखरू पत्नी श्री प्रकाश बाखरू के पक्ष में उक्त आवास का नियमितिकरण पत्र क्रमांक 163 दिनांक 29.12.1994 के द्वारा किया गया। डॉ. सुनिता बाखरू के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्र दिनांक 31.12.1994 को उप पंजीयक सांगानेर, जयपुर के यहां पंजीकृत करवाये गये। डॉ. सुनिता बाखरू द्वारा उक्त आवास को दिनांक 11.02.2005 के द्वारा श्री संदीप कुमार टॉक पुत्र श्री बद्री नारायण टॉक को विक्रय कर उप पंजीयक-सांगानेर, जयपुर के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। श्री संदीप कुमार टॉक द्वारा उक्त आवास को दिनांक 12.05.2022 के द्वारा श्री मुबारक हुसैन पुत्र श्री अलताफ हुसैन को विक्रय कर उप पंजीयक-जयपुर-सप्तम, के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। क्रेता/केती श्री मुबारक हुसैन पुत्र श्री अलताफ हुसैन द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास में अपना नाम मण्डल रिकार्ड में दर्ज कराने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नही है, श्री मुबारक हुसैन पुत्र श्री अलताफ हुसैन का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
सम्पदा प्रबन्धक वृत्त-प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

कार्यालय उप आवासन आयुक्त राजस्थान आवासन मण्डल वृत अलवर
आवश्यक सूचना
आवास संख्या 1/42, एन.ई.बी.82 योजना, अलवर जो कि मूलतः श्री जवाहर लाल शर्मा पुत्र श्री एम.पी. शर्मा को आवंटन पत्रांक 9201 दिनांक 01.12.1983 के द्वारा आवंटित किया गया था। मण्डल द्वारा आवास का अदेय प्रमाणपत्र क्रमांक 658 दिनांक 27.05.2003 को श्री जवाहर लाल शर्मा के नाम जारी कर दिया गया। श्री जवाहर लाल शर्मा द्वारा आवास की रजिस्ट्री स्वयं के नाम से दिनांक 16.05.2013 को उप पंजीयक कार्यालय अलवर में पंजीकृत करवाई जा चुकी है। श्री जवाहर लाल शर्मा की धर्मपत्नि श्रीमती लक्ष्मी शर्मा की मृत्यु दिनांक 06.01.2006 को एवं श्री जवाहर लाल शर्मा की मृत्यु दिनांक 13.08.2022 को हो जाने के उपरांत उनके उत्तराधिकारी पुत्र द्वारा प्रस्तुत पंजीकृत रिलीजडीड (हकत्याग पत्र) दिनांक 04.01.2024 एवं आवश्यक दस्तावेज के आधार पर मण्डल के कार्यालय आदेश पत्रांक 1125/57 दिनांक 08.04.2024 के द्वारा आवास का नाम प्रतिस्थापन हस्तांतरण श्री राहुल शर्मा पुत्र स्व. श्री जवाहर लाल के पक्ष में जारी कर दिया गया। श्री राहुल शर्मा द्वारा उक्त आवास का बेचान जरिये पंजीकृत बयनामा दिनांक 22.12.2025 को श्री चन्द्रशेखर शर्मा पुत्र स्व. श्री शिव दत्त शर्मा को कर दिया गया। श्री चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा द्वारा उक्त आवास का मण्डल नियमानुसार लीज हस्तांतरण किये जाने हेतु आवश्यक प्रपत्र एवं शुल्क जमा करा कर आवेदन किया गया है। अतः जरिये इस विज्ञप्ति यह आग्रह किया जाता है कि उक्त आवास संख्या 1/42, एन.ई.बी. 182 योजना, अलवर के सम्बन्ध में पिता, पुत्र, पुत्री, भाई, अन्य किसी रिश्तेदार व्यक्ति विशेष या हितकारी को एंव आम व्यक्ति विशेष को उजर एतराज हो तो वह इस विज्ञप्ति के प्रकाशित होने के 10 दिवस में राजस्थान आवासन मण्डल वृत अलवर में अपना एतराज लिखित में प्रस्तुत करें अन्यथा श्री चन्द्रशेखर शर्मा पुत्र स्व. श्री शिव दत्त शर्मा के पक्ष में आवास के लीज हस्तांतरण की कार्यवाही की जावेगी।
उप आवासन आयुक्त, राजस्थान आवासन मण्डल वृत अलवर

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक:9814 जाहिर आम-सूचना दिनांक: 19.01.2026
राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 35/84 (MIG-A), (एरिया 90.000 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री रामबाबू शर्मा पुत्र स्व. श्री सत्यदेव शर्मा को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 1080 दिनांक 28.06.2006 एवं संशोधित आवंटन पत्र क्रमांक 2235 दिनांक 19.03.2010 को जारी किया गया। श्री ओम प्रकाश शर्मा पुत्र श्री मोहनलाल शर्मा एवं श्रीमती रेखा शर्मा पत्नी श्री ओम प्रकाश शर्मा के पक्ष में उक्त आवास का नियमितिकरण पत्र क्रमांक 2007/749 दिनांक 28.04.2010 के द्वारा किया गया। श्री ओम प्रकाश शर्मा एवं श्रीमती रेखा शर्मा के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्र दिनांक 31.05.2010 को उप पंजीयक सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहां पंजीकृत करवाये गये। श्री ओम प्रकाश शर्मा एवं श्रीमती रेखा शर्मा द्वारा उक्त आवास को दिनांक 08.06.2011 के द्वारा श्री मुबारक हुसैन पुत्र श्री अल्ताफ हुसैन को विक्रय कर उप पंजीयक-चतुर्थ, जयपुर के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। श्री मुबारक हुसैन द्वारा उक्त आवास को दिनांक 18.12.2025 के द्वारा सुश्री अनिशा बानों पुत्री श्री अल्ताफ हुसैन को उपहार कर उप पंजीयक- अष्टम, मानसरोवर, जयपुर के यहां उपहार पत्र का पंजीकृत करवाया गया। क्रेता/क्रेती सुश्री अनिशा बानों पुत्री श्री अल्ताफ हुसैन द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास के रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराने बाबत आवेदन पत्र प्रस्तुत किया हैं। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है, सुश्री अनिशा बानों पुत्री श्री अल्ताफ हुसैन का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
सम्पदा प्रबन्धक वृत्त-प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

COLLEGE OF AGRICULTURE
(S.K.N. Agriculture University-Jobner)
Bhusawar – Bharatpur (Rajasthan)-321406
No. :- F.( )/COAB/Store/2026/938 Date :- 09/02/2026
NOTICE INVITING BID
Bid for open tender regarding Laboratory & Other items tender are invited from interested bidders upto 11.00 AM, 17.02.2026 other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **http://sppp.raj.nic.in** & of the state; **www.sknau.ac.in** University website.
NIB code SKN2526A0416 and UBN is SKN2526GSOB00451
Raj.Samwad/C/25/19619
DEAN

OFFICE OF DISTRICT PROJECT MANAGER, RGAVP, KARAULI (RAJ)
Sr. no.-8811 Date:- 07.02.2026
Notice inviting E-Tender
E Tender for Hiring of Event management agency/ Individual/firm for Rajsakhi karauli Fair 2026 are invited from interested bidders up to 12.00 PM of 13.02.2026 Other particulars of the tender may be visited of procurement portal http://sppp.rajasthan.gov.in, https://eproc.rajasthan.govi.in and Departmental websiste http://www.rajeevika.rajasthan.gov.in
UBN. RGA2526SLOB00363
DPM

राजस्थान सरकार
जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, करौली
क्रमांकः-एफ.( )/निविदा./2026/2097 दिनांकः-11.02.2026
खुली निविदा सूचना संख्या-01/2025-26
स्थानीय कार्यालय की ओर से पंच गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत करौली, धौलपुर सेण्ड स्टोन से निर्मित मोमेन्टो की आपूर्ति किये जाने हेतु इच्छुक विनिर्दिष्ट पंजीकृत बोली दाता/संवेदकों/विर्निमाताओं (अनुमानित लागत 4.50 लाख) से खुली बोली दिनांक 18.02.2026 समय प्रातः 11 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण स्थानीय कार्यालय एवं वेबसाईट https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखा एवं डाउनलोड किया जा सकता है।
NIB No. DSI2526A0065
UBN No. DSI2526GSOB00083
महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र करौली

कार्यालय नगर निगम जयपुर
(चौगान स्टेडियम, गणगौरी बाजार, जयपुर)
क्रमांक :- जसअ/2025/490 दिनांकः 09.02.2026
ई-निविदा सूचना संख्या 163 से 174/2025-26
केन्द्र एवं राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत "AA","A" श्रेणी के ठेकेदारों एवं नगर निगम, जयपुर के पंजीकृत निविदाताओं से अधिशाषी अभियन्ता हवामहल-आमेर जोन से संबंधित विकास कार्यो हेतु निविदाए आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम, जयपुर की वेबसाईट www.jaipurmc.org एवं व राजस्थान सरकार के पोर्टल http://sppp.rajasthan.gov.in तथा eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व ड़ाउनलोड़ की जा सकती है। उक्त निविदाओं को (sppp.rajasthan.gov.in) पोर्टल पर अपलोड करवा दिया गया है।
JMC2526WSOB02747 to JMC2526WSOB02758
अधिशाषी अभियन्ता हवामहल-आमेर जोन नगर निगम, जयपुर
राज.संवाद/सी/25/19540

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
रामकिशोर व्यास भवन, इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004
क्रमांक : F-JDA/Zone 12/2026/D-151 **आम सूचना**
आवेदक द्वारा ऑनलाईन आवेदन क्रमांक 224900 दिनांक 29/05/2025 को निम्नांकित भूखण्ड का Issue of [Lease/ Free Hold] Deed (E-Patta) जारी करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किये गये है

क्र.सं	आवेदक का नाम	मूल आवंटी/ लीजधारक का नाम	भूखण्ड संख्या	भूखण्ड क्षेत्रफल	गृ.नि.स.स./निजी खातेदारी/जविप्रा योजना	योजना का नाम	सेवा जिसके लिए आवेदन किया गया	कार्यवाही हेतु प्रस्तुत दस्तावेज
1	PUSHPA DEVI BAGLA W/o PRABHU DAYAL BAGLA	श्रीमती पुष्पा देवी बाघला पत्नि श्री प्रभुदयाल बाघला	122	216.66 SQ. YARD	Cooperative	Ganesh Nagar-9 Extension Sector/ Block	Issue of [Lease/ Free Hold] Deed (E-Patta)	सोसाईटी द्वारा जारी आवंटन पत्र, साईट प्लान, रसीद, विकास समिति द्वारा जारी एन.ओ.सी., सोसाईटी द्वारा जारी प्रमाण पत्र, मौका फोटो इत्यादि के आधार पर।

उक्त भूखण्ड का आवेदक के पक्ष में Issue of [Lease/ Free Hold] Deed (E-Patta) जारी करने पर किसी व्यक्ति, वारिस एवं संस्था को आपत्ति हो तो मय साक्ष्य के इस सूचना की प्रकाशन तिथि से 7 दिवस के भीतर jda.rajasthan.gov.in पर जाकर Objection module के माध्यम से आपत्ति online सबमिट करें, अन्यथा आपत्ति प्रस्तुत नहीं करने की दशा में उक्त भूखण्ड की नियमानुसार कार्यवाही कर दी जावेगी
उपायुक्त जोन-12, जविप्रा, जयपुर

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
रामकिशोर व्यास भवन, इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004
आम सूचना
क्रमांक: F-JDA / Zone 11/2026 /D-237
आवेदक द्वारा ऑनलाईन आवेदन क्रमांक 264923 दिनांक 03/11/2025 को निम्नांकित भूखण्ड का Name Transfer जारी करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किये गये है

क्र.सं.	आवेदन का नाम	मूल आवंटी लीजधारक लीजधारक	भूखण्ड संख्या	भूखण्ड क्षेत्रफल	गृ.नि.स.स./ निजी खातेदारी/ जविप्रा योजना	योजना का नाम	सेवा जिसके लिए आवेदन किया गया	कार्यवाही हेतु प्रस्तुत दस्तावेज
1	Sushil Kumar Jangid S/o SHRI UDAY CHAND JANGID	श्रीमती पल्लवी पारीक पत्नी श्री पवन पारीक	370	115.50 SQ. METER	Private	SHUBHANGAN -SANDEEP Sector/ Block-	Name Transfer	एक बार से अधिक बेचान एवं रजि. विक्रय पत्रों के आधार पर

उक्त भूखण्ड का आवेदक के पक्ष में Name Transfer जारी करने पर किसी व्यक्ति, वारिस एवं संस्था को आपत्ति हो तो मय साक्ष्य के इस सूचना की प्रकाशन तिथि से 7 दिवस के भीतर jda.rajasthan.gov.in पर जाकर Objection module के माध्यम से आपत्ति online सबमिट करें, अन्यथा आपत्ति प्रस्तुत नहीं करने की दशा में उक्त भूखण्ड की नियमानुसार कार्यवाही कर दी जावेगी।
प्रतिलिपिः-

दिल्ली से आये दल के समक्ष स्कूल में प्री प्राइमरी के छात्रों का बर्थडे सेलिब्रेशन हुआ

सांभरझील, (निसं)। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद की ओर से पीएम श्री दरबार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सांभर लेक की शैक्षिणक गुणवत्ता, उपलब्धियों, भामाशाहों के सहयोग, स्वच्छ-हरित विद्यालय कैंपस और बेहतरीन विद्यालय संचालन की व्यवस्थाओं को देखने के लिए दिल्ली सरकार के 25 जिला, ब्लॉक स्तरीय शिक्षा अधिकारियों का दल जिला समन्वयक अनुज कुमार गौतम के नेतृत्व में विद्यालय पहुँचा। विद्यालय में कम्युनिटी कनेक्ट प्रोग्राम के तहत प्री प्राइमरी के विद्यार्थियों का बर्थडे सेलिब्रेशन, मदर कंपटीशन करवाया गया। विशाल पुस्तकालय भवन में स्थानीय विद्यालय के शिक्षकों और दिल्ली के शिक्षाविदों के मध्य शैक्षिक विचार विमर्श हुआ। लाइब्रेरी, आईटी, हेल्थ और पीएम श्री लैब की गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा दिया गया। यहां के नवाचारों की सभी ने प्रशंसा की। स्वच्छता का बेहतरीन प्रबंधन, कक्षाकक्ष में स्मार्ट बोर्ड से अध्यापन, बेहतरीन शिक्षाप्रद फ्लेक्स-चित्रों और भामाशाहों के द्वारा किए गए विकास के लिए प्रधानाचार्य की प्रेरणा और शाला प्रशासन की सक्रियता को मुक्त कंठ से सराहा गया। अंत में समस्त शिक्षा अधिकारियों द्वारा विद्यालय की अनेक गतिविधियों को दिल्ली सरकार के शैक्षिक क्षेत्र में भी लागू करने की अनुशंसा करने की बात कही। प्रधानाचार्य टीकम चंद मालाकार व स्टाफ के द्वारा आगंतुकों का सम्मान किया।

बेहतरीन विद्यालय संचालन की व्यवस्थाओं को देखने के लिए दिल्ली सरकार के 25 जिला, ब्लॉक स्तरीय शिक्षा अधिकारियों का दल जिला समन्वयक अनुज कुमार गौतम के नेतृत्व में विद्यालय पहुँचा।

■ दिल्ली के शिक्षाविदों ने दरबार विद्यालय का निरीक्षण किया

संक्षिप्त

सरकारी क्वार्टर में आग लगी

भरतपुर (निस)। शहर की रेलवे कॉलोनी स्थित सरकारी क्वार्टर में देर रात आग लग गई, जिससे दो स्कूटी और घरेलू सामान जलकर खाक हो गया। आग बुझाने के दौरान बाप-बेटे झुलस गए। आग लगने की सूचना मिलते ही आसपास के पड़ोसी मौके पर पहुंचे और आग बुझाने का प्रयास किया। आग पर काबू पाने के लिए अग्निशमन को सूचित किया गया, लेकिन तब तक पीड़ित और पड़ोसियों ने आग पर काबू पा लिया था। आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी थी। आग लगने से करीब लाखों रुपए का नुकसान हुआ है। गनीमत रही कि घर में मौजूद बेटी पढ़ाई कर रही थी और उसने आग देखकर सभी को जगाया, जिससे बड़ा हादसा टल गया। विमता कुमारी ने बताया कि रेलवे कॉलोनी में क्वार्टर नंबर 154/ए में बिजली के शॉर्ट सर्किट के चलते आग लग गई.यह देर रात 11रू30 की घटना है. घर के सभी सदस्य सोए हुए थे सिर्फ बच्ची पढाई कर रही थी जब बच्ची पानी पीने के लिए बाहर आई तो देखा कि शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगी हुई है. उसने सभी को सदस्यों को जगाया उसके बाद हम लोगों ने सामान को कमरों से बाहर निकाला. लेकिन उससे पहले बरामदे में खडी दो स्कूटी के साथ घरेलू सामान जलकर खाक हो गया. आग को देखकर के पड़ोसी भी आ गए और उन्होंने भी आग बुझाने का प्रयास किया अग्निशमन को सूचित कर दिया गया ।

'बजट किसान और कृषि को समर्पित'

शाहपुरा। राज्य सरकार का आम बजट किसान ओर कृषि के लिए समर्पित रहा है। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता जगदीश सैनी उर्फ गुड्डू ने कहा कि राज्य सरकार का आम बजट किसान ओर कृषि के लिए समर्पित बजट है। ये बजट खेती को ताकत, किसान को सीधा समर्थन है। 50,000 किसानों को तारबंदी के लिए 288 करोड़ का अनुदान दिया जाएगा। अगले वर्ष 50,000 सोलर पंप लगाए जाएंगे, 1500 करोड़ खर्च होंगे। 8000 डिग्गियां और 36,000 फार्म पोंड के लिए अनुदान दिया जाएगा।

शपथ ग्रहण समारोह आज

निवाई। बार एसोसिएशन के तत्वावधान में कटारा पैराडाइज में 13 फरवरी को बार एसोसिएशन की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया जाएगा।

मांगीलाल महावर बने प्रदेश उपाध्यक्ष

निवाई। अखिल भारतीय कोली समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरेंद्र कश्यप एवं राष्ट्रीय महामंत्री डीपी वर्मा के निर्देशानुसार प्रदेश अध्यक्ष आरसी वर्मा एवं प्रदेश महामंत्री नारायणसहाय कोली ने संगठन में निवाई निवासी मांगीलाल महावर को प्रदेश उपाध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया है। जिनको नियुक्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मेधावी विद्यार्थियों को टैबलेट देने की सराहना

जयपुर। 610956 करोड़ रूपये के इस बजट में गत वर्ष से 9.37 प्रतिशत की वृद्धि है। प्रो.रमेश बैरवा प्रदेश संयोजक राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (रुक्टा डेमोक्रेटिक ने कहा कि मेधावी विद्यार्थियों को टैबलेट,9वीं की छात्राओं को साइकिल,कक्षा 1-8 के विद्यार्थियों को मुफ्त यूनिफॉर्म,छात्राओं के लिए टायलेट, कॉलेजों को क्रमोन्नत के प्रावधान अच्छे हैं लेकिन सबसे ज्यादा जरूरी तो बड़ी संख्या में जानलेवा जर्जर विद्यालय भवनों के लिए पर्याप्त बजट आवंटन तथा स्कूल एवं कॉलेजों में बड़ी संख्या में रिक्त शिक्षक, पीटीआई, लाइब्रेरियन एवं कर्मचारियों की भर्ती की घोषणा थी। कई वर्षों से कार्यरत विद्या संबल गेस्ट फेकल्टी को स्थाई करने की उम्मीद थी।

श्वेता शर्मा को पीएचडी की उपाधि

पावटा। जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के शिक्षा संकाय ने स्थानीय निवासी श्वेता शर्मा को पीएचडी की उपाधि प्रदान की है। श्वेता ने अपना शोध कार्य डा.विष्णु शर्मा के कुशल निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरा किया। उनके शोध का विषय "अभिभावक संलग्नता, साथी दबाव व शैक्षिणक तनाव का रांची के उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की शैक्षिणक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन" रहा। अपने शोध के माध्यम से उन्होंने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और उनकी शैक्षिणक सफलता पर पड़ने वाले सामाजिक व पारिवारिक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण किया है।

स्किल ट्रेनिंग सेन्टर का निरीक्षण

टोंक। जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने बुधवार को नगर पालिका उनियारा में राजस्थान कौशल एवं राजीविका विकास (आरएसएलडीसी) द्वारा संचालित स्किल ट्रेनिंग सेन्टर का औचक निरीक्षण किया।

जिला कलेक्टर ने निरीक्षण के दोरान ट्रेनिंग सेन्टर की व्यवस्थाओं, सिखाई जा रही गतिविधियों का अवलोकन किया।

उन्होंने छात्राओं से संवाद कर उन्हें सिखाई जा रही हैंड एंब्रोइडिंग एवं सिलाई कार्य की जानकारी ली साथ ही संस्था के रिकॉर्ड को भी जांचा।

जिला कलेक्टर ने संस्था संचालक से वर्तमान में संचालित स्किल गतिविधि, छात्राओं की संख्या, प्रतिदिन छात्राओं की उपस्थिति के बारे में विस्तार से जानकारी ली। संस्था में छात्राओं की कम उपस्थिति एवं रिकार्ड का सही प्रकार से संधारण नही होने को उन्होंने गंभीरता से लिया।

उन्होंने उनियारा तहसीलदार पूजा मीना को समस्त रिकार्ड की बारीकी से जांच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

प्रसन्न सागर महाराज का गुन्सी में मंगल प्रवेश

निवाई/गुन्सी। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में बुधवार को आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ससंघ का सहस्त्र कूट जिनालय विज्ञा तीर्थ गुन्सी में मंगल प्रवेश हुआ। अखिल भारतीय जैन धर्म प्रचारक विमल पाटनी एवं हितेश छाबड़ा ने बताया कि आचार्य प्रसन्न सागर महाराज संघ बुधवार को विज्ञा तीर्थ गुन्सी पहुंचे। जहां विज्ञा तीर्थ कमेटी के कार्याध्यक्ष सुनील भाणजा, नवरत्न टोंग्या, अमित कटारिया, विमल पाटनी, इन्दू मित्तल, कमलेश झिलाय, लालचंद कठमाणा, अनिल बनेठा, जैन सोशल ठ्ठप के हितेश छाबड़ा, राजस्थान जैन सभा उपाध्यक्ष चेतन निमोडिया, मनीष बैद, त्रिलोक रजवास, अशोक भाणजा, महेश मोठूका, नेमीचंद सिरस, अनिल भाणजा व रवि भाणजा सहित कई श्रद्धालुओं ने आचार्य प्रसन्न सागर महाराज का पाद् प्रक्षालन कर अगुवानी की।

प्रतिभाएं देश की धरोहर : प्रधानाचार्य गिरिराज प्रसाद गुर्जर

निवाई। शहर की शिवाजी कॉलानी स्थित आदर्श उच्च माध्यमिक विद्या मंदिर में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि पीएम श्री राउमावि के प्रधानाचार्य गिरिराज प्रसाद गुर्जर रहे व अध्यक्षता कर रहे त्रिलोकचन्द जैन ने मां शारदे के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित करके किया। मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य गिरिराज प्रसाद गुर्जर ने कहा कि प्रतिभाएं देश की धरोहर है। इनका संरक्षण करना हम सब का दायित्व है। उन्होंने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कडी मेहनत करके अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करें और अपने माता-पिता व गुरूजनों को नाम रोशन करें। विद्यालय के प्रधानाचार्य मोहनलाल स्वामी ने बताया कि सत्र-2024-25 में 10 बोर्ड परीक्षा में 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा रिद्धिमा जारोलिया व दिव्या वर्मा को पारितोषिक के रूप में 21-21 हजार की नकद राशि व 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त छात्र हरिओम शर्मा, दिक्षांत, विजेन्द्र चौधरी, रितेश मीणा व छात्रा कोमल शर्मा, मानसी राजवंशी व अलमेषा सैनी को 11-11 हजार रूपए की नकद राशि देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार 12 बोर्ड परीक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त हर्षिता शर्मा, अरविन्द बैरवा, रोहित मीणा, ललिता सैनी व आयुषी कुमावत को 11-11 हजार रूपए की नकद राशि व प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उत्कृष्ट परिणाम देने वाले शिक्षक महेशचन्द स्वामा व मनीषा रूरा को 2100 व 1100 के नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र दिया।

निवाई के आदर्श उच्च माध्यमिक विद्या मंदिर में आयोजित सम्मान समारोह प्रतिभाओं को पुरस्कृत किया।

विकसित के संकल्प को साकार करने वाला ऐतिहासिक बजट

चौमूं / कालाडेरा। राजस्थान सरकार ने प्रदेश के सर्वांगीण विकास और 8 करोड़ प्रदेशवासियों की खुशहाली को समर्पित वित्तीय वर्ष 2026-27 का बजट बुधवार को विधानसभा में प्रस्तुत किया। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व विधायक रामलाल शर्मा ने बजट प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री के विजन को धरातल पर उतारते हुए, उप मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दीया कुमारी द्वारा प्रस्तुत यह बजट आत्मनिर्भर राजस्थान की नींव को मजबूत करने वाला एक गारंटी कार्ड है। यह सर्वस्पर्शी बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास का आधार बनेगा। सरकार एक ऐसे समृद्ध राजस्थान की नींव रख रही हैं जहाँ विकास का लाभ अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचेगा। बजट घोषणा में विधानसभा क्षेत्र चौमूं के लिए श्री मालेश्वर नाथ जी मंदिर की सड़क निर्माण के लिए 4 करोड सहित अन्य सड़कों के निर्माण के लिए 5.80 करोड़ रूपये और 220 केवी जीएसएस निर्माण कार्य - मंडा (चौमू), 33/11 केवी जीएसएस निर्माण कार्य - सामोद (चौमू), चौमू में नवीन औद्योगिक पार्क की स्थापना करने की घोषणा की गई है। इसके साथ साथ यह बजट केवल वित्तीय लेखा-जोखा नहीं, बल्कि राज्य के गरीब, युवा, महिला और अन्नदाता (किसान) के उत्थान का एक ठोस रोडमैप है। सरकार का स्पष्ट विजन है। इसके साथ इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए 1800 करोड़ की लागत से नई सड़के एवं ब्रिज, 15 नए रेलवे ओवर ब्रिज, किसानों के लिए सस्ती बिजली, 25 हजार महिलाओं और युवाओं को मिनी ई मित्र पर अधिकृत,युवाओं के लिए वोकेशनल कोर्स आदि, प्रदेश में राजस्थान स्टेट टेस्ट एजेंसी , 8वे वेतन आयोग के लिए कमेटी, भर्ती प्रकिया पारदर्शी बने प्रयास, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना पर एक हज़ार करोड़, तीस हज़ार युवा लाभान्वित होंगे, ऑनलाइन टेस्ट सेंटर बनेंग, व्यवसायिक शिक्षा प्रत्येक जिले में एक विधालय, आठवीं, दसवी और 12वी के चयनित विद्यार्थियों को टैब खरीदने में बीस हज़ार की सहायता, स्कूल्स के मरम्मत और जीर्णोद्धार हेतु 550 करोड़, चार सौ करोड़ से नए स्कूल भवन निर्माण, 22746 आंगनबाडी केन्द्रों में खेल सामग्री और जादुई पिटारा उपलब्ध कराया जाएगा।

■ पूर्व विधायक रामलाल शर्मा ने बजट को लेकर दी प्रतिक्रिया

बजट में फुलेरा विधानसभा के साथ सौतेला व्यवहार

फुलेरा। राज्य सरकार द्वारा पेश किए गए बजट को लेकर फुलेरा विधायक एवं ज़िलाध्यक्ष जिला कांग्रेस कमेटी जयपुर देहात विद्याधर सिंह ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि इस बजट में सरकार की दलगत राजनीति साफ तौर पर नजर आती है। विधायक विद्याधर सिंह ने कहा कि इतिहास में पहली बार फुलेरा विधानसभा को बजट में कोई भी सौगात नहीं मिली, जो क्षेत्र के साथ घोर अन्याय है। उन्होंने बताया कि पर्यटन नगरी सांभर के विकास के लिए बजट में विशेष प्रावधान की पूरी उम्मीद थी, लेकिन सरकार ने इस महत्वपूर्ण क्षेत्र की पूरी तरह अनदेखी की है। उन्होंने आगे कहा कि फुलेरा उप जिला अस्पताल के नवीन भवन, क्षेत्र की जर्जर सड़कों, पेयजल व बिजली आपूर्ति जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए भी बजट में कोई प्रावधान नहीं किया गया, जिससे आमजन में भारी निराशा है। विधायक ने आरोप लगाया कि बजट में फुलेरा विधानसभा के साथ सौतेला व्यवहार किया गया है और राज्य सरकार के इस बजट ने क्षेत्रवासियों की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी जनता के हक के लिए सड़क से सदन तक संघर्ष जारी रखेगी।

मर्डर व मारपीट के मामले में 23 लोगों को सजा

भरतपुर (निस)। भरतपुर की अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश संख्या-3 ने मारपीट और मर्डर के मामले में 23 लोगों को सजा सुनाई है। जिसमें 12 लोगों को आजीवन कारावास और 11 को 7-7 साल की सजा सुनाई है। फैसले के दौरान कोर्ट दोनों पक्षों के लोगों की भीड़ लग गई। साल 2015 में दो पक्षों में झगड़ा हुआ था। जिसमें एक व्यक्ति की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। अपर लोक अभियोजक धर्मेंद्र कुमार ने बताया- घटना चिकसाना थाना इलाके के पीपला गांव की है। 16 अगस्त को दयाचंद ने थ्प्त् दर्ज करवाते हुए बताया कि मेरा भतीजा गांव के ही बस स्टैंड पर खडा था। इस दौरान गांव के ही सौदान सिंह ने अपने परिजनों के साथ मिलकर मेरे भतीजे राकेश के साथ बुरी तरह मारपीट कि जब हमारे परिवार के लोग उसे बचाने के गए तो, सौदान सिंह के परिजनों ने राकेश के परिजनों को भी पीटा। मारपीट के दौरान सौदान सिंह राकेश के गोली मार दी। घटना में राकेश की मौत हो गई। साथ ही हमारे परिजनों के भी चोटें आई। दयाचंद ने सौदान सिंह सहित 15 लोग गुलाब, मुकेश, होरी लाल, गुड्डू, करतार, चरण सिंह, ओमी, लाखन, भगवान सिंह, रघुवीर, महेश, खजान, भोजा, सौदान, राजू के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई।15 लोगों के खिलाफ चालान हुआ पेश जिसके बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू की और 15 लोगों के खिलाफ चालान कोर्ट में पेश किया। कोर्ट की तारीखों के दौरान भोजा, सौदान, राजू की मौत हो गई। 12 लोगों को आज कोर्ट ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई। जो तीन लोगों की मौत हो चुकी है कोर्ट ने उन्हें भी दोषी माना था।

अपर लोक अभियोजक धर्मेंद्र कुमार ने बताया – दूसरे पक्ष श्याम लाल ने भी 16 अगस्त को चिकसाना थाने में मामला दर्ज करवाते हुए बताया था कि दयाचंद और उसके परिजनों ने मेरे परिवार के ऊपर हमला किया। जिसमें मेरे परिवार के कई लोगों के चोटें आई। श्यामलाल ने 54 लोगों के खिलाफ थ्प्त् दर्ज करवाई थी। पुलिस ने मामले की जांच की और 11 लोगों को आरोपी माना। इस मारपीट में तेजपाल, अटल बिहारी, तेजसिंह, टीकम, दयाचंद, रघुवीर, प्रभु, वीरेंद्र, चरण सिंह, दिनेश, नरेंद्र को दोषी माना। पुलिस ने 11 लोगों के खिलाफ कोर्ट में चालान पेश किया। कोर्ट में केस चला और आज कोर्ट ने 11 लोगों को दोषी मानते हुए सभी को 7-7 साल की सजा सुनाई है।

■ 12 लोगों को आजीवन कारावास

'परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए छात्र मोबाइल फोन से दूरी रखें'

शाहपुरा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर जिला जयपुर अध्यक्ष भँवरलाल बुगालिया एवं तालुका विधिक सेवा समिति शाहपुरा अध्यक्ष ललिता शर्मा अपर जिला एवं सत्र सैशन न्यायाधीश प्रथम के निर्देशन में अधिकार मित्र दिनेश कुमार शर्मा ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नींझर में वरिष्ठ नागरिकों के कानूनी अधिकार नालसा योजना – 2016 पर शिविर आयोजित किया। इस शिविर की अध्यक्षता प्रधानाचार्य प्रकाश चंद्र जाट द्वारा की गई। उन्होंने परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए विद्यार्थियों को टीप्स की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आपको किसी भी स्थिति में मोबाइल फोन से दूरी बनाकर रखनी है। किसी भी असामाजिक तत्वों के मध्य कोई भी व्यवहार नहीं रखें। समय की उपयोगिता को समझें, साईबर ठगी की घटनाओं पर तत्काल हेल्पलाइन नंबर 1930 पर सूचित करें। आप किसी भी अनजान व्यक्ति से दूरी बनाते रखकर ही परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते है। इस शिविर में महिला उत्पीडन समिति की अध्यक्ष मीनू सैनीभी उपस्थित रही। इस अवसर पर अधिकार मित्र दिनेश कुमार शर्मा ने बताया कि वरिष्ठ नागरिक जिनकी उम्र 60 वर्ष से अधिक है, उसे नि:शुल्क कानूनी सहायता, माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण कल्याण अधिनियम 2007के तहत, संतान, रिस्तेदारो से मांग कर सकते हैं, एवं उन्हें गरिमा पूर्ण जीवन का अधिकार है। इसमें भरण-पोषण का दावा, एवं स्वयं द्वारा अर्जित सम्पत्ति की सुरक्षा, निशुल्क कोर्ट फीस कानूनी सहायता, राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से शीध्र प्रकरणों का निपटारा किया जाता है। यदि संतान या रिस्तेदार वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल, चिकित्सा, नहीं कराते, या मानसिक, शारीरिक शोषण, धमकी, उपेक्षा, या प्रताड़ित करने पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा उन्हें उन्हें अपनी स्वयं अर्जित संपत्ति से बेदखल करने के लिए सक्षम मजिस्ट्रेट को लिखित सूचना देने पर उन्हें बेदखल कर सकते है। जिला विधिक सेवा हेल्पलाइन नंबर 15100 पर भी अपनी समस्याओं को सूचित कर सकते है। सभी पुलिस थाना पर वरिष्ठ नागरिकों के लिए हेल्प डेस्क स्थापित की गई है। उनसे सम्पर्क कर सहायता प्राप्त कर सकते है।

तालुका विधिक सेवा समिति शाहपुरा अध्यक्ष ललिता शर्मा अपर जिला एवं सत्र सैशन न्यायाधीश प्रथम के निर्देशन में शिविर का आयोजन हुआ।

■ वरिष्ठ नागरिकों के कानूनी अधिकार जागरूकता शिविर आयोजित

सार-समाचार

सरिस्का साहित्य संवाद का पोस्टर जारी

अलवर। आगामी 16-17 फरवरी को रिवाज रिसॉर्ट, कंपनी बाग, अलवर में आयोजित होने जा रहे सरिस्का साहित्य संवाद के प्रथम सांस्कृतिक साहित्य महोत्सव के संदर्भ में आज पोस्टर विमोचन एवं प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजन समिति ने कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा, उद्देश्य एवं प्रमुख आकर्षणों की जानकारी साझा की आयोजकों ने बताया कि यह दो दिवसीय आयोजन प्रकृति और साहित्य के समन्वय पर आधारित एक सशक्त मंच के रूप में स्थापित किया जा रहा है, जिसमें साहित्य, संस्कृति और विचारों का समागम होगा। महोत्सव के अंतर्गत डॉक्यूमेंट्री स्क्रीनिंग, साहित्यिक परिचर्चा-जिनमें मीडिया, साहित्य एवं समाज विषय पर विशेष चर्चा तथा 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने पर विशेष विमर्श आयोजित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त विभिन्न कार्यशालाओं एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। आयोजन का मुख्य उद्देश्य साहित्य को प्रकृति और संस्कृति के माध्यम से समाज के केंद्र में स्थापित करना तथा युवा पीढ़ी को सृजनात्मक अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करना है। आयोजकों ने बताया कि 17 फरवरी की प्रात: सरिस्का वॉक के साथ कार्यक्रम का समापन होगा। इस पदयात्रा में प्रतिभागी सरिस्का क्षेत्र और पांडुपोल हनुमान मंदिर तक प्रकृति के सान्निध्य में भ्रमण करेंगे। विमोचन समारोह में कपिल शर्मा, नागेन्द्र, नरेन्द्र, विजय यादव, संदीप योगी, सुन्दर पांचाल, प्रभात मिश्रा सहित आयोजन समिति के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

9 दिन बाद खत्म हुआ वकीलों का धरना

पावटा। विराटनगर न्यायिक क्षेत्र में एडीजे अपर जिला एवं सत्र न्यायालय कोर्ट की स्थापना की मांग को लेकर अधिवक्ताओं द्वारा तहसील परिसर में पिछले 9 दिनों से चल रहा धरना बुधवार को समाप्त हो गया। भाजपा जिलाध्यक्ष सुरेश बादलीवाल के आश्वासन के बाद बार अध्यक्ष सुभाष गुर्जर को जूस पिलाकर आमरण अनशन समाप्त करवाया गया बार सचिव विनोद कुमार गुर्जर ने बताया कि विराटनगर में एडीजे कोर्ट की स्थापना की मांग पिछले कई वर्षों से की जा रही है। पूर्ववर्ती सरकार ने बजट भाषण में विराटनगर में एडीजे कोर्ट खोलने की घोषणा भी की थी, लेकिन नए जिलों के गठन के बाद यह घोषणा फाइलों में सिमट कर रह गई। उन्होंने बताया कि एडीजे कोर्ट नहीं होने के कारण अपील से जुड़े मामलों की सुनवाई प्रभावित हो रही है। क्षेत्र के अधिवक्ताओं और वादकारियों को अपील संबंधी मामलों के लिए कोटपूतली-बहरोड जिला मुख्यालय जाना पड़ता है, जिससे समय और आर्थिक भार दोनों बढ रहे हैं। वकीलों की हड़ताल के चलते उप जिला मजिस्ट्रेट एवं राजस्व न्यायालय में भी कई मामलों की सुनवाई टल गई। धरने के दौरान बार अध्यक्ष सुभाष गुर्जर पिछले तीन दिनों से आमरण अनशन पर बैठे हुए थे, जिससे उनकी तबीयत भी बिगड़ गई थी। बुधवार को भाजपा जिलाध्यक्ष सुरेश बादलीवाल धरना स्थल पर पहुंचे और अधिवक्ताओं से बातचीत की। उन्होंने बताया कि विराटनगर विधायक कुलदीप धनकड़ ने वकीलों की मांगों को गंभीरता से लिया है तथा एडीजे कोर्ट की स्थापना की मांग को जल्द पूरा कराने का आश्वासन दिया है। आश्वासन मिलने के बाद जिलाध्यक्ष बादलीवाल ने बार अध्यक्ष सुभाष गुर्जर को जूस पिलाकर अनशन समाप्त करवाया, जिसके साथ ही 9 दिनों से जारी आंदोलन समाप्त हो गया। अधिवक्ताओं ने उम्मीद जताई कि सरकार जल्द ही एडीजे कोर्ट की स्थापना को लेकर सकारात्मक निर्णय लेगी।

उपाध्याय को याद किया

टोंक। मुख्यालय स्थित भाजपा कार्यालय पर भाजपा कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों द्वारा मंगलवार को भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि मनाते हुए उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में भाजपा जिलाध्यक्ष चंद्रवीर सिंह चौहान ने कहा कि श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार एवं सिद्धांत सदैव राष्ट्रसेवा, संगठन एवं समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान के लिए हम सभी को प्रेरित करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय ने अद्वितीय कौशल संगठन से जनसंघ के विस्तार में अहम भूमिका निभाई, जिसने आज भाजपा जैसे वट वृक्ष का रूप लेकर भारतीय संस्कृति के प्रवाह को अभिसिंचित कर रहा है। आज भी भारतीय जनता पार्टी के कार्यों में दीनदयाल के सोच का असर दिखाई पड़ता है, वे भारत माता के ऐसे सपूत थे जिन्होंने अपने कार्यों और विचारों से लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने आजादी के बाद खुशहाल समृद्ध और विकसित भारत के निर्माण के लिए अंत्योदय का सपना देखा था, जिसके लिए वे जीवनभर संघर्ष करते रहे। उनके अत्योदय के सिद्धांत का मतलब भारत के अंतिम व्यक्ति को समृद्ध करना ही था। अंत्योदय का नारा देने वाले दीनदयाल उपाध्याय का कहना था कि अगर हम एकता चाहते हैं, तो हमें भारतीय राष्ट्रवाद को समझना होगा, जो हिंदू राष्ट्रवाद है और भारतीय संस्कृति हिन्दू संस्कृति है। इस अवसर पर पूर्व सभापति लक्ष्मी जैन,नरेश बंसल जिला महामंत्री प्रभु बाडोलिया, जिला उपाध्यक्ष शैलेंद्र चौधरी, राजेश शर्मा,बबलू टैंकर, मंत्री रामकिशन गुर्जर, राजेश मंगल, विजय मालवानी शम्भू शर्मा, राम अवतार धाबाई, मण्डल अध्यक्ष भगवानदास सैनी, नन्दलाल जाट, सुरेश खटाना, विष्णु चावला सहित अन्य कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

बेहतरीन बजट : कसाना

कोटपूतली। वित्त मंत्री के रूप में डिप्टी सीएम दिया कुमारी द्वारा प्रदेश की विधानसभा में वित्तीय वर्ष 2026-27 हेतु बुधवार को प्रस्तुत किये गये राजस्थान के वार्षिक बजट पर प्रतिक्रिया देते हुये वरिष्ठ भाजपा नेता शंकर लाल कसाना ने इसे युवाओं के लिये रोजगार, कौशल और स्टार्टअप को बढ़ावा देने वाला बजट बताया। कसाना ने कहा कि यह बजट प्रदेश के प्रत्येक वर्ग, किसान, युवा, महिलाओं की उन्नित और प्रदेश के विकास के लिये समर्पित हैं। जिसमें आधारभूत संरचना, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल आपूर्ति, युवाओं के लिये रोजगार, महिलाओं की सुरक्षा, स्वरोजगार और किसानों की आमदनी को बढ़ाने के लिये काम किया गया हैं। सिंचाई योजना और सब्सिडी की ऐतिहासिक घोषणाओं से किसानों का भविष्य सुरक्षित होगा। हरित राजस्थान, पर्यावरण संरक्षण के कार्य, हरियालो राजस्थान अभियान में इस वर्ष 10 करोड़ पौधारोपण व वन जीव संरक्षण को लेकर बजट में विशेष घोषणायें की गई हैं। आपणो अठाणी राजस्थान के विजन के साथ ऐतिहासिक और चहुंमुखी विकास के लिये समर्पित बजट के लिये कसाना ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व वित्त मंत्री डिप्टी सीएम दिया कुमारी का आभार व्यक्त किया हैं।

हादसे में एक की मौत

राजगढ़। करौली अलवर मार्ग पर स्थित माचाडी ग्राम के पास देर रात्रि मंगलवार को सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई। दुर्घटना में शिकार व्यक्ति अपने गांव से अलवर प्याज बेचान के लिए जा रहे थे। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार ठाम नांगल लाट टोडाभीम निवासी जगराम 65 वर्ष पुत्र सावल राम ट्रैक्टर में प्याज भरकर गांव से अलवर के लिए रवाना हुए थे। रात्रि करीब 12 बजे के आसपास रास्ते में ठहराव पर सड़क पार करते दुर्घटना में जगराम की मौत हो गई। इस सूचना पर थाना पुलिस मौके पर पहुंची एवं मृतक के शव को राजगढ़ चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया। पुलिस ने मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर लाश परिजनों को सौंप दी। परिजनों की और से इस मामले की रिपोर्ट अभी तक दर्ज नहीं कराई है।

चतरनाथ बाबा का मेला आज

सिरस। गांव कारोला में चतरनाथ सेवा समिति के तत्वावधान में श्री चतरनाथ बाबा धाम पर गुरूवार को वार्षिक मेले का आयोजन होगा। जिसकी तैयारियों जोर-शोर पर की जा रही है। चतरनाथ सेवा समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि विक्रम संवत 2014 से यहा अखंड ज्योति व धुणी जलती आ रही है। वार्षिक मेले को लेकर चतरनाथ सेवा समिति के पदाधिकारियों द्वारा मेले की तैयारियों जोर-शोर पर की जा रही है। उन्होंने बताया कि मेले को लेकर भंडारे का भी आयोजन होगा।

लड़कों ने शानदार प्रदर्शन किया, खासकर बल्लेबाजी की शुरुआत। उन्हें 190 से कम रनों पर रोकना अद्भुत था। हारने वाली टीम का हिस्सा होना दुर्भाग्यपूर्ण है। हमने मैदान पर अपना सब कुछ झोंक दिया। - राशिद खान

अफगानिस्तान कप्तान, अपनी टीम की तारीफ करते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

अभिषेक शर्मा

टीम अभिषेक शर्मा को लेकर चिंतित है, जिन्हें पेट की समस्या के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था और आगामी मैच में भी उनके खेलने पर संदेह था। हालांकि, स्टार सलामी बल्लेबाज अब अस्पताल से डिस्चार्ज हो चुके हैं और भारत मैच से ठीक पहले उनकी उपलब्धता पर अंतिम फैसला ले सकता है। भारत टी20 विश्व कप के अपने दूसरे मैच में नामीबिया का सामना करने के लिए नई दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में तैयार है। अभिषेक अस्पताल से डिस्चार्ज हो चुके हैं और तब से उनकी तबीयत ठीक है।

क्या आप जानते हैं ?.. टी-20 विश्व कप में भारत और पाकिस्तान के बीच अब तक 8 मैच खेले गए है। इसमें भारत ने 7 मैचों में जीत दर्ज की है जबकि पाक को सिर्फ 1 मैच में जीत मिली है।

जम्पा और एलिस के चक्रव्यूह में फंसा आयरलैंड, ऑस्ट्रेलिया की 67 रनों से बड़ी जीत

कोलंबो, 11 फरवरी। आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप के मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने आयरलैंड पर शानदार जीत दर्ज की और मेहमान टीम को मात्र 115 रनों पर रोककर 67 रनों से विजयी रही। अनुशासित गेंदबाजी और बल्लेबाजों के महत्वपूर्ण योगदान के दम पर ऑस्ट्रेलिया ने शुरू से अंत तक मैच पर अपना दबदबा बनाए रखा और अपने अभियान की मजबूत शुरुआत की। 183 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए आयरलैंड के कप्तान पॉल स्टर्लिंग संभावित रूप से हैमस्ट्रिंग में खिंचाव के कारण सिर्फ एक रन बनाकर संन्यास ले लिया। दूसरे ओवर की आखिरी गेंद पर हैरी टेक्टर तीन गेंदों में शून्य पर आउट हो गए।

तीसरे ओवर में तेज गेंदबाज नाथन एलिस द्वारा आउट किए जाने के बाद सलामी बल्लेबाज रॉस एड़ायर 12 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। ऑस्ट्रेलिया ने शानदार शुरुआत की और आयरलैंड का स्कोर 13/2 हो गया। कर्टिस कैम्फर (4), बेंजामिन कैलिट्ज़ (2) और गैरेथ ड़ेलानी (11) के विकेट गिरने के बाद आयरलैंड ने जल्दी-जल्दी तीन विकेट गंवा दिए और सातवें ओवर के अंत तक आयरलैंड का स्कोर 43/5 हो गया।

लोरकान टकर और जॉर्ज ड़ॉकरेल ने 46 रनों की महत्वपूर्ण साझेदारी की, लेकिन 14वें ओवर में एड़म ज़म्पा ने टकर को 24 रन पर आउट कर दिया। ऑस्ट्रेलिया ने निचले क्रम के सभी बल्लेबाजों को पवेलियन भेजकर 67 रनों से जीत हासिल की और टी20 विश्व कप में अपनी पहली जीत दर्ज की। ऑस्ट्रेलिया के लिए नाथन एलिस (4/12) और एड़म ज़म्पा (4/23) ने चार-चार विकेट लिए। मैथ्यू कुहनेमैन (1/29) भी विकेट लेने वालों में शामिल थे। इससे पहले, मार्कस स्टोइनिस की जुझारू पारी, जिसमें जोश इंग्लिस और मैट रेनशॉ का महत्वपूर्ण योगदान रहा, ने ऑस्ट्रेलिया को 182/6 के स्कोर तक पहुँचाया। स्टोइनिस अपनी टीम के लिए 29 गेंदों में 45 रन बनाकर शीर्ष स्कोरर रहे, जबकि इंग्लिस और रेनशॉ ने 37-37 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का विकल्प चुना। हेड़ और जोश इंग्लिस ने ऑस्ट्रेलिया के लिए पारी की शुरुआत की। हेड़ पहले ओवर में चौका लगाने के बाद दूसरे ओवर में छह रन बनाकर रन आउट हो गए। पहले ओवर में पांचवीं गेंद पर कैलिट्ज़ ने पॉइंट पर उनका कैच छोड़ दिया था।

इंग्लिस और कैमरन ग्रीन ने तेजी से रन बनाना शुरू किया और दोनों ने आयरिश गेंदबाजों की जमकर धुनाई की। ग्रीन ने 11 गेंदों में 21 रन बनाकर तेज शुरुआत की, लेकिन इसे बड़े स्कोर में नहीं बदल सके क्योंकि पांचवें ओवर की आखिरी गेंद पर मार्क एड़ायर ने मिड़-विकेट पर उन्हें आउट कर दिया।

ICC MEN'S T20 WORLD CUP

साउथ अफ्रीका ने अफगानिस्तान को डबल सुपर ओवर में हराया

अहमदाबाद, 11 फरवरी। साउथ अफ्रीका ने टी-20 वर्ल्ड कप में अफगानिस्तान को डबल सुपर ओवर में हरा दिया। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में बुधवार को खेले गए

इस मुकाबले में टूर्नामेंट के इतिहास का पहला डबल सुपर ओवर देखने को मिला। ग्रुप-डी के इस मैच के दूसरे सुपर ओवर में साउथ अफ्रीका ने 6 गेंदों पर 23 रन बनाकर अफगानिस्तान को 24 रन का लक्ष्य दिया। टारगेट का पीछा करने उतरी अफगानिस्तान टीम ने दूसरी ही गेंद पर मोहम्मद नबी का विकेट गंवा दिया। इसके बाद रहमानुल्लाह गुरबाज ने तीसरी, चौथी व पांचवीं गेंद पर लगातार तीन छक्के जड़ दिए, लेकिन आखिरी बॉल पर आउट हो गए। इससे पहले दूसरे सुपर ओवर में ट्रिस्टन स्टब्स और ड़ेविड मिलर ने तीन सिक्स लगाकर साउथ अफ्रीका को 23 रन तक पहुंचाया था। पहले सुपर ओवर में दोनों टीमों ने 17-17 रन बनाए। साउथ अफ्रीका के ट्रिस्टन स्टब्स ने फजलहक फारूकी की बॉल पर सिक्स लगाकर स्कोर बराबर किया था।

वेस्टइंडीज की लगातार दूसरी जीत, इंग्लैंड 30 रन से हारा

मुंबई, 11 फरवरी। वेस्टइंडीज ने टी-20 वर्ल्ड कप में लगातार दूसरी जीत हासिल की है। टीम ने इंग्लैंड को ग्रुप सी के मैच में 30 विकेट से हराया। बुधवार को मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में 197 रन का टारगेट चेज कर रही इंग्लिश टीम 18.5 ओवर में 166 रन पर ऑलआउट हो गई। सैम करन ने नाबाद 43 रन बनाए। जैकब बेथेल ने 33 रन और फिल सॉल्ट ने 30 रन बनाए। गुडकेश मोती ने 3 विकेट झटके। दो विकेट रोस्टन चेज को मिला। अकील हुसैन और रोमारियो शेफर्ड ने एक-एक विकेट लिए। टॉस हारकर बैटिंग कर रही वेस्टइंडीज ने 6 विकेट खोकर 196 रन बनाए। शेरफन रदरफोर्ड ने 7 छक्के लगाकर 76 रन बनाए। आदिल रशीद ने 2 विकेट लिए। 5 यह मुकाबला मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला गया। वेस्टइंडीज ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर की समाप्ति पर 196 रन बनाए हैं और 197 रनों का विशाल लक्ष्य दिया। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी के लिए उतरी वेस्टइंडीज की ओर से शेफरन रदरफोर्ड ने 42 गेंदों में 76 रन बनाए। अंत में होल्डर ने 17 गेंदों में 33 रन बनाकर स्कोर को आगे बढ़ाया और रफ्तार पकड़ी। रॉस्टन चेज ने 34 रन बनाए और अन्य बल्लेबाजों ने भी अच्छा सहयोग दिया। 197 रनों के लक्ष्य के जवाब में इंग्लैंड की शुरुआत काफी तेज रही लेकिन मिड ओवर्स में इंग्लैंड के एक के बाद एक विकेट गिरते रहे और टीम 19 ओवर में 166 रनों पर ही ऑलआउट हो गई। इंग्लैंड की ओर से सैम करन ने 43 रन की पारी खेली वे अंत तक लड़ते रहे। जेकब बेथल ने 33 रन बनाए, जबकि साल्ट ने तेज तर्रार 30 रनों की पारी खेली, लेकिन इन सब के बाद भी वेस्टइंडीज के गेंदबाजों के सामने टीम टिक नहीं सकी और 30 रनों से मुकाबला हार गई।

टी20 विश्व कप में भारत के खिलाफ इस बार सोच अलग होगी- साहिबजादा फरहान

नई दिल्ली, 11फरवरी। साहिबजादा फरहान की विस्फोटक बल्लेबाजी की बदौलत पाकिस्तान ने आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2026 में अपनी जीत का सिलसिला बरकरार रखा। मंगलवार को कोलंबो के सिंहली स्पोर्ट्स क्लब में खेले गए मैच में पाकिस्तान ने अमेरिका को 32 रनों से हराया। अब पाकिस्तान का अगला ग्रुप स्टेज मैच 15 फरवरी को भारत के खिलाफ होगा। फरहान ने जोर देकर कहा कि उनकी टीम इस बार एक अलग सोच के साथ मैदान में उतरेगी।

बीड़ब्ल्यूएफ का नया कैलेंडरः इंड़िया ओपन का सुपर 750 दर्जा कायम

नई दिल्ली,11फरवरी। बैड़मिंटन वर्ल्ड फेड़रेशन ने 2027 से 2030 तक के नए वर्ल्ड टूर कैलेंड़र का ऐलान करते हुए साफ कर दिया है कि इंड़िया ओपन सुपर 750 स्तर का टूर्नामेंट बना रहेगा और इसका आयोजन आगे भी नई दिल्ली में ही होगा। बता दें कि पिछले महीने आयोजन के दौरान इंड़िया ओपन को गंभीर अव्यवस्थाओं के कारण खिलाड़ियों की आलोचना झेलनी पड़ी थी। खिलाड़ियों ने स्टेडियम में साफ-सफाई की कमी, बंदरों की मौजूदगी और पक्षियों व उनकी बीट से खेल में व्यवधान जैसी शिकायतें सार्वजनिक तौर पर की थीं। इसके बावजूद बीड़ब्ल्यूएफ ने टूर्नामेंट की श्रेणी में कोई कटौती नहीं की, जो भारतीय बैड़मिंटन के लिए राहत की खबर मानी जा रही है। हालांकि, लखनऊ में होने वाले सैयद मोदी इंड़िया इंटरनेशनल को बड़ा झटका लगा है। गौरतलब है कि यह टूर्नामेंट 2018 से लगातार सुपर 300 स्तर पर बना हुआ था, लेकिन नए चक्र में इसे सुपर 100 श्रेणी में ड़ाउनग्रेड कर दिया गया है। मौजूद जानकारी के अनुसार, कोरिया ओपन के साथ-साथ सैयद मोदी टूर्नामेंट भी सुपर 300 सूची से बाहर हो गया है।

राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड

निविदा सूचना

इस वृत की निविदा संख्या 33 (2025-26) के अंतर्गत 132 केवी जीएसएस दर्जन हेतु विभिन्न आरबीपीएल भंडारों से संयन्त्रमान सामग्री व उपकरणों का परिवहन तथा सुरक्षित अभिरक्षा में भंडारण/स्थापन कार्य, RVPN स्टोर से साइट स्टोर (132 केवी जीएसएस दर्जन) तक, AEN (टी एंड सी), RVPN, जोधपुर के कार्यालय में H-शेड्यूल अनुसार श्रम दर अनुबंध के आधार पर कार्य हेतु अनुभवी ठेकेदारों/फर्मों से ऑनलाइन माध्यम से निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा के भरे जाने, खुलने तथा अन्य दिनांकों का विस्तृत विवरण 'https://energy.rajasthan.gov.in/rrvpn/#/home/dptHome' एवं 'https://sppp.rajasthan.gov.in' और https://eproc.rajasthan.gov.in/nicgep/app पर उपलब्ध है।

UBN: VPN2526SLOB02793 — अधीक्षण अभियन्ता (टी. एण्ड सी.), जोधपुर

राज.संवाद/सी/25/19609 — रा.रा.वि.प्र.नि./TR-7380/2026

Rajasthan Medical Services Corporation Ltd.

D-Block, Swasthya Bhawan, C-Scheme, Jaipur - 302005

Ph. No. 0141-2223887, Fax No. 0141-2228065, E-Mail-edepmrmsc-rj@nic.in

Ref. No. : F-8() RMSC/EPM/M-3/NIB-881/2025-26/1659 — Dated :- 09/02/2026

Corrigendum / Addendum

Bid for item X-Ray Machine (500 ma) (NIB-881) are invited from interested bidders up to Date: 24/02/2026 : 06:00 P.M. Other particulars of the bid may be visited on Procurement portal website https://sppp.rajasthan.gov.in or www.dipronline.org or https://eproc.rajasthan.gov.in or website http://rmsc.health.rajasthan.gov.in.

UBN No. : MSC2526GLOB00068

Executive Director (EPM)

Raj.Samwad/C/25/19627 — Rajasthan Medical Services Corporation

मनु भाकर को रजत, ईशा सिंह को कांस्य, भारत को टीम गोल्ड़

नई दिल्ली, 11फरवरी। शूटिंग रेंज पर सोमवार को मुकाबला आखिरी सांस तक खिंचा और नतीजा शूट-ऑफ में जाकर तय हुआ। भारत की डबल ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर को एशियन चैंपियनशिप की 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में रजत पदक से संतोष करना पड़ा, जबकि वियतनाम की गुयेन थुई ट्रांग ने दोहरे शूट-ऑफ में बाजी मारते हुए स्वर्ण अपने नाम किया। भारत की ही ईशा सिंह ने कांस्य पदक जीता और एक बार फिर भारतीय महिलाओं का दबदबा देखने को मिला।बता दें कि फाइनल मुकाबला बेहद उतार-चढ़

व भरा रहा, जहां बढ़

त कई बार हाथ बदलती दिखी। मनु चौथी सीरीज़ के बाद तीसरे स्थान पर थीं, लेकिन पांचवीं सीरीज में उन्होंने खुद को दूसरे स्थान तक पहुंचा लिया। छठी सीरीज में वियतनामी निशानेबाज ट्रांग ने सभी पांच निशाने साधे, जिससे मनु फिर तीसरे स्थान पर खिसक गईं। इसके तुरंत बाद मनु ने शानदार वापसी करते हुए अगली सीरीज में परफेक्ट स्कोर किया और बढ़

त बना ली, हालांकि ट्रांग लगातार दबाव बनाए रहीं और आखिरकार शूट-ऑफ में स्वर्ण जीतने में सफल रहीं।

गौरतलब है कि मनु इस टूर्नामेंट में 10 मीटर पिस्टल स्पर्धा में पदक से चूक गई थीं, लेकिन इसका असर उनके प्रदर्शन पर नहीं दिखा। मौजूद जानकारी के अनुसार मनु ने कहा कि वह एक स्पर्धा के नतीजे को दूसरी स्पर्धा से अलग रखकर देखती हैं और वर्षों से दोनों इवेंट में शूटिंग करने का अनुभव उन्हें मानसिक रूप से संतुलित रखता है।

वहीं ईशा सिंह, जिन्होंने इसी प्रतियोगिता में 10 मीटर पिस्टल में स्वर्ण जीता था, 25 मीटर इवेंट में भी मजबूत दावेदार के रूप में आगे बढ़ रही थीं। आठ सीरीज़ यानी 40 शॉट के बाद वह शीर्ष पर थीं, लेकिन नौवीं सीरीज में एक भी हिट न कर पाने के कारण उन्हें कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। ईशा ने माना कि वह सीरीज़ उनके लिए सीख भरी रही और उस समय निशाने लगातार लक्ष्य के दाईं ओर जा रहे थे।

भारत की तीसरी फाइनलिस्ट रिदम सांगवान ने चौथा स्थान हासिल किया। हालांकि व्यक्तिगत मुकाबले से इतर, भारतीय टीम के लिए दिन बेहद सफल रहा। मनु भाकर, ईशा सिंह और रिदम सांगवान की तिकड़ी ने 1751 के संयुक्त स्कोर

5वीं इंड़िया ओपन इंटरनेशनल किकबॉक्सिंग टूर्नामेंट

जयपुर के लव सांखला ने रजत पदक जीता

जयपुर, 11 फरवरी। दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेड़ियम में आयोजित 5वीं इंड़िया ओपन इंटरनेशनल किकबॉक्सिंग टूर्नामेंट में जयपुर के लव सांखला ने जूनियर कैटेगरी के -89 किग्रा भारवर्ग में फ़ाइनल में पहुंचकर तुर्क के खिलाड़ी से कड़े संघर्ष के बाद रजत पदक जीतकर प्रदेश व देश का नाम रोशन किया है।

लव विगत 4 सालों से किकबॉक्सिंग का नियमित अभ्यास कर रहे हैं तथा पूर्व में भी जिला राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर कई पदक अपने नाम कर चुके हैं। पदक जीतकर लौटने पर लव का परिवार जनो व कई सामाजिक संगठनों ने भव्य स्वागत किया। लव ने पदक का श्रेय अपने माता-पिता तथा गुरुजनों को दिया है तथा भविष्य में विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतकर देश का नाम विश्व पटल पर गौरवान्वित करने को अपना आगामी लक्ष्य बताया।

प्रथम मुमताज खान स्मृति अण्डर-14 क्रिकेट प्रतियोगिता

कप्तान इज़हार के नाबाद शतक से नैना एकेड़मी चैम्पियन

जयपुर, 11 फरवरी। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित प्रथम श्रीमती मुमताज खान स्मृति अण्डर-14 क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज नैना क्रिकेट ग्राउण्ड जगतपुरा में खेले गये फाईनल मुकाबले में नैना क्रिकेट एकेड़मी ने कप्तान इज़हार खान 113 रन नाबाद 79 गेंद 15 चौके 4 छक्के की मदद से तारीक क्रिकेट एकेड़मी को 4 विकेट से हराकर चेम्पियन बनने का गौरव प्राप्त किया।

टॉस जीतकर तारीक क्रिकेट एकेड़मी ने पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया ओपनर तवीश शर्मा 87 रन 55 गेंद 7 चौके 6 छक्के विकेट कीपर अर्श 52 रन 46 गेंद 4 चौके 4 छक्के, अनंत सैंग 14 रन, भव्य सैनी 12 रन की मदद के बावजूद नैना क्रिकेट एकेड़मी के गेंदबाजों कियांश 17 रन पर 3 विकेट, मनन मीणा 20 रन पर 2 विकेट, कप्तान इजहार 51 रन पर 2 विकेट तथा ऋषभ व आरव चौधरी प्रत्येक 1-1 विकेट की गेंदबाजी के समक्ष 35.1 ओवर में 183 रन पर सिमट गयी।

जवाबी पारी में नैना क्रिकेट एकेड़मी के कप्तान इजहार खान 113 रन नाबाद 79 गेंद 15 चौके 4 छक्के के ऐकाकी प्रयास से विजय लक्ष्य 185 रन 6 विकेट खोकर 32 ओवर में हासिल कर

लिया। नैना क्रिकेट एकेड़मी की ओर से अली खान 18 रन, अव्यांश शर्मा 17 रन, निष्चल शर्मा 12 रन, अन्य सफल बल्लेबाज रहे जिन्होंने दहाई संख्या पार की। तारीक क्रिकेट एकेड़मी की ओर से गवणेश मीणा 34 रन पर 3 विकेट निखिल व रियान खान प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे।

प्रतियोगिता का पारितोषी वितरण राजस्थान क्रिकेट संघ के पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष ड़ॉ. बी.आर. सोनी ने किया।

इस प्रतियोगिता का मैन ऑफ दी फाईनल इजहार खान नैना क्रिकेट एकेड़मी रहे। मैन ऑफ दी टूर्नामेन्ट रोहन मीणा, सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज इजहार खान, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज मनन मीणा, सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र रक्षक आयुष शर्मा रहे।

रैफल्स सिरमौर कप (14 गोल्स) टूर्नामेंट

विमल एरियन अचीवर्स ने कैरेसिल सुहाना को हराकर जीता मैच

जयपुर, 11 फरवरी। जयपुर पोलो सीजन 2026 के अंतर्गत आयोजित हो रहे रैफल्स सिरमौर कप (14 गोल्स) टूर्नामेंट का दूसरा मैच बुधवार को राजस्थान पोलो क्लब ग्राउंड़ पर खेला गया। यह रोमांचक मुकाबला टीम कैरेसिल सुहाना और विमल एरियन अचीवर्स के बीच हुआ, जिसमें विमल एरियन अचीवर्स ने कैरेसिल सुहाना को 10-7 के स्कोर से पराजित किया। विजेता टीम से विमल एरियन अचीवर्स से अलेजो अरामबुरु ने 4 गोल और ध्रुवपाल गोदारा ने 3 गोल हासिल किए।

वहीं, ड़ेनियल ओटामेंड़ी ने 2 गोल और सलीम आजमी ने 1 गोल किया। दूसरी ओर,

टीम कैरेसिल सुहाना से मैनुअल प्रराड़ो और माटियास वायल ने 3-3 गोल किए। अशोक चांदना ने 1 गोल किया और टीम से कुलदीप सिंह राठौड़ भी खेले। गुरुवार, 12 फरवरी को रेस्ट ड़े रहेगा।

आईसीसी ने दी मंजूरी, चोटिल वानिंदु हसरंगा की जगह दुशान हेमंथा टीम में शामिल

नई दिल्ली, 11फरवरी। स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंड़र दुशान हेमंथा को मौजूदा टी20 विश्व कप के लिए चोटिल वानिंदु हसरंगा की जगह श्रीलंका की टीम में शामिल किया गया है। श्रीलंका के स्पिन गेंदबाज हसरंगा आयरलैंड के खिलाफ पहले मैच के दौरान चोटिल हो गए थे जिसके कारण वह टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। पांच वनड़े और तीन टी20 मैच खेल चुके 31 वर्षीय हेमंथा उनकी जगह लेंगे। टीम का अगला मैच गुरुवार को ओमान के खिलाफ होगा। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने एक विज्ञप्ति में कहा, "आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2026 की प्रतियोगिता तकनीकी समिति ने वानिंदु हसरंगा के स्थान पर दुशान हेमंथा को श्रीलंका की टीम में शामिल करने की मंजूरी दे दी है।"

MUNICIPAL BOARD, NATHDWARA DIST.- RAJSAMAND

S.No./M.B.Nath/NIT/CONST./2026/17682 — Date : 06-02-2026

Notice Inviting Bid

Bids for different works Nit No. 52/2025-26 of Municipal Board Nathdwara are invited from interested bidders up to Date 16-02-2026 on 18:00 Hours. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state govt.

UBN No.- 1.-DLB2526WSOB33451

Commissioner

Raj.Samwad/C/25/19573 — Municipal Board Nathdwara

VARDHMAN MAHAVEER OPEN UNIVERSITY, KOTA

(Rawathbhata Road, Kota -324021) (Estate Cell)

NOTICE INVITING E-TENDER

E Bid is invited for ""ARC for hiring of Men Power (Skilled/ Semi Skilled/ Unskilled) through service provider on job basis (NIB 35/2025-26, UBN; VMU2526SLRC00039) Further details may be obtained from http://www.eproc.rajasthan.gov.in , www.sppp.rajasthan.gov.in & www.vmou.ac.in w.e.f. 13/02/2026.

Raj.Samwad/C/25/19622 — OIC (Estate)

कार्यालय नगर पालिका सपोटरा, जिला करौली (राज0)

क्रमांक :-1651-1653 — दिनांक :-04.02.2026

ई निविदा सूचना

नगर पालिका सपोटरा की ओर से पंजीकृत संवेदकों से निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाइट http://sppp.rajasthan.gov.in पर निम्न (NIB CODE - DLB2526B1301) UBN No -DLB2526SLOB33334, DLB2526SLOB33335 पर देखा जा सकती है।

अधिशाषी अधिकारी

राज.संवाद/सी/25/19655 — नगरपालिका सपोटरा

कार्यालय नगर निगम पाली

(लालबहादुर शास्त्री टाऊन हॉल, सुरजपोल के पास, पाली, पिनकोड-306401)

टेलीफोन :- 02932-250033 — ई-मेल :-cmcpali@yahoo.co.in

क्रमांक : प.19( )नैराज/2026/434 — दिनांक : 06.02.2026

:: ई-निविदा सूचना संख्या ..... /2025-26

नगर निगम, पाली की ओर से पाली नगर निगम एवं राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया के तहत ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं जो वेबपोर्टल www.sppp.raj.gov.in, www.eproc.rajastha.gov.in पर UBN नम्बर अनुसार डाउनलोड कर देखी जा सकती है।

1. UBN नम्बर DLB2526GLRC33413 — आयुक्त

राज.संवाद/सी/25/19550 — नगर निगम, पाली

OFFICE OF THE MUNICIPAL CORPORATION, PALI

ENVIRONMENT AND SOLID WASTE MANAGEMENT CELL

Sr.no. -MCP/Env. & SWM/NIT/PIU /2025-26/508 — Date: 02.02.2026

Notice Inviting Tender (NIT) 07/2025-26/02.02.2026

Online Proposal are invited on behalf of Municipal Corporation Pali from the reputed, experience and technically eligible Contractor firm (Enlisted in different Classes Of Contractors) for the work of "Development of Waste-to-Wealth Park (Circularity Park) for Promoting Public Awareness on Reuse, Recycling and Circular Economy Concepts " the further detailed regarding to bid Documents can be downloaded from the e-tendering portal https://eproc.Rajasthan.gov.in. And https://sppp.rajasthan.gov.in Estimate cost of work are 26.00 lakhs.

UBN NO:- DLB2526WSOB32950 — Commissioner

Raj.Samwad/C/25/19552 — Municipal Corporation Pali

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर

टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001

दूरभाष स.0294-2421255, 2420013, Helpline no. 0294-2426262 वेबसाइट. www.udaipurmc.org

क्रमांक : निविदा/2025-26/ई -35 — दिनांक :- 06.02.2026

(ई-भुगतान) बोली आमन्त्रण सूचना संख्या - ई 35/2025-26

नगर निगम कार्यालय उदयपुर द्वारा विभिन्न विकास कार्यों हेतु कुल राशि रु 40.15 लाख के कुल 03 कार्यो हेतु इच्छुक निविदादाताओं से निर्धारित निविदा प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया के तहत निविदा आमंत्रित की जाती है निविदा के कार्यों की प्रारम्भ तिथि 09.02.2026 एवं अंतिम तिथि 18.02.2026 तथा निविदा खोलने की तिथि 19.02.2026 रहेगी निविदा से संबंधित अन्य समस्त विवरण इंटरनेट साईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है। UBN No. UNP2526WSOB00149

राज.संवाद/सी/25/19553 — अधीक्षण अभियन्ता, नगर निगम, उदयपुर

जोधपुर नगर निगम

क्रमांक:-2025-26/5712 — दिनांक:- 06.02.2026

:: अल्प कालीन ई-निविदा सूचना ::

(UB NO. DLB2526WSOB33588)

नगर निगम जोधपुर की ओर से विभिन्न सिविल कार्यो हेतु ऑनलाईन ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। ई-निविदा से संबंधित कार्य की विस्तृत जानकारी, निविदा की शर्तें आदि http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in एवं https://lsg.Rajasthan.gov.in/ उपरे पर देखी जा सकती है।

आयुक्त

राज.संवाद/सी/25/19556 — नगर निगम जोधपुर

राजस्थान स्टेट माईन्स एण्ड मिनरल्स लिमिटेड

निविदा सूचना — दिनांक :- 19/01/2026

निविदा संख्या एवं दिनांक	कार्य का विवरण
F.6(1)75/CC/2025/23 dated 09.02.2026 UBN No. MML2526SLRC00156	गिरल लिग्नाईट माईन्स, बाड़मेर (पिन कोड-344701) के लिये तीन बोलेरो-07 सीटर या समकक्ष वाहन (ए. सी. डीजल टैक्सी परमिट) मय ड्राइवर चालक किराये पर लेने हेतु। (वाहन का मॉडल वर्ष 2025 अथवा बाद का होना आवश्यक है।) अनुमानित मूल्य (रु.) 64.00 लाख प्रतिवर्ष राशि (रु.) - 1,28,000/-; निविदा राशि - 4720/- (जी.एस.टी. सहित - रूपये 1500/- (e-Tender fee to MD, RISL)

उपरोक्त निविदा की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www.rsmm.com अथवा www.sppp.rajasthan.gov.in अथवा प्रबंधक (यांत्रिकी-अनुबंध) से उपरोक्त पते पर सम्पर्क करें।

राज.संवाद/सी/25/19602 — उप महाप्रबंधक (का.एवं प्रशा.)

Rajasthan University of Health Sciences

सेक्टर-18, कुम्भा मार्ग, प्रताप नगर, जयपुर-302033

दूरभाष : 0141-2795015, 0141-2795508, 2795536, Email : registrar@ruhsraj.org

No. : F.6 ( ) Store/RUHS/2025-26/37351 — Dated : 05/02/2026

Notice Inviting e-Bids

Single Stage Two envelope bids are invited up to 02.00 pm of 19.02.2026 for Rate Contract of Event Management Work as per Scope of Work for Rajasthan University of Health Sciences, Jaipur (Total Est. Cost Rs. 30 Lacs). Details may be seen in the Bidding Documents at the Website sppp.raj.nic.in, or eproc.rajasthan.gov.in.

(UBN No. RUH2526SLRC00027)

Registrar

Raj.Samwad/C/25/19623 — RUHS, Jaipur

कार्यालय नगर पालिका मांगरोल, जिला-बारां (राज0)

क्रमांक/न.पा.मां./2026/4280 — दिनांक 09.02.2026

ई निविदा सूचना वर्ष 2025-26

NIB CODE- DLB2526B1416

नगर पालिका मांगरोल द्वारा सिविल कार्य हेतु सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों/फर्मो से 01 कार्य की मोहरबन्द Online निविदा (तकनीकी व वित्तीय दो लिफाफा पद्धति) आमंत्रित की जाती हैं। निविदा Online दिनांक 11.02.2026 से 24.02.2026 तक प्राप्त कर दिनांक 25.02.2026 को खोली जावेगी। निविदा संबंधी विवरण का अवलोकन नगर पालिका मांगरोल कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस को देखा जा सकता है।

कार्य का विवरण www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है एवं कार्य की Online निविदा http://eproc.rajasthan.gov.in पर ही प्राप्त की जावेगी।

क्र. सं.	UBN No.
1	DLB2526GLOB33615

अधिशाषी अधिकारी

राज.संवाद/सी/25/19585 — नगर पालिका मांगरोल

यांत्रिक कृषि फार्म, उम्मेदगंज, कोटा

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

No.: 15(157)/AUK/RKVY-COE/Automated Watching Tower/MAF, Kota/2025-26/1053-60

Date : 07/02/2026

E-TENDER NOTICE

E-tenders are invited in two parts (technical & financial bids) from the registered manufacturers and/or their authorized dealers/suppliers for Supply and Installation of Automated Watching Tower having High Resolution Camera and Solar Light Power System at Mechanized Agriculture Farm, Ummedganj, Kota of approximate cost Rs. 25.00 lakhs. The tender form can be downloaded and filled online from 07.02.2026 to 17.02.2026 at www.eproc.rajasthan.gov.in. More information related to tender and conditions can be obtain from http://sppp.rajasthan.gov.in and the university website http://aukota.org.

NIB Code: AUK2425A0125, UBN No.: AUK2425GLOB00130

Raj.Samwad/C/25/19621 — Officer Incharge

OFFICE OF THE MEDICAL SUPERINTENDENT CUM MEMBER SECRETARY, RMRS,RUHS HOSPITAL

Sector - 11, Kumbha Marg, Pratap Nagar, Jaipur - 302033

Ph. : 0141-2795577 Email: supdt.hms@ruhsraj.org

No. : RUHS HMS/Store/2025-26/13831 — Dated : 07/02/2026

ई-निविदा/दर संविदा सूचना

राज.स्वा.वि.वि. आयुर्विज्ञान चिकित्सालय में आवश्यक ड्रग्स, मेडिसिन एवं सर्जिकल सामग्री की आपूर्ति हेतु वार्षिक दर संविदा के लिए निर्धारित निविदा प्रपत्र में विनिर्दिष्ट बोलीदाताओं/संवेदकों से ई-निविदा प्रक्रियान्तर्गत ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। (कुल अनुमानित लागत राशि रू. 300.00 लाख) (UBN:-CMS2526GLRC00114)

1.	Bid Submission Start Date/Time	07/02/2026 at 01:00 AM onwards
2.	Bid Submission End Date/Time	26/02/2026 at 02:00 PM
3.	Technical Bid Opening Date/Time	27/02/2026 at 11:00 AM

Details may be seen in the Bidding Document at https://sppp.rajasthan.gov.in & https://eproc.rajasthan.gov.in. — Medical Superintendent Cum

Raj.Samwad/C/25/19625 — Member Secretary, RMRS, RUHS Hospital, Jaipur

Rajasthan Medical Services Corporation Ltd.

D-Block, Swasthya Bhawan, C-Scheme, Jaipur - 302005

Ph. No. 0141-2223887, Fax No. 0141-2228065, E-Mail-edepmrmsc-rj@nic.in

Ref. No. : F-8( ) RMSC/EPM/M-4/NIB-933/2025-26/1661 — Dated :- 09/02/2026

CORRIGENDUM / ADDENDUM

Bid for item:

1. Deep Freezer, Fowler Bed, Stead Bed, Foot Step, Syringe Infusion Pump, Glucostrip & Pulse Oxymeter (Handheld),
2. White Box (Sharp Container), & Transport Trolley (Wheel Barrow) Reserve for MSE, Rajasthan Only

are invited from interested bidders up to Date: 12-03-2026 : 06:00 PM. Other particulars of the bid may be visited on Procurement portal website https://sppp.rajasthan.gov.in or www.dipronline.org or https://eproc.rajasthan.gov.in or website http://rmsc.health.rajasthan.gov.in.

UBN : MSC2526GLOB00056 — Executive Director (EPM)

Raj.Samwad/C/25/19628 — Rajasthan Medical Services Corporation

कार्यालय नगर पालिका मण्डल केशवराय पाटन जिला - बून्दी (राज0)

npalika3@gmail.com — ph.no. 07438-264346

क्रमांक :- न0पा0के0पा0/2025-26/4479-81 — दिनांक :- 05.02.2026

ई-निविदा सूचना संख्या 04,05,06/2025-26

नगर पालिका केशवराय पाटन में विभिन्न कार्यों हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए श्रेणिक/मेनपावर आपूर्ति हेतु वार्षिक अनुबंध करने हेतु ऑनलाईन पद्धति से ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की निविदा बेचे जाने की दिनांक 05.02.2026 समय प्रातः 10.00 बजे से तथा अपलोड करने की दिनांक 25.02.2026 को सांय 6.00 बजे तक निविदा शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	NIT NO	UBN No.	Tender cost (in lac)
1	05/2025-26	DLB2526SLOB33302	25.00
2	06/2025-26	DLB2526SLOB33301	25.00
3	04/2025-26	DLB2526SLOB33300	120.00
		Total	170.00

अध्यक्ष — अधिशाषी अधिकारी

नगर पालिका के0पाटन — नगर पालिका के0पाटन

राज.संवाद/सी/25/19574

वर्ष 23-24 के मुकाबले इस वर्ष बजट का आकार 40 प्रतिशत बढ़ा- भजनलाल

मुख्यमंत्री ने कहा कि 24-25 की 93 प्रतिशत तथा 25-26 की 86 प्रतिशत बजट घोषणाओं की क्रियान्विति हो गई

- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बजट के बाद प्रेस कॉन्फ्रैंस में कहा कि इस वर्ष के बजट में वित्त वर्ष 23-24 की तुलना में इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट के लिए दोगुनी, चिकित्सा-स्वास्थ्य के लिए 53 प्रतिशत अधिक तथा ग्रीन बजट पर 20.81 प्रतिशत अधिक राशि का प्रावधान किया गया है।

जयपुर, 11 फरवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि बजट 2026-27 तेज आर्थिक विकास, लोगों की आशाओं-आकांक्षाओं पर खरा उतरने, और सबका साथ, सबका विकास के तीन कर्तव्यों को सर्वोपरि रखते हुए बनाया गया है।

बुधवार को विधानसभा में उपमुख्यमंत्री (वित्त) दिया कुमारी द्वारा राज्य बजट 2026-27 प्रस्तुत किए जाने के बाद मुख्यमंत्री ने पत्रकार वार्ता में कहा कि बजट में आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण सहित, बिजली, पानी, शिक्षा, चिकित्सा जैसे बुनियादी क्षेत्रों में सुविधाओं और सेवाओं के लिए प्रावधान किए गए हैं, जिससे राजस्थान विकसित, समृद्ध और आत्मनिर्भर बनेगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को विधानसभा में राज्य बजट 2026-27 प्रस्तुत किए जाने के बाद पत्रकारों से वार्ता की। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी और डॉ. प्रेमचन्द बैरवा मौजूद थे।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2026-27 के बजट का आकार 6 लाख 10 हजार 956 करोड़ रुपये है, जो वर्ष 2023-24 के बजट की तुलना में 41 प्रतिशत अधिक है। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने बजट 2025-26 में 1441 बजट घोषणाएं की थी, जिनमें से 1246 घोषणाओं (86 प्रतिशत) और वर्ष 2024-25 के बजट की 1277 घोषणाओं में से 1188 घोषणाओं (93 प्रतिशत) की क्रियान्विति की गई है।

उन्होंने कहा कि इस बजट में इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट के लिए पूंजीगत व्यय 53 हजार 978 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है, जो 2023-24 से 2 गुना से अधिक है। उन्होंने कहा कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के लिए 32 हजार 526 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा है, जो 2023-24 से 53 प्रतिशत अधिक है। ग्रीन बजट में 33 हजार 476 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है, जो पिछले वर्ष से 20.81 प्रतिशत अधिक है। शर्मा ने कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं के बेहतर आयोजन के लिए बजट में राजस्थान स्टेट टैस्टिंग एजेंसी की घोषणा की गई है।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी, उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचन्द बैरवा, अतिरिक्त मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय अखिल अरोड़ा, प्रमुख शासन सचिव वित्त वैभव गालरिया सहित, अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

'राष्ट्रगीत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस साल की गणतंत्र दिवस परेड के दौरान, राष्ट्रीय गीत पर आधारित कई झांकियां प्रदर्शित की गई थीं। नए नियमों के तहत, राष्ट्रीय गीत के छह अन्तरों का संस्करण, जो 3 मिनट 10 सेकंड तक चलता है, विशेष सरकारी आयोजनों में प्रस्तुत किया जाएगा। इसके मुकाबले, "राष्ट्रगान" जन गण मन 52 सेकंड का होता है। दिशा-निर्देशों में यह भी कहा गया है कि मृदंगम की ध्वनि राष्ट्रीय गान से पहले बजाई जाएगी। जब वन्दे मातरम् और जन गण मन दोनों बजाए जाएंगे, तो राष्ट्रीय गीत पहले बजाया जाएगा। पिछले नवंबर में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की कड़ी आलोचना की थी कि उन्होंने "मुस्लिम समुदाय को खुश करने के लिए गीत के महत्वपूर्ण अन्तरे हटा दिये थे।" मोदी ने कहा था कि "गीत को टुकड़ों में बांट दिया गया, और इससे देश के विभाजन के बीज बोए गए।" संसद के शीतकालीन सत्र में राष्ट्रीय गीत पर चर्चा के दौरान, सरकार और विपक्ष के बीच तीखी बहस और कहा-सुनी हुई थी।

'तीन साल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

निर्वाचन आयोग के अधिकारी ने कहा कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए यह निर्णय लिया गया है। जिन अधिकारियों ने किसी विशेष जिले या पद पर तीन वर्ष से अधिक समय पूरा कर लिया है, उन्हें स्थानांतरित करना अनिवार्य होगा।

वृंदावन के होटल में उद्घाटन के दिन ही आग लगी

- आग के दौरान 40 लोग अंदर फंस गए थे, तीन लोग झुलस गए हैं
- जिलाधिकारी ने बताया कि होटल में शॉर्ट सर्किट से आग लगी तथा होटल मालिक के परिवार के तीन लोग झुलस गए।

मथुरा, 11 फरवरी। वृंदावन के रुक्मिणी विहार स्थित नव निर्मित सिद्धि विनायक होटल में बुधवार को उद्घाटन के कुछ ही घंटों बाद भीषण आग लग गई। आग लगते ही होटल के अंदर घना धुआं भर गया, जिससे अफरा-तफरी मच गई। इस हादसे में तीन लोग झुलस गए, जबकि करीब 40 लोग होटल के अंदर फंस गए। सूचना मिलते ही पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीमें मौके पर पहुंचीं और करीब डेढ़ घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, दोपहर बाद अचानक होटल की ऊपरी मंजिल से धुआं उठता दिखाई दिया। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और पूरे परिसर में धुएं का गुबार फैल गया। होटल में मौजूद मेहमान और कर्मचारी घबरा गए। ?

कई लोग कमरों और गलियारों में फंस गए थे। स्थिति को देखते हुए प्रशासन ने तत्काल रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। अंदर फंसे लोगों को बाहर निकालने के लिए क्रेन की मदद ली गई। पुलिस ने आसपास के क्षेत्र को खाली कराकर सुरक्षा घेरा बना दिया।

हादसे में होटल मालिक सुभाष अग्रवाल के समधी हरिमोहन के बेटे विनीत की तबीयत अधिक बिगड़ गई, जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं, आग की चपेट में आकर तीन लोग झुलस गए। घायलों में दो बच्चे कार्तिक और समर तथा एक महिला जिया शामिल हैं। सभी को तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई। प्रशासन के अनुसार, सभी घायल खतरे से बाहर हैं।

जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह ने बताया कि रुक्मिणी विहार स्थित सिद्धि विनायक होटल में उद्घाटन के दिन शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगी। उन्होंने कहा, इस घटना में होटल मालिक के परिवार के तीन सदस्य झुलस गए। पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम ने तत्परता दिखाते हुए सभी फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया है। स्थिति अब नियंत्रण में है।

बताया जा रहा है कि होटल में कुल 24 कमरे हैं और बुधवार को ही इसका विधिवत उद्घाटन किया गया था।

एप्स्टीन से मुलाकात अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल के तहत हुई- हरदीप पुरी

- राहुल गांधी द्वारा जिक्र किये जाने के बाद मंत्री पुरी ने स्पष्ट किया।

नई दिल्ली, 11 फरवरी। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बुधवार (11 फरवरी) को बजट सत्र के दौरान एप्स्टीन फाइल्स का जिक्र किया, जिसके बाद देश में राजनीति गरमा गई है। इसे लेकर केन्द्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि युवा नेता (राहुल गांधी) को पता होना चाहिए कि एप्स्टीन फाइल्स गलत कामों और आपराधिक मामलों से संबंधित हैं।

केन्द्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने स्पष्ट किया कि उन्होंने जेफरी एपस्टीन से मुलाकात की थी, लेकिन यह मुलाकात अंतरराष्ट्रीय पीस इन्स्टीट्यूट (आईपीआई) के एक प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा रहते हुए हुई थी। उन्होंने कहा, साल 2009 में जब मैं अमेरिका में राजदूत था, तब ये मुलाकात हुई। सारी सच्चाई पब्लिक डोमेन में मौजूद है। सार्वजनिक रूप से करीब 3 मिलियन ईमेल हैं। इसके 8 साल बाद मैं मंत्री बना। इस दौरान 3-4 मुलाकातों का जिक्र है। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि एप्स्टीन से उनकी मुलाकात केवल अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल के तहत हुई थी।

'डॉक्टर्स को उपभोक्ता ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम उपभोक्ताओं को वस्तुओं और सेवाओं में अनुचित व्यापार प्रथाओं या खामियों के लिए समाधान प्राप्त करने का एक तंत्र प्रदान करता है। सुप्रीम कोर्ट ने 13 नवंबर, 1995 के अपने फैसले में यह माना था कि चिकित्सा सेवाएं भी उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के धारा 2(1)(0) के तहत "सेवा" के दायरे में आती हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने 13 नवंबर, 1995 को दिए गए अपने फैसले में यह कहा था: चिकित्सक द्वारा एक मरीज को दी गई सेवा (जब तक कि डॉक्टर किसी मरीज को मुफ्त सेवा न दे रहे हों या व्यक्तिगत सेवा के अनुबंध के तहत सेवा प्रदान न कर रहे हों), परामर्श, निदान और उपचार (चिकित्सीय और शल्य चिकित्सा दोनों) के रूप में दी गई सेवा, अधिनियम के धारा 2(1)(0) के तहत "सेवा" के दायरे में आएगी।

"यह तथ्य कि चिकित्सा पेशेवर भारतीय चिकित्सा परिषद और/या भारतीय चिकित्सा परिषद अधिनियम के तहत स्थापित राज्य चिकित्सा परिषदों के अनुशासनात्मक नियंत्रण के अधीन होते हैं, उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं को (उपभोक्ता संरक्षण) अधिनियम के दायरे से बाहर नहीं कर सकता।"

पैनग्विन रैंडम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जब पुस्तक की स्थिति और अनधिकृत संस्करणों के कथित अवैध प्रसार के विरोध में दावे किए जा रहे हैं, जिससे प्रकाशक, पूर्व सेना प्रमुख और वरिष्ठ राजनीतिक हस्तियां एक व्यापक सार्वजनिक विवाद में शामिल हो गई हैं। पुलिस के अनुसार विशेष प्रकोष्ठ ने नोटिस के माध्यम से प्रकाशक से औपचारिक रूप से संपर्क कर कई सवाल पूछे हैं और उनके विस्तृत जवाब मांगे हैं।

'आपने भारत माता ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहा गया है कि भारत अमेरिका से 500 अरब डॉलर के ऊर्जा और तकनीकी उत्पाद खरीदेगा। उन्होंने कहा, "हम मूर्खों की तरह खड़े हैं। हमारा टैरिफ 18 प्रतिशत तक बढ़ गया है... और उनका 16 प्रतिशत से घटकर शून्य हो गया है।"

इस पर संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने हस्तक्षेप किया और गांधी से, जो विपक्ष के नेता भी हैं, अमेरिका के साथ हुए समझौते पर अपने दावों के समर्थन में तथ्य पेश करने को कहा।

रिजिजू ने कहा, "भारत की प्रगति से आपको खुशी नहीं होती। कांग्रेस ने 2014 तक देश को कमजोर किया और अब असंतुष्ट है.."

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को "अब तक का सबसे मजबूत प्रधानमंत्री" भी बताया।

राहुल गांधी ने व्यापार समझौते की फिर से आलोचना उस समय की, जब कुछ घंटे पहले ही अमेरिका समझौते के विवरण के साथ जारी की गई एक 'फैक्टशीट' से पीछे हट गया।

संशोधित दस्तावेज में अमेरिकी उत्पादों की सूची से 'दालों' को हटा दिया गया। इस सूची में कई कृषि और प्रोसैस्ड खाद्य उत्पाद शामिल थे, जिन पर भारत ने टैरिफ कम करने या घटाने पर सहमति जताई थी।

भाजपा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

क्योंकि वे विपक्ष के उन कुछ नेताओं में से एक हैं, जो सत्ता से सच बोलने से नहीं डरते हैं और न ही उन्हें आसानी से डराया जा सकता है।

बांग्लादेश में जमात ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने कहा, "भारत और बांग्लादेश एक-दूसरे के लिए बहुत जरूरी हैं और हमें साथ मिलकर काम करना होगा।"

इस बयान को इस रूप में देखा जा रहा है कि जमात, अपने पुराने इतिहास और पहले पाकिस्तान समर्थक रुख के बावजूद, भारत के साथ काम करने की संभावना तलाशने के लिए तैयार है। हाल के महीनों में भारत से दूरी बनाकर रखना बांग्लादेश के लिए फायदेमंद नहीं रहा है और यह सरकार के लिए चुनौती बना हुआ है, क्योंकि बांग्लादेश की ज्यादातर जमीनी सीमा भारत से लगती है। हालांकि बांग्लादेश के जानकारों के अनुसार, बीएनपी अभी आगे मानी जा रही है, लेकिन जमात ने उन इलाकों में अपनी पकड़ मजबूत की है, जहाँ पहले वह कमज़ोर थी। पार्टी पर लगा प्रतिबंध हटने के बाद उसने यह बढ़त हासिल की है और अब वह बहुमत हासिल करने का लक्ष्य रख रही है। जमात के अमीर डॉ. शफीकुर रहमान ने कहा, सिर्फ एक साल पहले मेरी पार्टी को कमज़ोर माना जा रहा था और कहा जा रहा था कि हमें बहुत कम सीटें मिलेंगी। आज जमात बहुमत के करीब खड़ी है। यह जनता की इच्छा है। जब जनता एकजुट होती है तो उसे कोई नहीं रोक सकता।"

रितु तावड़े ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

महापौर तावड़े और उपमहापौर घाड़ी शिवसेना संस्थापक बालासाहेब ठाकरे की अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करेंगे और राज्य सरकार इस कार्य में उनका पूरा सहयोग करेगी।

JAIPUR: E-101, ROAD NO. 8, VKIA AREA, JAIPUR, PREM MOTORS: 8058791634, 8058794187, 8058794102, 8058794177 | CHITRAKOOT MARG, SATYA COLONY, TAGORE NAGAR, JAIPUR, AURIC MOTORS: 8690988784, 8890988912, 8690988758 | E-197(A), RIICO INDUSTRIAL AREA, MANSAROVAR, JAIPUR, KP AUTOMOTIVES: 9549651769, 9116190346 | B 1 GOVIND MARG, RAJAPARK OPP. PINK SQUARE MALL, KP AUTOMOTIVE: 9549851770, 9116190344 | A-209, RAJENDRA PRASAD NAGAR, 200FT BYPASS, AJMER ROAD, JAIPUR, SATNAM MOTOCORP: 7413900007, 7413900009, 7821823626, 8290654400, 7568249500, 9358868371 | 13 JHOTWARA INDUSTRIAL AREA, NEAR JHOTWARA POLICE STATION, JAIPUR, KTL: 7412068475, 7412077170 | SECTOR-35, PRATAP NAGER, TONK ROAD, JAIPUR, SANGA AUTONATION PVT LTD.: 9057809180 | PADMAWATI COLONY- II, OPPOSITE METRO PILLAR NO 25, MANSAROVER METRO STATION JAIPUR, VIPUL MOTORS PVT. LTD.: 9829333522, 9829351470, 9079191348. ALWAR: NEAR ALWAR PUBLIC SCHOOL, JAIPUR ROAD, ALWAR, MG MOTORS: 7240012934, 7728892248, 7073130666 | OPPOSITE MATILA POLICE STATION ALWAR BYPASS ROAD BHIWADI, FORTUNE CARS: 8875001550, 9214094335 | MANHAR VILLA, NEAR JAIL CIRCLE, VIJAY NAGAR ROAD, ALWAR, FORTUNE CARS: 7230029310, 7230029304.

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908